शान्तिलाल, गोतमचन्द, सम्पतलाल (रांका परिवार)
प्रेरक :-
श्रीमती छाऊ देवी रांका (माताजी)
विषय :-
गद्य भाग - लेख व योजनाए
विषय :-
पद्य भाग - चन्द्रलेखा चरित्र
प्रकाशक :-
श्री दुलहराज रांका चेरिटिबल ट्रस्ट जयनगर-बम्बई
प्रथम प्रकाशन :-
नवम्बर 1992 दीपमालिका वि. सं. 2049
प्रथमावृति :-
1000 एक हजार
मूल्य :-
स्वाध्याय
चातुर्मास काल सानिध्य :-
विद्वद्वर्य शासन सेवक, पं.र., आदर्शत्यागी श्री 1007 श्री सम्पत मुनिजी व सेवाभावी श्री नरेन्द्र मुनिजी म. सा. ठाणा 2 वि. सं. 2049 के एतिहासिक चातुर्मास के सानिध्य में
समर्पित :-

स्व. श्री दुलहराजजी रांका

जन्म सम्वत् 1984 — स्वर्गवास 2040

चेतन जड़ का कठपुतला बन गया

# प्राक्कथन . . .

व्यक्ति परिवार समाज, राष्ट्र एवं विश्व वर्तमान में विषमता की आग में जल रहा है। भीतर से बाहर तक अशांति, असंयम, अविश्वास और अनीति छाई हुई है। प्राचीन सभ्यता और संस्कृति लुप्त होती जा रही है। स्वार्थ, भोग लिप्सा, निष्ठुरता, हिंसा और धन संग्रह की होड़ में जीवन को अस्त व्यस्त बना दिया है। विषमता की यह आग जटिल और योजनाबद्ध बन गई है।

उपरोक्त अनैतिकता के बल पर मानव ने अपने सम्मान, पुरस्कार और स्थायित्व की व्यवस्था भी करली है। नैतिक मूल्यों की इतनी गिरावट पूर्व में कभी नही हुई। अतः समता क्रांति ही इस असन्तुलित प्रवृत्ति को पुनः सन्तुलित करने एव स्थायित्व प्रदान करने का अमोघ उपाय है।

समता क्राति मानव जीवन में बुनियादी क्रांति का विज्ञान है। इस क्राति में सृजन-चेतना का विराट आशय छिपा हूआ है।

विषमता के उन्मूलन के लिए जो क्रातिकारी कदम उठाए जाये उसमे यह भावना होनी चाहिए कि परिग्रह की मूर्च्छा में जो मानव ग्रस्त है वे दयनीय है, दया के पात्र है। उनके उद्धार और जागरण को व्यवस्था उपयुक्त प्रतीत होती है। इससे उस क्रांति का आशय विस्तृत होगा और सफलता का आधार बनेगा उसमे नियन्त्रण और सुधार के साथ-साथ उद्धार का भी आग्रह हो।

चेतन और जड़ का मिलन ही संसार है। आज ज्ञानमय चेतन आत्मा, अचेतन जड पदार्थों के प्रति अपने स्वामित्व बोध को भूलकर दासत्व को अपना रहा है। अर्थात इन जड़ पदार्थों का दास बन गया है। इन जड़ पदार्थों पर निर्भरता ही उसकी परवशता है। इस प्रकार चेतन पर जड का शासन हो गया है। चेतन जड़ का कठपुतला बन गया है। यही विषमता का कारण है।

जड़ पदार्थो के प्रति अनासक्ति से आत्मा में विषमता कम होकर समतामय जीवन बन जाता है, और जड़ पदार्थों के दासत्व से मुक्त होकर स्वामित्व का अनुभव करता है। वह अपने धन, शरीर और पद का दास (गुलाम) नहीं अपितु स्वामी होकर प्राणी मात्र के कल्याण में अपने धन, शरीर एवं पद का उपयोग करता है। इसी में अपना कल्याण समझता है।

सं० 2049 में जयनगर में सम्पन्न ऐतिहासिक चातुर्मास में मुनि श्रीजी की प्रेरणा से आध्यात्मिक कार्यक्रम के साथ-साथ नैतिक एव नियमित जीवन जीने के विषय में मार्गदर्शन दिया गया। ध्यान साधना के बिन्दुओं द्वारा प्रेक्टिकल प्रयोग कराए गए।

आदर्शबाला एवं आदर्श देवी के चरित्र के माध्यम से बहनो को मार्गदर्शन मिला कि गर्भ अवस्था में एव बाद में भी बालक बालिकाओ के जीवन निर्माण का प्रथम जिम्मेदारी माता की होती है। किस प्रकार उनका निर्माण किया जाए।

सं० 2023 से 2047 तक सम्पन्न चातुर्मास का विवरण एव सन्त सतियाजी का जीवन दर्शन ज्ञात होता है।

समता समाज रचना के विषय मे सन् 1991 में चित्तौडगढ़ एवं पीपल्या कलॉ में आचार्य पूज्य श्री नानालालजी म सा. के द्वारा 'धर्म व्याख्या" के उद्बोधन से हजारो भाई बहिन, बालक एव वालिकाओं ने नियमित एवं नैतिक जीवन जीने की प्रतिज्ञाएं ली।

अन्त में चन्द्र लेखा चरित्र के माध्यम से यह दर्शाया गया कि कैसी भी आपत्ति आने पर महिलाओं को अपना धैर्य नही खोते हुवे साहस के साथ परिस्थितियों का मुकाबला कर आदर्श जीवन जीने की आराधना करनी चाहिए।

पाठक गण इसे पढ समझ एवं आचरण कर व्यक्ति, परिवार समाज, राष्ट्र एवं विश्व में व्याप्त विषमतों की आग को शांत कर समतामय समाज रचना करे।

यही शुभकामना !

नोट–पुस्तक संकलन में वैसे पूर्णतया सावधानी रखी गयी है फिर भी कोई त्रुटि हो तो हम क्षमा चाहते हैं।

आपका ही :

**शांतिलाल रांका**

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ
जयनगर (शभूगढ़) 305011

**जयनगर (शंभूगढ़)**
दिनांक 1-10-92

'जय गुरु नानेश' ॥ श्री ॥ 'जय महावीर'

# धर्म प्रेमी स्व. सेठ सा. श्री दुलहराजजी रांका

# एक-परिचय

भारत वर्ष के राजस्थान प्रान्त में भीलवाड़ा जिले के अन्तर्गत आसीन्द तहसील के शम्भूगढ ग्राम पंचायत में जयनगर नामक एक छोटा सा ग्राम अपनी प्राकृतिक शोभा से विख्यात है। यहां लगभग 175 घरो में 1000 एक हजार करीब आबादी वाला क्षेत्र है। जिनमें महाजन (जैन) ब्राह्मण, पुनार, गुर्जर, सुथार तेली, नाई, कुम्हार, भील बलाई, धर्मपाल जीनगर, रेगर, खटीक, नट आदि अनेक जाति के परिवार रहते है। सभी कृषक है, और प्रेम पूर्वक अपनी-2 आजिविका में संलग्न है। अपवादिक स्थिति मे अतिरिक्त सभी परिश्रमी और उद्यमी है।

सभी महाजन (जैन) शासन निष्ठ एवम् धर्म प्रेमी है उसमें श्री कस्तूरचन्दजी सा. रांका के धर्म परायण पत्नि मे श्रीमती सुन्दर बाई, राजी बाई, दाख बाई नामक तीन पुत्रिया थी। पुत्र के अभाव में उन्होने श्री ओनाड़मलजी राका को गोद लिया। कालान्तर में अन्तराय कर्म के क्षयोपशम से उनके घर में सम्वत् 1984 श्रावण वदी 11 एकादसी को सोने का सूरज उदयमान हुआ। चारित्र नायक श्री दुलहराज को माता पिता से धार्मिक सस्कार मिले। बाल्यकाल में ही माता-पिता का वियोग (काल) हो गया। परन्तु धार्मिक एवम् व्यवहारिक शिक्षा प्राप्त कर 15 वर्ष की अल्पायु मे सन्तों की संगति करते हुए उन्हे वैराग्य प्राप्त हो गया।

तीव्र विरक्ति के कारण एक दिन वे घर से बिना कुछ कहे सुने सन्तो की सेवा मे पधार गये। श्री ओनाड़मलजी के छः पुत्रियां हुई। तीन वर्षों से एक ही कुल दीपक सन्तान के अचानक चले जाने से खल-बली मच गई। दौड़ धूप के पश्चात उन्हे मालवा से लाया गया और पारिवारिक जनो ने आसीन्द के पास 'दांतड़ा गांव' ग्राम की धर्मपरायण

सुशील छाऊ बाई नामक कन्या के साथ सगाई कर दी और सांसारिक वन्धन में बाध दिया।

गृहस्थ धर्म के निर्वाह के साथ उनका जीवन अध्यात्म-मय बना रहा नियमित सामायिक, स्वाध्याय तथा प्रत्याख्यान त्याग आदि नियम प्रतिनियम आपके जीवन मे घुल मिल गये। आचार्य श्री 1008 श्री नानालालजी म. सा. के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। साधुमार्गी जैन श्रावक संघ जयनगर के आप स्तम्भ (मन्त्री) थे। शेष काल में आने जाने वाले सन्तों व सतियाजी की अनन्य भाव से सेवा करते थे।

समय-समय पर जयनगर जैसे छोटे ग्राम में आपने सम्वत् 2023 में शासन प्रभाविका महासतीजी श्री सूरज कुंवरजी म. सा. ठाणा 3 का तथा सम्वत् 2036 में दीर्घ तपस्वी राज श्री ईश्वरचन्दजी म. सा. ठाणा 2 का श्री तोजीरामजी रतनलालजी गणेशीलालजी रांका विजय लालजी पटवारी, लादुलालजी पालडे़ वा सुवालालजी चोपड़ नन्दलालजी रांका आदि श्रावकों व श्री सघ द्वारा चातुर्मास कराया। सकल संघ सेवा भक्ति एवं धर्माराधना मे जुट गया। निर्मल आत्धनी, सरल स्वभावी विद्वान तपस्वी मुनि श्री ईश्वरचन्दजी म. सा. के चातुर्मास की इस नगरी पर अमिट छाप पड़ी। सभी इसे ईश्वर नगरी कहते है। उनका चातुर्मास इस नगरी के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा। चातु-र्मास में आपका विशेष योगदान रहता था।

आपकी बहिन श्रीमती सुन्दर बाई का पाणिग्रहण ब्यावर निवासी श्रीमान् घीसूलालजी मूथा के साथ, श्रीमती राजी बाई का मसूदा निवासी श्रीमान् स्व. सोहनलालजी बाफणा के साथ तथा स्व श्रीमती दाख बाई का करजालिया स्व. श्री कनकमलजी मेड़तवाल के साथ धर्म निष्ठ परिवार में हुआ।

आपके श्री शान्तिलाल, गोतमचन्द, सम्पतलाल नामक तीन पुत्र व श्रीमती लाडकुंवर बाई, कान्ताबाई, विमलाबाई नामक तीन पुत्रियां हुई। माता-पिता ने बालक-बालिकाओं को व्यवहारिक ज्ञान के साथ धार्मिक ज्ञान भी प्रदान किया। एतदर्थ कान्ता बाई व सम्पतलाल का पैतृक प्रभाव से वैराग्य भावना जागृत हुई किन्तु प्रत्याख्यानावरण कषाय के उदयभाव से वैराग्य भावना परिपक्व नही हो सकी और सुश्री

लाडकुंवर का पाणिग्रहण विजयनगर निवासी श्रीमान् बिरदीचन्दजी लुणावत के साथ तथा कान्ता बाई का पाणिग्रहण सारोठ निवासी श्रीमान् मनोहरलालजी सा. बोहरा के साथ हुआ एवम् श्री शान्तिलाल का रायपुर (भीलवाड़ा) निवासी सुश्री पिस्ताबाई के साथ एवं श्री गौतमचंद का गंगापुर निवासी सुश्री उषाबाई के साथ पाणिग्रहण हुवा।

आपके सुपौत्र अभिषेक, अंकुर, अमित एवम् सुपौत्री अनु अंशु व अनिमा से युक्त भरा पूरा साधन सम्पन्न व धर्म निष्ठ परिवार है।

आपका सम्वत् 2040 का पोष सुदी 9 दिनांक 12 जनवरी 1984 को चरित्र नायक श्री दुलहराजजी रांका का रात्रि प्रतिक्रमण के पश्चात सथारे के विधि विधान सहित नमोत्थुणं देते हुए रात 11 बजे आकस्मिक स्वर्गवास हो गया उन्हे पूर्व आभास हो गया था इसलिए अपने बड़े पुत्र श्री शान्तिलाल को आर्तध्यान से बचाव के लिए ब्यावर भेज दिया था। तथा श्री सम्पतलाल, जो उनके पास थे, को नवकार महामन्त्र का जाप करते रहने को प्रेरित किया तथा अपनी धर्मपरायण पत्नि श्रीमती छाऊ बाई को आर्तध्यान न करे आदि संकेत किये।

आप श्री सफल व्यवसायी व उद्यमी थे, सादा जीवन उच्च विचार आपके लक्षण थे। बड़े ही धर्मपरायण, दयावान सरल सौम्यरुप आपकी करुणा मूर्ति थी। आपके बड़े पुत्र श्री शान्तिलाल स्थानीय क्षेत्र में ही व्यवसायी व बी. ए फाइनल है। तथा श्री गौतमचन्द व श्री सम्पतलाल दोनो सुपुत्र बम्बई में चार्टर्ड अकाउन्टेन्टस है। आपकी निम्न प्रतिष्ठानों से कार्य क्षेत्र है—

1-श्री किस्तुरचन्द दुलहराज रांका (एग्रीकल्चर) दुजपरा (गुलखेड़ा)

2-श्री दुलहराज शान्तिलाल रांका (बिजनिस) जयनगर

3-श्री जैन लोढ़ा एण्ड एसोसिएट्स (सी. ए.) बम्बई

4-श्री एम. जी. एस. कारपोरेशन (एच. यू. एफ.) जयनगर-बम्बई

उपरोक्त प्रतिष्ठान आपकी प्रबल पुण्यवानी के संयोग से निरन्तर विकासोन्मुख है।

सम्वत् 2041 में श्री शान्तिलालजी व श्री संघ ने शासन प्रभाविका

महासतिजी श्री भंवर कुंवरजी म. सा. ठाणा 4 का तथा सम्वत् 2047 में विदूषी महासतीजी श्री कमल प्रभाजी म. सा. ठाणा 3 का चातुर्मास कराया। जयनगर श्री संघ ने चातुर्मास में तन - मन - धन से सहयोग दिया। श्री महेन्द्र मुनिजी म. सा. व श्री अजीत मुनिजी म. सा. की प्रबल प्रेरणा से दिनांक 3-3-81 को समता जैन पुस्तकालय स्थापित हुआ।

सम्वत् 2048 का महा वदी 7 ता. 26 जनवरी 1992 को अपनी लाडली बहन सुश्री विमला का विवाह बड़े धूम-धाम के साथ भीलवाड़ा निवासी श्रीमान् ललितकुमारजी सा. डांगी (सी. ए.) के साथ आत्मज् श्रीमान् रतनलालजी सा. डांगी के यहां आपके सुपुत्रों द्वारा सम्पन्न हुआ।

श्री जयनगर संघ का पुण्योदय ही समझिये कि इस वर्ष सम्वत् 2049 का पावन चातुर्मासार्थ शासन सेवक, विद्वद्वर्य, पं. रत्न, आदर्श त्यागी, मधुर व्या. सरलमना, तपस्वी श्री 1007 श्री सम्पत मुनिजी म. सा. व सेवाभावी मधुर व्या. श्री नरेन्द्र मुनिजी म. सा. ठाणा 2 का दिनांक 12-7-92 को सन्तद्वय का नुमुज जयघोषों के साथ मंगल मय पदार्पण हुआ है।

यह सब धर्मपरायण बुजुर्ग सुसज्जन व महापुरुषों की पुण्य वाणी का सुफल है यह संक्षिप्त परिचय स्व सेठ धर्म प्रेमी सुश्रावक श्री दुलह राजजी रांका का श्री साधु मार्गी जैन संघ जयनगर द्वारा पूर्णतया ध्यान रखते हुए संकलन किया गया है परन्तु फिर भी कोई त्रुटि व अशुद्धि के लिये क्षमा चाहते है।

आपका :
श्री साधुमार्गि जैन श्रावक संघ
जयनगर

# श्री साधुमार्गी जैन संघ जयनगर (शम्भूगढ़)

# ऐतिहासिक चातुर्मास सम्वत् २०४९

## ासन सेवक विद्वद्वर्य आदर्शत्यागी 1007 श्री सम्पत मुनिजी व मधुर व्या. सेवाभावी श्री नरेन्द्र मुनिजी म. सा. ठाणा 2

आचार्य भगवन् पूज्य गुरुदेव 1008 श्री नानालालजी म. सा. एवं युवाचार्य भगवन् पू० श्री रामलालजी म. सा. की असीम कृपा से इस वर्ष सम्वत 2049 का चातुर्मास शासन सेवक विद्वद्वर्य आदर्श त्यागी मधुर व्या. तपस्वी पू. 1007 श्री सम्पत मुनिजी म.सा. मधुर व्या. सेवाभावी श्री नरेन्द्र मुनिजी म. सा. की पुनीत पावन सानिध्य में अत्यन्त आनन्दमय वातावरण मे सानद सोत्साह सम्पन्न हुआ है हो रहा है।

जयनगर ग्राम शभूगढ पंचायत मे आसींद तहसील जिला भीलवाड़ा राजस्थान (भारत) का एक कस्बा है। खारी नदी के तट पर बसा हुआ यह नगर अपनी प्राकृतिक छटा से जन गण मन को आकर्षित करता है। यहां जैन (महाजन) के अतिरिक्त ब्राह्मण गुजर कुम्हार सुथार सुनार नाई आदि सभी वर्ग के लोग लगभग 175 घर में 1000 (एक हजार) की जनसख्या है। समग्र ग्राम मे प्रेममय वातावरण है। प्रायः सभी जैन बन्धु प्रभू महावीर शासन मे वृद्धि करने वाले आचार्य भगवान के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित है। लगभग सभी गाथापति के पद से सुशोभित है। संघ के सभी सदस्य इस चातुर्मास को एतिहासिक बनाने मे अपना अपूर्ण योगदान देते हुए सक्रिय है।

नगर में सभी तरह के कृषक 250, व्यापारी 50, अनौकरी 50, अध्यापक 25, सी ए चार्टड एकाउन्ट 5, इन्जिनियर 3, विद्यार्थी 317 बुजुर्ग 300, कुल 1000 इस प्रकार अपने-अपने रोजगार मे मस्त है। सबको आप महापुरुषों की उदारतापूर्ण व्यापक आत्मीय भावना हर व्यक्ति को बरबस आकर्षित करती रही। संतो के प्रति आबालवृद्ध जैन अजैन सभी व्यक्ति श्रद्धाशील रहे। संतों की दृष्टि में भी सभी अपने ही रहे पराये नहीं संतों के व्यवहार एवं सरल सुबोध प्रेरणामय प्रवचन से प्रभावित श्रोतागण प्रवचन की समाप्ति तक मनमुग्ध होकर जिनवाणी

का पीयूष पान तन्मयता से करते रहते । आस - पास के ग्राम अंभूप गजसिंहपुरा आकडसादा, जेतगढ, परासोली जगपुरा संग्रामगढ वरता के भाई बहिन आते रहते थे तो दूरस्थ क्षेत्रों से भी विजयनगरम् विजयनगर गुलाबपुरा रतलाम इन्दोर भीलवाडा ब्यावर आसीद बदनोर अंटाली खेचडी कालियास रामगढ भीम देवगढ पीपलिया मसूदा अमलनेर सहादा निम्बाहेडा कालियास आदि अनेक श्रद्धापुजन व्यक्ति एवम् संघ लेकर यदा-कदा पधारते रहे सभी सतों के दर्शन प्रवचन से अपने को धन्य मानते रहे । जयनगर सघ इस अभूतपूर्व प्रभावना से अपने आपको धन्य मानता रहा । उनकी दृष्टि में यह चातुर्मास रचनात्मक प्रवृतियों के कारण ऐतिहासिक बना !

छतीसगढ़ क्षेत्र में रायपुर शहर निवासी विद्वद्वर्य श्री संपत मुनिजी म. सा. ने सम्वत 2023 मे त. वि श्री प्रेममुनिजी त्रि. श्री पार्श्वमुनिजी म.सा. एवं अन्य 3 विरला बहनो के साथ राजनाद गांव मे आचार्य भगवन के मुखारविंद से प्रवज्या अगीकार कर आचार्य श्री जी की ह छत्र छाया मे उनकी प्रदत शिक्षाओं को ग्रहण करते हुए स. 2030 तक धार्मिक परीक्षा बोर्ड बीकानेर की जैन सिद्धान्त अलंकार (एम. ए. परीक्षा में सफलता प्राप्त की ।

सं० 2030 में उदयपुर क्षेत्रांतर्गत बम्बोरा निवासी श्री नानालालजी पीतलिया ने सरदार शहर में माह सुदी 5 को सुश्री बिजय लक्ष्मी तजमेरा उदयपुर निवासी एव श्रीमती स्नहेलता बरडिया सरदार शहर निवासी के साथ आचार्य भगवन् के मुखारविंद से दिक्षा अगीकार की, तब से प्राय: अब तक दोनो सन्तों का विचरण एवं चातुर्मास होता रहा । सरलमना विद्याभिलाषी श्री नरेन्द्र मुनिजी म. सा. की सेवाएं श्री सम्पत मुनिजी के ज्ञान दर्शन चारित्र एवं तप की आराधना मे महत्वपूर्ण रही । रतलाम, इन्दौर, कोटा, वेनूम, रायपुर, बालदे दुर्ग अमलनेर, सताना, पाचोरा आदि क्षेत्रो में आपकी आराधना साधना एव प्रवचनों से जनता प्रभावित एवं आश्वस्त होती रही ।

नमस्कार मन्त्र के पांच पद तो प्रत्येक जैन के आधार स्तम्भ है । उन्होंने सभी जगह नमन एवं जयजिनेन्द्र का विशेप पाठ पढ़ाया । जहां जहां भी शिविर लगाए व चातुर्मास किए वहां के लोगों ने इन दो

सुझावों पर अमल भी किया एव विशेषता का अनुभव किया । संवत 2047 के महावीर जयन्ती के पश्चात विद्वद्वर्य श्री सम्पत मुनिजी म.सा. को हार्ट अटेक हुआ तब चितौडगढ व पीपल्या कला में गुरुदेव श्री का सानिध्य का अवसर प्राप्त हुआ । उसके पश्चात ता० 16-2-92 में बीकानेर मे सम्पन्न होने वाली दीक्षाओं के प्रसग पर एवं छायामातृ पद विभूषित, कर्मठ, सेवाभावी श्री इन्द्रचन्दजी म. सा. आदि वृद्ध सन्तों एवं स्थविर पदविभूषित महासतीजी श्री धापूकंवरजी आदि वृद्धा महासतियांजी के विशेष आग्रह से आचार्य भगवन् आदि सन्त सतियांजी का बीकानेर की दिशा में पदार्पण हुआ विद्वद्वर्य आदर्श त्यागी श्री सम्पत मुनिजी एव श्री नरेन्द्र मुनिजी म. सा. भी जैतारण तक पूज्य म. सा. के साथ ही थे । जैतारण में सर्दी गर्मी की अधिकता के कारण हार्ट व बी. पी की तकलीफ न बढे इस दृष्टि से आचार्य भगवन् मुनिद्वय को इधर ही विचरण करने का सकेत दिया । दोनों सन्त पिपाड़ जोधपुर, पाली, राणावास, सोजत रोड़, झूठा रायपुर विलाडा फरसते हुए जैतारण पधारे । बीच में पीपाड़, जोधपुर, रायपुर और बिलाड़ा में धार्मिक शिक्षण शिविर मे लगभग 40-40 व 50-50 बालक - बालिकाओं को शिक्षण दिया ।

राणावास व सोजत रोड़ संघ ने आगामी चातुर्मास हेतु मुनिद्वय के चरणों में विनती की । इधर जैतारण पधारने के समाचार मिलते ही सारोठ के सघ एव जयनगर के सघ ने भी आगामी चातुर्मास हेतु विनती की । सन्तो ने उन्हें उदयपुर की योजना बतलाते हुए संघ की सम्मति पूर्वक आचार्य भगवन् के चरणों में निवेदन करने के लिये सूचना दी । जयनगर संघ का पुण्यवाणी परोक्ष रूप मे काम कर रही थी फलस्वरूप गुरुआचार्य भगवन् ने अपने पत्र दिनांक 17-6-92 के द्वारा सन्तद्वय का चातुर्मासार्थ जयनगर पधारना हो सकता है । ऐसी सूचना दी इस सूचना से जयनगर सघ की आवाल वृद्ध भाई बहिनो व जैन अजैन में आनन्द की लहर व्याप्त हो गई श्री सघ ने ब्यावर पहुंच कर सन्तद्वय को [illegible] रोक्त बधाई दी एव निवेदन किया कि संघ आपके द्वारा [illegible] सभी आराधनाऐ व्यवस्थित कार्यक्रमानुसार करने हेतु कटिबद्ध [illegible] 15-20 दिन पूर्व पधारकर आस - पास के गांवों मे 1/2 [illegible] यथा समय अवसर देवे तो वहां के भाई बहिन चातुर्मास [illegible] के लिए उत्साहित हो सकेंगे ।

उपरोक्त परामर्श को ध्यान में लेकर सन्तद्वय 15 दिनों पूर्व पाटन ग्राम पधारे एवं वहां संघ के प्रतिनिधियो ने उपस्थित होकर क्षेत्र स्पर्श ने की रूपरेखा बनाई तदनुसार सन्तद्वय का पाटन, संग्रामगढ़, गजसिहपुरा शम्भूगढ, जगपुरा, पुरानी नई परामीली, जेतगढ, आकड़सादा में 1-1 व 2-2 दिन का समय देते हुए दिनांक 12-7-92 को शुभ मंगलमय बेला में आचार्य युवाचार्य एव भगवान महावीर श्री तथा सभी सन्तों का जयघोषों के साथ स्वागत कर पदार्पण कराया। बीच-बीच में सघ के प्रतिनिधि उपस्थित होकर दर्शन प्रवचन व सेवा का लाभ लेते रहे।

आप महापुरुषों के मंगल-प्रवेश के पश्चात व्यवस्थित कार्यक्रमानुसार श्री सघ ने दिनांक 13-7-92 से 17-7-92 तक पच दिवसीय समता स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जिसमे 50 लगभग शिविरार्थियों ने भाग लिया।

दिनांक 3/8 से 11/8 तक 9 दिवसीय समता ध्यान साधना प्रशिक्षण शिवर सघ द्वारा आयोजित हुआ उसमे प्रात. 4 से 5 बजे एव रात्रि 8 से 9 बजे तक पुरुष वर्ग ने एव दोपहर 2 से 4 बजे तक महिला वर्ग ने लाभ लिया। लगभग 25 शिविरार्थियों ने इस शिविर में भाग लिया।

दि. 24/8 से 31/8 तक लगभग 200 भाई बहिनों ने आध्यात्मिक साधना शिविर मे व प्रथम दिन लगभग 300 व अन्तिम दिन लगभग 500की संख्या मे उपस्थित होकर आनन्द व उल्लासपूर्ण वातावरण द्वारा (पर्यूषणपर्व) को सफल बनाया।

दि. 7-10-92 से 5-11-92 तक सघ ने दशहरा, दिपावली के अवकाश का लाभ प्राप्त करने हेतु जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन करने का सोचा है। लगभग 68 विद्यार्थियों ने धार्मिक परीक्षा बोर्ड बीकानेर की परिचय से लेकर कोविद्ध तक की परीक्षा के फार्म भरे है। उसके बाद और भी नाम आ रहे है। ता. 1/11/92 को लगभग 200 परीक्षार्थियों के सम्मिलित होने का सभावना है।

चातुर्मास के प्रारम्भ से ही मुनिद्वय की प्रेरणा से प्रत्येक भाई बहिन घर से आते समय पाच अभिगम के साथ-साथ निस्सिही निस्सही कहते है। एव पांच अभिगम का पूर्ण रुप से पालन करते है।

(1) सचित वस्तु का त्याग (2)अचित वस्तु का विवेक (3)उत्तरासगधारण (4) दृष्ठि वन्दन (5) विधि युक्त वन्दन । स्थानक से बाहर जाते समय आवस्सही-आवस्सही कहते है । तथा धर्म स्थानक मे बिना मुंहपति के प्रवेश करने पर पौरसी का प्रसाद मुनिद्धय द्धारा लेते है ।

प्रत्येक शनिवार को स्थानीय रा. उ. मा. विधालय मे प्रवचन होता है । लगभग 10 दस शिक्षक एव 300 विधर्थी लाभ लेते है । आप महापुरुषो क प्रवचन से प्रभावित होकर सप्त कुव्यसन (1) शराव (2) मांस (3) जुआ (4) चोरी (5) शिकार (6) तम्बाकू (गुटखा) चुटकी (7) परस्त्री गमन का त्याग किया ! प्रवचन वडे ही ध्यानपूर्वक सुनते है । दूसरे शनिवार को पूर्व प्रवचन सम्वंधी प्रश्नो का समाधान होने से सभी शिक्षक व विधार्थी इस कार्यक्रम से वहुत प्रभावित हो रहे है

प्रत्येक रविवार को शांति जाप होता है । एवं सभी घर वाले उपवास आयंविल एकासन दया आदि करते हैं । प्रतिदिन उपवास आयंविल एकासन का नियमित रुप से पचखाण होता है । विना पचखाण क कोई भी दिन खाली नही जाता है । आशोज मास से जिस परिवार में कोई भी वडों को प्रणाम करने से वंचित रहता है । उस दिन उस घर पर मुनिद्धय द्वारा गोचरी नही होती है । प्रतिदिन प्रार्थना मे भक्तामर पाठ होता है ।

## ऐंतिहासिक चातुर्मास के प्रतिदिन के कार्यक्रमों की रुपरेखा इस प्रकार है :

( 1 ) प्रातः सूर्योदय से प्रार्थना व ( भक्तामर पाठ )
( 2 ) 9 से 10.30 वजे तक प्रवचन नैतिक शिक्षा व मदनरेखा गुणसुन्दरी की चौपाई आदि ।
( 3 ) 1 से 2 वजे तक अध्यापन कार्य ।
( 4 ) 2 से 3 वजे तक चौपाई आदर्शवाला व आदर्शदेवी द्वारा सुसंस्करित जीवन हेतु प्रेरणा ।
( 5 ) 3 से 4 वजे तक अध्यापन कार्य
( 6 ) 7 से 8 वजे तक प्रतिक्रमण ।
( 7 ) 8 से 9 वजे तक प्रश्नोत्तर धर्म चर्चा ।
( 8 ) रविवार को दोपहर को अन्ताक्षरी आदि के कार्यक्रम ।

# चातुर्मास प्रारम्भ से ही नियमित साप्ताहिक अभियान चालू है, ता. 12-11-92 को बिहार

## साप्तहिक कार्यक्रम धर्माराधना

ता. 14/7/92 से 20/7/92 तक ध्यान चिंतन मनन
ता. 21/7/92 से 27/7/92 तक देव गुरुधर्म वंदन
ता. 28/7/92 से 3/8/92 तक नमन व जय जिनेन्द्र
ता. 4/8/92 से 10/8/92 तक क्रोध विजय
ता. 11.8 92 से 17.8.92 तक मान विजय
ता 18 8.92 से 24.8.92 तक माया विजय
ता. 25.8 92 से 31.8.92 तक लोभ विजय

## पर्यूषण व पर्वाधिराज

ता. 24 8 92 - ज्ञानाराधना - क्रोध विजय
ता. 25.8.92 दर्शनाराधना - मान विजय
ता 26 8 92 चारित्राराधना - माया विजय
ता. 27 8 92 दानाराधना - लोभ विजय
ता. 28.8 92 शीलाराधना - संयम साधना
ता. 29.8,92 तपाराधना - तप साधना
ता. 30.8 92 भावनाराधना - सत्य साधना
ता. 31.8.92 आत्मशुद्धिराधना - प्रतिक्रमण अलोयणा

## विशेष दिवस धर्माराधना

ता. 14 7.92 को अषाडी पक्खी बैठते चातुर्मास(प्रतिक्रमण)
ता. 17.7.92 को स्व. आचार्य श्री गणेशीलालजी(जन्म जयन्ति)
ता. 3.8.92 नाग पचमी (चन्डकौशिक उद्धारदिवस)
ता. 13.8.92 रक्षाबन्धन (भाई बहिन के प्रति वात्सल्यभावना)
ता. 15.8.92 स्वतंत्रता दिवस (देश के प्रति नैतिक दायित्व)
ता. 21.8.92 जन्माष्ठमी (कृष्ण जन्म गोपालन कर्त्तव्य)
ता.24.8.92से 31.8.92 पर्यूषणपर्वाधिराज
ता. 1.9.92 सामूहिक क्षमापना दिवस
ता. 28.9.92 आचार्य श्री नानेश चादर प्रदान दिवस
ता 6.10.92 विजय दशमी (राम राज्य)
ता. 11.10.92 शरदपूर्णिमा (समता आराधना साधना दिवस)
ता. 23.10.92 धन तेरस (कयवन्ना सेठ का व्याख्यान)
ता. 24 10 92 रुप चौदस (सनतुमार चक्रवतीका व्याख्यान)
ता 25-10-92 दीपमालिका (महावीर निर्वाण दिवस)
ता. 26-10 92 विक्रम नववर्ष (गोतम स्वामी केवलज्ञान दिवस)
ता. 27-10-92 भाई दूज (सुदर्शना नंदीवर्धन का आख्यान)
ता. 30-10-92 ज्ञानपंचमी (वरदत गुणमंजरी का आख्यान)
ता. 10-11-92 उठती चौमासी पक्खी प्रति क्रमण

# ऐतिहासिक चातुर्मास काल में विशेष-(ज्ञानार्जन)

भौतिकता एव फैशन की चकाचौंध में मानव अपने नैतिक दायित्व से भटक रहा है। येन-केन प्रकरेण आपा-धापी में लगा हुआ है। मानवता लुप्त हो रही है। इसके अनेक कारणों मे से प्रमुख कारण है माता-पिता का संस्कारी न होना-संस्कारी माता-पिता ही बालकों में अच्छे संस्कार देकर उन्हे योग्य नागरिक बना सकते है। आदर्श बाला के माता-पिता संस्कारी थे उन्होने गर्भावस्था में उसे कैसे संस्कार दिए है, जन्म देने के पश्चात माता-पिता की गोद मे 5 वर्ष तक क्रीडा करता है उस समय भी चलने फिरने बोलने खाने-पीने सोने बैठने आदि के विषय में भी यथा योग्य ट्रेनिग वही दे सकते है जिन्हे इन बातों का ज्ञान हो। कहा भी है 'सौ शिक्षक उतना ज्ञान बालको को नही दे सकते जितना कि एक सस्कारी माता 100 बालकों को संस्कारित कर देती है।

'आदर्श बाला' व 'आदर्श देवी' की चौपाई का सांगोपांग विवेचन कर मुनि श्रीजी ने भाई-बहिनों बालक - बालिकाओं को आदर्श जीवन जीने की कला सिखाई। बालक जीवन, श्रावक जीवन, सन्त जीवन की चर्या का विवेचन करते हुए प्रसंगापोत समकित सहित 12 व्रत तथा सलेखना सथारा के प्रसग मे अनेक ऐसी बातों की जानकारी दी जो एक सामान्य गृहस्थ को जानना आवश्यक एवं उपयोगी सिद्ध हुई।

प्रवचन के समय व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक जीवन जीने का ज्ञान विशेष 2 उदाहरणो व दृष्टात द्वारा प्रतिपादित करते हुए मदन रेखा व गुण सुन्दरी की चौपाई के माध्यम से कष्ट व आपत्ति के समय धैर्य रखते हुए सिहनी की तरह सतीत्व की रक्षा की एव जिस कला कौशल से अपने ऊपर आया हुआ कलंक दूर कर जन-मानस को शील का उदाहरण प्रस्तुत कर प्रभावित किया।

मुनिद्वय ने प्रत्येक कार्यक्रम में समय की पाबन्दी का पूर्णरूपेण पालन कर लोगों को प्रेरणा दी आपके क्रियाकलापों की जानकारी तो क्या आस-पास के तथा नजदीक दूर से आने वाले दर्शनार्थियों पर भी गहरी

छाप पड़ी और वे नानेश शासन के गुणगान करते हुए थकते नहीं थे
वे कहते थे कि प्रवचन भी बहुत सुने सन्त-सतियाँजी की बहुतों की से
की पर इन महापुरुषों के प्रवचन सरल सुबोध सरस भाषा में होने
सुधापान की तरह घट-घट गले के नीचे उतर कर हृदयगम होते है
क्रिया मानों कहना ही क्या, कभी आपस में किसी प्रकार की खट-
होते नही देखी। इस प्रकार मुनिद्वय श्री प्रवचन माधुर्यता एव दृढ़-क्रि
शीलता की हवा चारों तरफ फैलने लगी।

आने वाले दर्शनार्थी गण चातुर्मास काल के बाद अपने-अपने क्षे
को स्पर्श ने की आग्रह पूर्ण विनती करते रहे एवं अपने आपको ध
मानकर सादर शीश झुकाते रहे।

**—सम्पतलाल रांका (सी. ए**

## उदयपुर योजना का सम्बन्धित अंश सत्र—1970-7

सन्त और सतियाजी चातुर्मास काल में यथा सम्भव यथा स्थ
अपनी मर्यादा के अनुसार नियमित रुप से धार्मिक शिक्षण देवे। स
में राग द्वेष आदि के द्वारा होने वाली कर्मबन्धन की स्थिति कम
ऐसी बाते बतावे। निम्नलिखित आवश्यक बाते यथा योग्य यथा श
उनके जीवन में उत्तर सके ऐसी प्रेरणा देवे।

**सामान्य ज्ञान :—**

(1) सोते जागते ध्यान वन्दन नमन जय जिनेन्द्र करना। (2)
या महासतियाजी गाव मे विराजते हो तो उनके प्रतिदिन दर्शन कर
उनसे खुले मुंह वार्तालाप न करना। (3) व्याख्यान में मौन रखन
(4) चौदह नियम का प्रति दिन स्मरण कर प्रत्याख्यान करना (
पाक्षिक प्रतिक्रमण आलोयना करना (6) सीखे हुए ज्ञान की पुनराव
करना (7) प्राणी मात्र को नहीं सताना (8) धार्मिक पर्वो में सम्मि
लित रुप से धर्म क्रिया करना (9) शंकाओं का समाधान सन्त-सति
जी से पूरा न हो सके तो पूज्य आचार्य श्री जी से समाधान कर लेना

## निम्नलिखित ज्ञान का अपनी पात्रता के अनुसार अर्थ सहित अध्ययन करना :

**प्रथम श्रेणी :—**

(1) नमस्कार मन्त्र एवं तिक्खुतों का पाठ याद करना (2) सप्त दुर्व्यसन का त्याग करना (3) चौवीस तीर्थंकर ग्यारह गणाधर सोलह सतियां के नाम याद करना (3) देव गुरु धर्म प्रति श्रद्धा रखना (5) प्रत्याख्यान विधि की जानकारी कर यथा शक्ति जीवन में उतारना (6) जीव अजीव की संक्षिप्त जानकारी करना (7) लेने पारने की विधि सहित सामायिक सूत्र याद करना।

**द्वितीय श्रेणी :—**

विधि सहित प्रतिक्रमण सूत्र याद करना (2) चौदय नियम याद कर यथा शक्ति प्रत्याख्यान करना (3) पच्चीस बोल समझ कर याद करना (4) पांच समिति तीन गुप्ति की जानकारी लेना (5) सोलह सतियों की सक्षिप्त जानकारी

**तृतीय श्रेणी :—**

(1) भक्तामर स्त्रोत याद करना (2) नवतत्व की जानकारी करना (3) कर्मप्रवृति का ज्ञान करना (3) चौवीस तीर्थंकर व दस श्रावको की संक्षिप्त जानकारी (5) महापुरुषों की मौलिक कथाएं (6) सम्यक्त्व के 67 बोल।

**चतुर्थ श्रेणी :—**

(1) गुणस्थान का स्वरूप (2) तत्वार्थ सूत्र (3) कर्म ग्रन्थ भाग 1 से 3/4 सृष्टि कृर्तत्व मीमांसा (5) रत्नाकर 25 [ पं. सुखलालजी ] (6) अमित गति की 32।

**नवदीक्षित उम्मीदवार की कम से कम योग्यता–**

श्रमण सूत्र, 25 बोल, नवतत्व, लघु - दण्डक, 5 समिति [illegible] 33 बोल, 25 क्रिया।

नोट.-जिन ग्राम में धर्म ध्यान का कार्य कैसा हुआ ? [illegible] कैसी रही ? और जहां-2 विचरणा हुआ [illegible] भक्ति आदि कैसी रही ? उनकी सूचना [illegible] जी की सेवा में पहुंचती रहे। [illegible] ध्यान रखा जावे।

# आचार्य श्री नानेश

## "एक परिचय"

1. 52 वर्षो तक संयम साधना की कठोर मर्यादाओं में रह कर अपने आपको निखारा है।
2. आचार्य पद पर आसीन होकर गत 29 वर्षो से हजारो किलोमीटर की पद यात्रा करके जन साधारण को अपने उपदेशामृत से लाभान्वित किया है।
3. एक लाख से अधिक बलाई जाति के व्यक्तियों को व्यसनमुक्त बना कर जुआ, मांस, शराब आदि कुव्यसनो को छुड़ाकर मानवीय गुणो से सम्पन्न किया है।
4. अपने समतामय उपदेशों से साम्यवाद की स्थापना हेतु लाखो का जन मानस बनाया है।
5. विश्व शान्ति के लिए समता दर्शन का प्रवर्तन किया है।
6. तनाव मय जीवन से मुक्ति पाने एवं आत्म शान्ति के लिए समीक्षण ध्यान का प्रवर्तन किया है।
7. जो दु:खियों के दु:ख हरने वाले, रोगियों को रोग मुक्त करने वाले, अभाव ग्रस्त को सद्भाव युक्त बनाने वाले इस युग मे मानवता के सच्चे मसीहा है।
8. जिनके छत्र-छाया एवं चरणों में बैठने से परम शान्ति मिलती है।
9. 300 के करीब साधु साध्वियों पर तथा भारत के कौने-कौने में बसने वाले लाखों लाख श्रावक श्रविकाओं पर एक छत्र शासन करने वाले हैं।
10. जिनके प्रभावी एवं मधुर उपदेश बच्चों, युवाओं, बुढो सभी की आत्माओ मे शान्ति का सचार कर रहे है।
11. जो एक जैन समाज के आचार्य होते हुए भी संप्रदाय की रूढिवादी परिधी से उपर उठकर विश्वबन्धुत्व की भावना से ओत-पोत है।

ऐसे है विश्व की विरल विभूति, समतायोगी।
समीक्षण ध्यानी गुरुवर नानेश।।

जिनके उदयरामसर मंगल पदार्पण पर कोटिश: वदन एवं हार्दिक स्वागत।

# आचार्य श्री नानेश

श्री लाल जवाहर गणेश गुरु की कीर्ति के ही प्रतीक ये।
जिन नही पर जिन सरीखे ऐसे श्री नाना गुरु वंदिए ।।

मेदपाट् (मेवाड़) की राजधानी उदयपुर जिले के पास ही दाता नामक रम्य ग्राम अपनी प्राकृतिक शोभा से सम्पन्न है। श्रेष्ठी कुल-भूषण श्री मोडीलालजी सा. पोखरना की धर्म परायण सुशील पत्नि शृंगार बाई ने ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया सम्वत 1977 को द्वितीया के चांद की तरह एक परम तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया। 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' इस लोकोक्ति के अनुसार बालक गोवर्धन माता पिता का प्यारा दुलारा बना।

नटखट गोवर्धन अज्ञानता के कारण माता की सामायिक साधना में बाधक बनता रहा। पर मां तो मां ही थी उसे वात्सल्यभाव से समय 2 पर धार्मिक संस्कार देती रहती। योग्य वय में शिक्षा प्राप्त कर बालक गोवर्धन व्यवसाय में लीन बना किन्तु भावी भाव तो कुछ और था। बहिन की अठाई की तपस्या के उपलक्ष में माता ने आपको ही भादसोड़ा भेजा वहां सन्तों की वाणी पर्युषण के प्रसंग से प्रवाहित हो रही थी। काल चक्र के आधार पर छठे आरे का वर्णन सुनकर आप रोमांचित हो उठे और गुरुजनों से विस्तृत विवेचन सुनकर पश्चाताप की आग में जलने लगे कि मैने माताजी की साधना में अन्तराय देकर अच्छा नही किया। लौटते समय जंगल में ही अन्तर की वैराग्य भावना जागृत हो उठी।

घर पर आकर जब माताजी से दीक्षा की आज्ञा मांगी तो वह आश्चर्यान्वित हो उठी। अथक परिश्रम से आज्ञा प्राप्त कर आपने कपासन में पोष शुक्ला अष्टमी सं० 1996 में स्व. आचार्य श्री गणेशीलालजी म. सा. के मुखारविंद से प्रव्रज्या अंगीकार की। ज्ञान, दर्शन चारित्र व तप की आराधना में जुट पड़े। 23 वर्षों की गुरु सन्निधि ने आपके अन्तःहृदय में जिनवाणी का समग्र सार उडेल दिया एवं आपको सं० 2019 आश्विन शुक्ला द्वितीया को युवाचार्य पद प्रदान किया।

सं० 2019 माह बदी द्वितीया को आचार्य पद से सुशोभित हुए । सम्वत 2049 आसोज सुदी 2 तक आपने लगभग 300 (तीन सौ) भव्य मुमुक्ष आत्माओं को प्रव्रजित किया । जमनापार, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर उदयपुर, रतलाम, उज्जैन,इन्दौर, नागपुर, छतीसगढ़, उड़ीसा, अहमदाबाद, भावनगर, बम्बई, जलगांव आदि परिसर आपका विचरण क्षेत्र रहा । वहां की कोटि 2 भव्य आत्माओं ने आपके दर्शन, प्रवचन श्रवण कर अपने को धन्य माना । आप में श्रीलालजी म. सा. की सौम्यता श्री जवाहराचार्य की तेजस्विता एवं श्री गणेशाचार्य की शान्त क्रांतता दृष्टिगत होती है ।

आपने फाल्गुन सुदी तृतीया सं० 2049 में बीकानेर के जूनागढ (राजमहल) में शासन के भावी संचालक के रुप में मुनि प्रवर श्री रामलालजी म. सा. देशनोक निवासी को युवाचार्य पद प्रदान किया अब आप अन्तरात्मा की साधना में लीन है । शासनदेव आपको दीर्घायु करे । आपकी ही कृपा से यहां पर विभिन्न समयों में सन्त सतियांजी के चातुर्मास हुए और हो रहे है ।

आज आपके सान्निध्य में 40 सन्त व 254 महासतियांजी भारत के विभिन्न प्रान्तों ग्रामों में 53 स्थान पर चातुर्मासार्थ विराज कर मुमुक्ष भव्य प्राणियों को प्रोतिबोधित कर रहे है । आपने जनता को "समता-दर्शन" नामक विश्व शान्ति का अमोध उपाय दिया है । लाखों की संख्या में अछूतोद्धार कर सम्यक मार्ग दर्शन देते हुए जीवन जीने की कला सिखाकर "सर्व जीव करु शासन रसि" को उक्ति चरितार्थ की है ।

धन्य है, धन्य है !

—गौतमचन्द रांका (सी.ए.)
जयनगर-बम्बई

# युवाचार्य श्री राम

मरुधरा का एवं भारत की नाक देशनोक में श्रेष्ठी कुलभूषण भूरा गोत्रिय श्री नेमीचन्दजी की धर्म परायणा धर्म पत्नि श्रीमती गौरादेवी ने सम्वत् 2009 चैत सुदी चतुर्दशी को पूर्णिमा को उगने वाले चन्द्रमा की तरह एक यशस्वी पुत्र को जन्म दिया।

लालन पालन के साथ ही माता पिता एवं पारिवारिक जनों ने बालक राम को धार्मिक एवं व्यवहारिक शिक्षा से ओतप्रोत किया। 22 वर्ष की अल्पवय में राम को पारिवारिक सज्जनो ने उनकी उत्कृष्ठ वैराग्य भावना से प्रभावित होकर स० 2031 माह सुदी द्वाद्दसी को देशनोक में आचार्य श्री नानेश की पावन गोद में समर्पित किया।

कुशल जौहरी की तरह आचार्य श्री ने अपने कला कौशल से 17 वर्षो मे इन्हें इस तरह तराश किया कि सं० 2048 फागुण सुदी तृतीया को आप युवाचार्य पद से सुशोभित हो गये। होली चातुर्मास के प्रसंग पर आपने आपने 40 सन्त एव 254 सतियांजी का 53 स्थानों पर चातुर्मास घोषित किया।

आपने सं० 2049 के अक्षय तृतीया पर तपस्वीनो आत्माओं को वर्षीतप के अवसर पर मांगलिक प्रदान की। वैसाख सुदी 6 दिनांक 8-5-92 को देशनोक में ही आपने इन्दौर निवासी श्रीमान् सरदार-मलजी सा. नौलखा की पुत्री चन्दनबाला को अपने मुखारविंद से प्रथम भागवती दीक्षा प्रदान की। आप इस समय आचार्य भगवन के साथ उदयराम शहर में 12 सन्त व 17 सतियां के समुदाय पूर्वक विराज-मान है।

आचार्य भगवन् की सेवा करते हुए चतुर्विध सघ को जिनवाणी के प्रवचन पीयूष से लाभान्वित कर रहे हैं। आप चिरकाल तक शासन की भव्य सेवा करते हुए अपने जीवन को राम मय बनावें यही शुभ कामना!

धन्य है!

हुकम शिष्य श्री जग नाना। राम चमकसि भानु समाना॥

जय गुरु नाना

सम्पतलाल (सी. ए.)

उदयनगर

# दीर्घतपस्वीराज स्व. श्री ईश्वर भगवान्

मरुधरा के बीकानेर प्रान्त में देशनोक शहर के सुराणा गौत्रिय श्री जोरावरमलजी सा. की धर्मपरायणा पत्नि श्रीमति हरखू बाई की कुक्षिसे सम्वत् 1972 चैत्र शुक्ला तृतीया को श्री ईश्वरचन्दजी का जन्म हुआ। बाल्यकाल से ही धार्मिक सस्कारों के कारण ये विरल रहते थे।

सन्त मुनिराजों के निरन्तर सम्पर्क से इनकी वैराग्य भावना बलवती होती गयी। यौवन की देहली पर पहुचते ही 28 वर्ष की उम्र में आपको आचार्य श्री गणेशीलालजी म. सा. का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ। आपने माता-पिता की सहमति पूर्वक आचार्य श्री के साथ रहकर आध्यात्मिक ज्ञानाभ्यास प्रारम्भ किया। तीन वर्ष तक सन्त जीवन के विधि विधानों का अध्ययन कर जीवन में साकार रुप देते हुए कई बोल चाल थौकड़े आदि शास्त्रीय ज्ञान भी किया 27 वर्ष की उम्र में सम्वत् 1999 मीगजर बदी 4 उत्कृष्ठ वैराग्य के साथ दीक्षा धारण की। वर्तमान आचार्य श्री जी आपके गुरुभ्राता थे।

आप श्री जी का जीवन 'आत्मार्थी का संयमीय क्रियाओं के प्रति आप पूर्ण जागरुक थे। आप श्री की सरलता सौम्यता एव क्रिया निष्ठा को देखकर सहज ही चौथे आरे के सन्तों का दर्शन हो जाता था। आप वाह्य और आभ्यन्तर दोनों प्रकार के तपस्वी थे। लम्बे समय से आप छाछ के आधार पर लगातार अनेक लम्बी-2 तपस्याओ के साथ उपवास आयम्बिल एवं रस परित्याग आदि करते रहते थे।

कायोत्सर्ग मौनव्रत, गुप्त तप सेवा आदि कार्यो में तथा आज्ञा-पालन में सदैव रत रहते थे। संघ नायक के प्रत्येक आज्ञाओं को शिरोधार्य कर लेते थे। इसीलिए आप आणाए धम्मों की साकार मूर्ति थे।

आपकी प्रवचन शैली सरल, सरस, रोचक एवं जनप्रिय थी। ज्ञान वर्धक घुटका वाल एवं कहानियो के आप खजाने थे।

आचार्य भगवन् की आज्ञा शिरोधार्य कर देवरिया चातुर्मास के

पश्चात जयनगर होते हुए आपने बीकानेर की ओर विहार कर दिया। आपका सम्वत् 2048 का चातुर्मास देशनोक ( जन्म स्थायी ) के लिए निर्धारित हुआ था निकट पहुंचते-2 रासीसर में आप गर्मी की चपेट में आ गए एव सं. 2048 जेठ वदी 13 को दि. 10-6-91 को सुबह 4 बजे आप दिवंगत हो गए।

'धन्य है आप महापुरुष चतुर्थ आरे को वानगी की' जिनका सम्वत् 2036 का चातुर्मास श्री सघ जयनगर को आचार्य भगवन् ने दीर्घ तपस्वीराज, आत्मार्थी विद्वान मधुर व्या. 1007 श्री ईश्वर भगवान् आपका व विद्याभिलाषी सेवाभावी मधुर व्या. श्री अजीत मुनिजी म. सा. ठाणा 2 का चातुर्मास प्रदान किया जो श्री संघ के लिए अविस्मरणीय रहेगा।
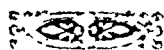
# मधुर व्याख्याता सेवाभावी श्री अजीत मुनिजी म. सा.

रत्नगर्भा पुण्यधरा मालवी क्षेत्र में रतलाम नगर आपकी जन्मभूमि है। पिता श्री दाडमचन्दजी की धर्मपरायण पत्नि श्री रोशन बाई ने आपको सम्वत् 2012 आषाढ वदी 6 को जन्म दिया। आपका जन्म नाम श्री रतनलालजी चत्तर था।

रतलाम (रत्नपुरी) में सन्त-सतियांजी का पावन सानिध्य मिलते रहने से आपमें धार्मिक भावना बलवती होती गई।

सम्वत् 2035 आश्विन शुक्ला द्वितीया को आचार्य श्री जी ने आपको आत्म कल्याणकारी प्रवज्या अंगीकार कराई तथा प्रथम चातुर्मास आपका सम्वत् 2036 आचार्य भगवन् ने श्री संघ जयनगर को स्व. श्री ईश्वर भगवान के साथ प्रदान किया। आप स्वभाव से मधुर शान्त मनो-विनोदी व गायक है। आपकी कण्ठकला सुरीली है।

आपका नाम अजीत मुनिजी रखा गया है।

# शासन सेवक विद्वद्वर्य आदर्श त्यागी श्री सम्पत मुनिजी म. सा.

भारत वर्ष के मध्य प्रदेशान्तर्गत छतीसगढ़ के अंचल नें रायपुर नामक शहर अपने व्यापारिक प्रतिष्ठानों से प्रसिद्ध है। बगड़ी नगर राजस्थान निवासी धारीवाल क्षैत्रीय श्रेष्ठीवर्य श्री हीराचन्दजी के सुपुत्र नथमलजी अपने सरल स्वभाव एव धार्मिकता के क्रिया - कलापों से रायपुर शहर के कपड़े के व्यवसायी थे। उनकी आविलोचित गुणों से युक्त धर्मपरायण पत्नि पान कुंवर बाई से विक्रम सम्वत् 1978 कार्तिक शुक्ला अष्ठमी दि. 21-11-1921 को एक बालक ने व्यावर में जन्म लिया आपका नाम सम्पतराज रखा गया। धार्मिक एव व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने पर पिताश्री उनके अनुज बन्धु श्री केसरीचन्द के साथ परिवार को लेकर रतलाम में स्व. आचार्य श्री गणेशीलालजी म. सा. के एवं कपासन में स्व. आचार्य श्री जवाहरलालजी म. सा. के दर्शन कराए। बालकों ने वहां जैन धर्म का ज्ञान पाया एवं प्रतिक्रमण आदि सीखा। आचार्य श्री जवाहर से सम्यक्तव ग्रहण किया।

गुरुदेव के संकेतानुसार दोनों बालकों को धार्मिक ज्ञान की विशेष उपलब्धि के लिए व्यावर में श्री पूनमचन्दजी सा. खिवसरा की देखरेख मे चलने वाले जैन विराश्रम में प्रवेश कराया। सन्त - सतियाजी की सेवा दर्शन प्रवचन श्रवण से उनमे ज्ञान एवं वैराग्य अंकुर प्रस्फुटित

हुए, उससे घबराकर पिता श्री ने महाराष्ट्र प्रान्त में हिंगन घाट निवासी गौत्रीय कोठारी श्री छोटमलजी की पुत्री श्री रमा कंवर के साथ सगाई कर वैवाहिक बन्धन मे बांध दिया। माता - पिता से प्राप्त धार्मिक सस्कारो से ओत-प्रोत रमा कवरी को योग्य वर प्राप्त हुआ। धार्मिक जिज्ञासा की शान्ति एवं सन्त-सतियाजी को दर्शन की अभिलाषा पूर्ण करने हेतु सम्पतराजजी परिवार के साथ अपनी बड़ी बहन को लेकर प्रति वर्ष सन्त दर्शनार्थ मारवाड़ मेवाड़ मालवा जाया करते बगडी नगर में सम्वत् 1997 स्व. आचार्य श्री जवाहरलालजी म. सा. एव 2003 मे स्व. आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. के चातुर्मास में ऊनकी ज्ञानभिलासा बढ़ने लगी। श्री स्थानकवासी जैन सघ रायपुर ने उनको सघ के मन्त्री के रुप में चयन किया इन्होंने छतीसगढ़ में धर्म की अपूर्व जागृति की।

सम्वत् 2009 में सादड़ी सम्मेलन के पश्चात उदयपुर चातुर्मास में आसोज सुदी 4 को उनकी बहन श्री सुरज कुंवर ने पूज्य श्री गणेशीलालजी म.सा. के मुखारविंद में महासतीजी श्री सुगन कुंवरजी म.सा. की नेश्राय में प्रवज्या ग्रहण की। सम्वत् 2020 श्री शान्तिलालजी अमृतलालजी सम्वत् 2021 श्रीमती कौशल्या बाई, श्रीमती हरखूबाई क्रमशः दो पुत्र व दो पुत्रियों का पाणिग्रहण संस्कार करवाया।

आचार्य श्री का 2021 के बाद भोपाल पदार्पण हुआ वहां पर उपस्थित होकर श्री सम्पतराजजी ने दीक्षा हेतु प्रतिज्ञा-पत्र प्रस्तुत किया सम्वत् 2022 का चातुर्मास रायपुर में हुआ पर सघ के मन्त्री होने के नाते सघ ने प्रवज्या के लिए स्वीकृति नही दी। सम्वत् 2023 में आसोज सुदी 4 को राजनांदगांव मे श्री प्रेमचन्दजी श्री पारसचन्दजी एव 3 बहिनो के साथ इन्होंने आचार्य श्री जी के मुखारविंद से प्रवज्या अंगीकार की। ज्ञानार्जन करने लगे। छायमातृ पद विभूषित कर्मठ सेवाभावी श्री इन्दरचन्दजी म. सा., श्री शान्तिलालजी म. सा., श्री प्रेम मुनिजी के सहयोग से इन्होंने जैन सिद्धान्त अलंकार की परीक्षा सन् 1973 मे उत्तीर्ण की सन् 1972 से लेकर अभी तक आपने विभिन्न नगरो नगरो मे श्री नरेन्द्र मुनिजी के सहयोग से 87 शिविर ( धार्मिक [illegible] ) [illegible] सम्वत् 2030 मे श्री नरेन्द्र मुनिजी [illegible]

हुई तब से प्राय: वे इनके साथ ही विचरण एवं चातुर्मास करते है। श्री नरेन्द्र मुनिजी की सेवा अविस्मरणीय है।

आपका विचरण क्षेत्र मारवाड़, मेवाड़, मालवा, महाराष्ट्र तथ छतीसगढ़ रहा है। सं. 2047 में महावीर जयन्ती के पश्चात छोट सादड़ी में इनको हार्ट अटेक हुआ। पूज्य गुरुदेव ने इनको दर्शन दि (स्वपन में) मांगलिक सुनाई सेवा में पारी-पारी से 3/4 सिघाडे भेजे दो माह में स्वास्थ्य ठीक होने पर ये दोनों सन्त आचार्य भगवन् साथ चातुर्मास हेतु चितौडगढ पधार गए। कपाजन, रतलाम, इन्दौ कोटा, बैतुक, रायपुर, बालोद दूर्ग अमलनेर, सहाना, पचोरा आ स्थानों पर जहां-जहां भी इन्होंने स्वतन्त्र चातुर्मास किए वहा-वहा ज जिनेन्द्र व नमन का विशेष पाठ पढ़ाया। वहां के लोग बिना मुंहपर बांधे स्थानक में प्रवेश करते तो पोरषी का प्रसाद पाते। प्राय. स जगह व अन्य स्थानों पर तथा शेषकाल जहां 15/20 दिन ठहरने प्रसंग आता वहां ग्रीष्मावकाश व अन्य अवकाश एव चातुर्मास धार्मिद्व शिक्षण, स्वाध्याय प्रशिक्षण, ध्यान साधाना का अभ्यास ध पाल प्रतिबोध एवं आध्यात्मिक शिविर आयोजित होते। दोनों स समय का सुविधानुसार विभाजन कर प्रार्थना अध्ययन, प्रवचन चौप रात्रि में पुरुष वर्ग को सामान्य विशेष प्रश्नोत्तर से जिज्ञासाओं समाधान कराते है।

पूज्य आचार्य भगवन् युवाचार्य भगवन् ने जयनगर सघ की आग्रह भरी विनती पर ध्यान देकर स.2049 का इनका पावन चातुर्मास श्री सघ जयनगर को प्रदान करने की महान अनुकम्पा की है।

**विशेष :–**

विद्वद्वर्य आदर्श त्यागी श्री सम्पत मुनिजी म.सा. की संसार संधीय बहिन श्री सुरज कुंवरजी जिन्होंने सम्वत् 2009 में उदयपुर में दीक्षा अंगीकार की थी अपनी गुरुनीजी व अन्य भाग्यवान सत्तियाजी की सेवा करती हुई विपूल ज्ञानार्जन किया एव 34 वर्षो तक विभिन्न क्षैत्रों मे धर्म जागृति कर सम्वत् 2043 में ब्यावर में जेठ सुदी 7 दिनांक 14-6-86 को संथारा पूर्वक स्वर्ग पधारी। आपकी संसार पक्षीय धर्म पत्नि में साहस पूर्वक आज्ञा प्रदान कर पतिदेव की दीक्षा

दिलाई। छोटे पुत्र श्री हरकचन्दजी को डाक्टरी पास करवाकर उसके विवाह आदि कार्य सम्पन्न कर अपनी सासूजी (श्री सम्पत मुनिजी की संसार पक्षीय माताजी) को अन्तिम समय में धर्म का सहाय देकर स. 2033 श्रावण सुदी 5 को संथारा कराया। उनको स्वर्गवास के पश्चात सम्वत् 2033 आसोज सुदी 15 को आचार्य भगवन् के इंगित इशाऐ को समझकर नोखा मे दीक्षा अंगीकार की और विभिन्न क्षैत्रों को पावन करती हुई वर्तमान में ब्यावर में महासतीजी श्री गुलाब कुंवरजी म.सा. की सेवा में ज्ञान दर्शन चारित्र तप की आराधना में सलग्न है। इनके सांसारिक भुवा की लडकी श्री हस कुंवरजी भी ब्यावर में विराज रहे रहे है। इनकी भुवा की पोती श्री इच्छना श्री जी महासतीजी श्री नानू कुवरजी म. सा. के सानिध्य मे धर्माराधना कर रही है इनके भुवा की दोहतिया श्री ज्ञान कुंवरजी म. सा. तथा श्री सुशीला कुंवरजी भी ब्यावर में म श्री गुलाब कुंवरजी म सा. की सेवा में चातुर्मासार्थ सेवा मे विराज कर सिंहनी की तरह जन मानस को प्रति बोधित कर शासन की उत्कृष्ठ सेवा कर रही है। इस प्रकार आपके पारिवारिक सदस्यों मे से महा सतीजी श्री सिरेकुवरजी जिनका स्वर्गवास 65 वर्ष की दीक्षा पर्याय पूर्ण कर सं. 2049 वैसाख वदी 12 को बीकानेर मे हुआ उन्हें मिलाकर 8 सदस्यों (आठ) ने आचार्य श्री हुकमीचन्दजी म. सा. के शासन की शोभा में सहयोग दिया है।

यथा नामोय तथा गुणोय।
हु मि उ चो श्री जग ना नाय ।।

शासन सेवक विद्वद्वर्य पं. र. आदर्श त्यागी 1007 श्री सम्पत मुनिजी म. सा. की सदा काल जय हो विजय हो।

# मधुर व्याख्याता सेवाभावी श्री नरेन्द्र मुनिजी म. सा.

मेवाड़ की सबसे बड़ी झील जय समन्द के निकट वम्बोरा नाम ग्राम में पीतलिया कुल भूषण श्री अर्जुनलालजी की धर्म परायणा पति श्री गम्भीर बाई की कुक्षि से सं० 2006 जेठ सुदी 8 को आपका जन्म हुआ आपके दो भ्राता बड़े हैं। जो व्यवसायरत है आप भी मेट्रिक परीक्षा प्राप्त कर व्यवसाय में सलग्न हुए। आचार्य श्री जी द्वा आपकी जन्म भूमि पावन होने पर आप सन्तों के सानिध्य में रहव ज्ञानार्जन करने लगे।

आपने सयमी जीवन को अपना भावी लक्ष्य बनाया। एक ब तो आपके परिवार वालों ने आपको आज्ञा देने के बहाने वापस ल पर आप पुन: आचार्य श्री जी के सानिध्य में बीकानेर पहुंच गए। अ में परिवार वालों को बाध्य होकर आज्ञा देनी पड़ी और आप सम्व 2030 माह शुक्ला पंचमी को सरदार शहर में प्रवजित हो गए आ शास्त्र तथा अनेक बोल चाल थोकड़े के जानकार हैं। आपका विचर क्षेत्र मारवाड़, मेवाड़, मालवा, महाराष्ट्र एव छतीसगढ़ रहा है।

आपका सम्वत 2049 का चातुर्मास आचार्य भगवन् ने शास सेवक, विद्वद्वर्य, आदर्श त्यागी, तपस्वी, मधुर व्या सरलमना 10( श्री सम्पत मुनिजी म. सा. के साथ ठा 2 से श्री सघ जयनगर व प्रदान किया हैं।

## परम विदूषी महासतीजी श्री सुरजकंवरजी म. सा.

आपने दिवंगता महान् साध्वीजी श्री नगीना कुंवरजी के म पावन चरणों में धार्मिक ज्ञानाभ्यास किया। 2 वर्ष तक वैराग्य-अवस्थ में रहते हुए संस्कृत व्याकरण एवं शास्त्रो का अध्ययन किया।

आपकी दीक्षा विरमावल (रतलाम) में हुई। दीक्षा के पश्चा आपने हिन्दी (माध्यमा) का अध्ययन किया। धार्मिक अध्ययन भं

काफी मात्रा में किया। आप विदुषी, सरल स्वभावी एवं मधुर वक्ता साध्वीजी है। विभिन्न क्षेत्रों में आपने 35 वर्षावास किये हैं।

### आपका सांसारिक परिचय इस प्रकार है:-

नाम—श्रीमती सूरजबाई
जन्म—पौष शुक्ला 8, सं. 1978
गांव—विरमावल ( पीहर रिगनोद )
माता—श्रीमती धापूबाई
पिता—श्रीमान् राजमलजी पगारिया
पति श्री घेवरचन्दजी सोनी
दीक्षा—माघ शुक्ला 13, स० 2002

卐

## महासती श्री कंकुकुंवरजी म. सा.

आपने साध्वी-प्रमुखा, धर्ममूर्ति श्री आनन्दकुंवरजी म. सा. के चरणों में विद्याभ्यास किया। तीन वर्ष तक वैराग्य अवस्था में रहने पश्चात् उन्हीं के चरणों में भागवती दीक्षा अंगीकार की।

दीक्षा के पश्चात् आपने 30 शास्त्रों का अध्ययन किया। लम्बे समय से संयम-साधना करते हुए विभिन्न स्थानों पर चातुर्मास किये। आचार्य प्रवर के शासन में आप महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

### आपका सांसारिक परिचय इस प्रकार है:-

नाम—श्रीमती [illegible]
जन्म—फाल्गुन सुदी 14, सं. 1970
गांव—[illegible]
माता—श्रीमती [illegible]
पिता—श्रीमान् [illegible]
दीक्षा—आषाढ़ शुक्ला 6, सं. 1998

# महासती श्री कमलाकुंवरजी म. सा.

आप स्वर्गीया महान् साध्वीजी श्री नगीनाजी म. सा. के सान्निध्य में रहे। 2 वर्ष तक थोकडे आदि का अध्ययन किया। प्रतापगढ़ (मन्दसौर) में आपने भागवती दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा के पश्चात् आपने धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर से कोविद-विशारद एवं पाथर्डी बोर्ड से प्रथमा की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने अब तक 21 वर्षावास प्रवास सम्पन्न किये हैं।

## आपका सांसारिक परिचय इस प्रकार हैः-

नाम—श्रीमती कमलाबाई नागौरी
जन्म—2003
गांव—कानोड
माता—श्रीमती शकूबाई
पिता—श्रीमान् भैरूलालजी नन्दावत
पति - श्रीमान् सवाईलालजी नागौरी
दीक्षा—कातिक सुदी 13, सं. 2016

# परम विदुषी श्री भंवरकुंवरजी म. सा.

नश्वर संसार के प्रति उदात्त भाव ही आपकी वैराग्य भावना का मुख्य कारण रहा। दिवंगता महा भाग्यवान् महासती श्री सुगनकुंवरजी म. सा. (ब्यावर) के सान्निध्य में आपने धार्मिक विद्याभ्यास किया। एक वर्ष तक वैराग्य अवस्था में रहने के पश्चात् आपने बीकानेर में दीक्षा धारण की।

दीक्षा के पश्चात आपने संस्कृत प्राकृत न्यायदर्शन, व्याकरण एवं आगमग्रन्थो का अध्ययन किया। आप सरल स्वभावी, सेवाभावी ए

मधुर व्याख्यानी है। दीक्षा के पश्चात विभिन्न क्षेत्रों में आपने 34 वर्षावास किये हैं।

### आपका सांसारिक परिचय इस प्रकार है:-

नाम – श्रीमती भंवरकुंवरबाई बांठिया
जन्म – आषाढ़ कृष्णा 1, सं. 1988
निवास–बीकानेर
माता – श्रीमती पानबाई
पिता – श्रीमान मंगलचन्दजी सोनावत
दीक्षा – वैशाख कृष्णा 10, स. 2003
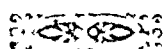
## महासती श्री इचरजकुंवरजी म. सा.

आपने महासती श्री सुगनकुंवरजी म. सा. के चरणों में 4 वर्ष तक वैराग्य-अवस्था में ज्ञान-ध्यान सीखा। उसके बाद ससुराल पक्ष ([illegible] परिवार) की ओर से अनुमति प्राप्त होने पर भागवती दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा के पश्चात आपने अनेक थोकड़ों शास्त्रों आदि का अध्ययन किया एवं स्वाध्याय में संलग्न रही। जैन सिद्धान्त विशारद तक आपने अध्ययन किया।

संवत 2035 में आपने देवगढ़ वर्षावास में 15 उपवास की तपस्या की। दीक्षा के पश्चात दीर्घ संयम-साध्विकाओं के साथ आपने 24 चातुर्मासिक प्रवास किये हैं।

### आपका सांसारिक परिचय इस प्रकार है:-

नाम – श्रीमती [illegible]बाई
जन्म – आषाढ़ [illegible] 9, सं. 1994

निवास–वीकानेर

माता – श्रीमती भंवरीबाई

पिता – श्रीमान फूसराजजी वांठिया

पति – श्रीमान भंवरलालजी डागा

दीक्षा – आसोज सुदी 10, सवत 2013

गोगोलाव

## महासती श्री ताराकुंवरजी म. सा. (द्वितीय)

आत्मा अनादि काल से सुख-प्राप्ति के लिये भटक रही है पर सुख भोग में नही, त्याग में है, वह राग में नही, वैराग्य में है। कुमारी ताराजी भी आध्यात्मिक आनन्द की उपलब्धि के लिये वैराग्य की पीठिका पर आरूढ हुई। 2 वर्ष तक आपने महासती श्री सुगनकुंवरजी म. (ब्यावर वाले) के सान्निध्य में धार्मिक ज्ञानाभ्यास किया।

जयपुर में आपने आचार्य श्री नानालालजी म सा. के चरणों में भागवती दीक्षा अंगीकार की। वर्तमान में आप जै. सि. शास्त्री का अध्ययन कर रही है।

### आपका सांसारिक परिचय इस प्रकार है:–

नाम – कुमारी तारा रांका

जन्म – पौष सुदी 10, सं. 2014

निवास- रतलाम (मध्यप्रदेश)

माता – श्रीमती दाखावाई

पिता – श्रीमान हीरालालजी रांका

दीक्षा – चैत्र कृष्णा द्वितीया, सं. 2029

## महासती श्री उर्मिलाश्री जी म. सा.

संसारी पक्ष मे आप फलोदी के श्री मेघराजजी झावक की पौत्री है और रायपुर में अपनी भुवाजी के यहां रहती थी। वहा धर्मनिष्ठ श्री मगलचन्दजी केवलचन्दजी वैद मूथा के यहां आपने बचपन से ही धार्मिक सस्कार प्राप्त किये। विदुषी महासती श्री भवरकुंवरजी म. सा. के पावन सत्सग में आपकी दीक्षा लेने की भावना हो गई। प्रतिक्रमण, थोकडे आदि धार्मिक अध्ययन करने के पश्चात आचार्य प्रवर के पावन चरणों मे बुसी (मारवाड़) में आपने भागवती दीक्षा अंगीकार की। नव-दीक्षिता साध्वी जी म. सा का अध्ययन यथाविधि चल रहा है।

### आपका सांसारिक परिचय इस प्रकार है:—

नाम-सुश्री नीताकुमारी
जन्म-सम्वत 2019
निवास-फलोदी (राजस्थान) रायपुर (म.प्र.)
माता-श्रीमती सोनीबाई
पिता-श्रीमान नथमलजी झावक
दीक्षा-ज्येष्ठ शुक्ला 3, सं. 2037
(बुसी-मारवाड़)

## परम विदुषी श्री कमलप्रभाजी म. सा.

दीक्षा के पश्चात लगन-पूर्वक अध्ययन करते हुए आप जैन सिद्धांत शास्त्री परीक्षा की तैयारी में रत है। आपकी कठकला सुमधुर है। आपने महासतियांजी म. सा. के सान्निध्य में 10 चातुर्मास प्रवास किये हैं।

**आपका सांसारिक परिचय इस प्रकार है:-**

नाम-श्रीमती कमलावाई
जन्म-बैशाख सुदी 7, सं. 2002
जन्म-बान्दनवाड़ा, ससुराल जेठाना (ब्यावर)
माता-श्रीमती गोरांबाई
पिता-श्रीमान नवरतनमलजी लोढा
दीक्षा-कार्तिक कृष्णा 8, स. 2027

## महासती श्री मंजुबालाजी म. सा.

आपने महासती श्री रसालकुंवरजी म. के पावन चरणों में धार्मिक ज्ञान-ध्यान किया। 1 वर्ष तक वैराग्य-अवस्था में रहते हुए गंगा शहर-भीनासर में स्वर्णिम 12 दीक्षाओं के पुनीत अवसर पर भागवती दीक्षा अंगीकार की।

दीक्षा के पूर्व आप भक्तामर आदि कंठस्थ करते हुए धार्मिक परीक्षाओं में सम्मिलित हुए थे। वर्तमान में आप जैन सिद्धान्त शास्त्री का अध्ययन कर रहे है। आपकी कंठकला मधुर है।

**आपका साँसारिक परिचय इस प्रकार है:-**

नाम सुश्री मंजुकुमारी
जन्म स० 2016

निवास बीकानेर

माता – श्रीमती भंवरीबाई

पिता – श्रीमान रतनलालजी सेठिया

दीक्षा—माघ सुदी 13, सं. 2029

## महासती श्री स्वर्ण रेखाजी म. सा.

नाम – सरिता श्री

जन्म – ब्यावर

ग्राम – ब्यावर

दीक्षा – उदयपुर 4 जनवरी 1990

माता – इचरजबाई नाहर

पिता – सिद्धकरनजी नाहर

# समता समाज रचना योजना-1991

आदरणीय महानुभावों,

व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एव विश्व की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए आप सभी का ध्यान आकर्षित किया जा रहा है कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक दायित्व हो जाता है कि हम व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र एव विश्व के सम्यक् विकास हेतु कुछ रचनात्मक कार्यक्रम अपनाए।

आचार्य पूज्य श्री जवाहरलालजी म.सा. ने 75-80 वर्ष पूर्व अपने प्रवचनों में भारत की भावी दशा का मूल्याकन कर 'धर्म व्याख्या' के रुप में हम लोगो को अपने कर्तव्य हेतु मार्ग-दर्शन दिए। उस समय भले ही हमने इस ओर ध्यान नही दिया। पर परिस्थतियां ऐसी बन जाती है जबकि हमें इस ओर केवल ध्यान ही नही देना है बल्कि मनसा वाचा कर्मण्य हम इस योजना को स्वय असली रुप दे, अन्यो को प्रेरणा दे एव असली रुप देने वालों का समर्थन पूर्वक अनुमोदन करे।

जवाहर किरणावली भाग-13 'धर्म और धर्म नायक' नाम से 'धर्म व्याख्या' का जैन जवाहर मित्र मण्डल ब्यावर की ओर से प्रकाशन हुवा है, वर्तमान आचार्य श्री नानालालजी म. सा. ने भी अपने 23 वर्ष की दीक्षा पर्याय एवं आचार्य पद के प्रथम वर्ष रतलाम चातुर्मास मे "विश्व शान्ति का अमोघ उपाय" समता दर्शन का उद्बोधन दिया। उसमें ट्रेक्ट पुस्तक रुप में (1) समता दर्शन एक द्विदर्शन (2) समता दर्शन और व्यवहार (3) समता क्रान्ति का आव्हान आदि समाज के सामने है।

अभी पीपलिया कला में इस ऐतिहासिक चातुर्मास में "समता सस्कार क्रान्ति अभियान" चलाया जा रहा है। आचार्य श्री जी के प्रवचनों एव उद्बोधनो से प्रेरित होकर ग्रामीण जनता ( भाई - बहिन बालक-बालिका युवक-युवतियां ) एव विभिन्न स्कूलों के 200 - 300 बालक प्रतिदिन जीवन निर्माण एव विकास की दिशा में समझ पूर्वक प्रतिज्ञावद्ध हो रहे है। उन्होंने सप्त कुव्यसन ( दारु-मांस जुआ-चोरी शिकार वेश्यागमन परस्त्रीगमन गांजा-भाग अण्डा और गुटके (चुटकी)

का आजीवन त्याग किया है, जो कि आगे भविष्य के साथ - साथ भारतीय भविष्य के विकास हेतु स्तुत्य प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय कदम है।

प्रत्येक परिवार एवं समाज की महिलायें भी उत्साहित होकर आगे आ रही है। उन्हे भी यदि समुचित प्रेरणा एवं मार्ग - दर्शन मिल जाता है तो व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र एवं विश्व में उत्थान एवं सम्यक विकास हेतु सक्रिय बन सकती है।

पूर्व भूमिका हेतु निम्न बातो को ध्यान में लिया जाना उपयुक्त है।

प्रत्येक व्यक्ति की – 18 सामायिक प्रतिज्ञा।

---

विशेष-संघ एवं उसकी चुनिंदा प्रवृत्तियों के सम्यक विकास हेतु संघ के समर्पित उत्साही व्यक्तियों की एक 11 सदस्यीय (भाई - बहिन) परामर्श दात्री समिति निर्मित की जावे जो आ. भगवन के मन्तव्यो को लेकर चतुर्विध संघ को परामर्श देते रहे।

वीर प्रभु ने सेनानी नाना दिव्य महान है।
अहिंसा अनमोल पर जीवन का दिया कुरबान है।

व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र एवं विश्व की वर्तमान परिस्थितिया प्रत्येक भारतीय को अपने मौलिक कर्तव्य एवं नैतिक दायित्व के लिए प्रेरित कर रही है कि हम सब इन सबके सम्यक विकास हेतु कुछ रचनात्मक कार्य करने के लिए अपनी शक्ति और समय का समर्पण करें। इस हेतु कुछ बिन्दु संघ के वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं सदस्या [illegible] है।

जोश न ठण्डा होने पावे, कदम बढ़ाकर चल ।
मंजिल तेरी राह चुनेगी, आज नहीं तो कल ।।

समता समाज को अभिष्ट हैं कि "समता" व्यक्ति एवं समाज के आन्तरिक एवं वाह्य जीवन में रम जाए एवं चिरकाल तक स्थाई रूप ग्रहण कर ले ।

**समाज के उन्नायक उद्देश्य इस प्रकार है :—**

1-व्यक्तिगत रूप से समतासाधक को समतावादी, समताधारी एवं समतादर्शी की श्रेणियों में साधनारत बनाते हुवे अपने व्यक्तित्व को विकेन्द्रित करने की ओर अग्रसर बनाना ।

2-मन की विषमता से लेकर विश्व के विभिन्न क्षैत्रों की विषमताओं से सघर्ष करना एवं सर्वत्र समता की भावता का प्रसार करना ।

3-व्यक्ति और समाज के हितों में ऐसे ताल-मेल बिठाना जिससे दोनों समतामय स्थिति लाने में पूरक शक्तियां बने । समाज व्यक्ति को धरातल दे तो व्यक्ति उस पर समना सदन का निर्माण करे ।

4-स्वार्थ परिग्रह की ममता एवं वितृष्णा को सर्वत्र घटाने का अभियान छेड़कर स्वार्थो एवं विचारो के टकराव को रोकना तथा सामाजिक न्याय एवं सत्य को सर्वोपरि रखना ।

5-स्थान-स्थान पर समता साधकों को संगठित करके समाज की शाखा उप-शाखाओं की स्थापना करना । साधारण जन को समता का महत्व समझाने हेतु विविध संपत प्रवृतियों से संचालित करना एव सम्पूर्ण समतामय परिवर्तन के लिए सचेष्ट रहना ।

-गौतमचन्द रांका (सी.ए.)

# समता समाज रचना

# योजना–1991

नाम : इस संस्था का नाम श्री समता समाज रहेगा ।

उद्देश्य : 1-आत्म धर्मयुक्त नैतिक जीवन निर्मित करना,

2-जन जीवन में नैतिकता को बल मिले ऐसे कार्यक्रम करना

3-जन जीवन में अहिंसा सत्य आधारित प्रेमभाव बढ़ाने की भावना जागृत करना एवं तदनुरूप प्रवृति करना,

4-आत्मधर्मयुक्त नैतिक जीवन के प्रति सच्ची श्रद्धा व आस्था रखना,

5-सामाजिक सहयोग एवं आत्म जागृति हेतु समय - समय पर परिसंवाद एवं भाषणों का आयोजन करना,

6-आत्मज्ञान वृद्धि हेतु पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना कर संचालित करना,

7-समता दर्शन के मूल सिद्धान्तों पर आस्था रख कर सत्ता एवं सम्पति के स्थान पर चेतना एवं कर्तव्यनिष्ठा को प्रमुखता देना,

8-इन उद्देश्यों के सम्यक् प्रचार हेतु टूर प्रोग्राम (चल कार्यक्रम) बनाकर उन्हें कार्यरूप में परिणित करना,

सदस्यता : जाति पाति के भेद भाव से रहित मद्य कुव्यसनों का त्यागी कोई भी महानुभव जो इनके उद्देश्यों पर श्रद्धा रखकर विकास में सहयोगी हो वह इसका विधिवत सदस्य बन सकता है। उसे परिचय-पत्र भरना होगा ।

कार्य : अपने क्षेत्र में प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को निश्चित स्थान एवं समय पर उपस्थित होकर आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास हेतु चर्चा करना।

प्रत्येक सदस्य को उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अप सुझाव व प्रस्ताव रखने का पूर्ण अधिकार होगा।

कोरम 70 प्रतिशत और उपस्थिति के 75प्रतिशत से प्रस्त स्वीकृत किए जा सकेंगे।

किसी भी कार्यक्रम में हिंसा, झूठ, चोरी एवं अनैतिकता कतई प्रोत्साहन नही दिया जा सकेगा।

समता समाज की प्रतिष्ठा में धब्बा न लगे, उसकी यश ए कीर्ति बढे, ऐसा अनुशासन एव संयमपूर्वक व्यवहार अ क्षित है।

नियमोंउल्लघनकर्ता की सदस्यता भंग की जा सकेगी।

[आइए, आप भी इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु योगदान दीजिए]

# समता समाज परिचय-पत्र

श्रीमान् संयोजक महोदय,

समता समाज

सादर जय जिनेन्द्र ।

मैं समता समाज के सिद्धान्तों से सहमत हूं । इसमें प्रवेश पाने के के लिए यह परिचय-पत्र प्रस्तुत कर रहा । कृपया स्वीकृति प्रदान करे ।

1 नाम [illegible] सारेचा

2 गोत्र सारेचा

3 पिता या पति का नाम स्व. मोतीचन्दजी सारेचा

4 जन्म तिथि

5 घर का पूरा पत्ता

6 फोन नम्बर

7 व्यवसाय नौकरी

8 व्यवसाय पूरा पता [illegible]

9 फोन नम्बर [illegible]

10 शैक्षणिक योग्यताएं १०

11 आध्यात्मिक योग्यताएं

12 विशेष योग्याएं

13 माता-पिता के साथ है या नहीं नहीं

14 अन्य भाषा परिचय

15 समाज सेवा का अनुभव

1-साहित्यक

2-राजनैतिक

3-धार्मिक

4-सामाजिक

16 अभिरूचि :

17 समता समाज में आपका सक्रिय सहयोग
किस प्रकार प्राप्त हो सकता है :

1-शारीरिक

2-वैचारिक

3-आर्थिक

18 समता समाज को स्वेच्छा से कितना समय दे सकते है :

1-दिन में समय

2-माह में दिन

3-वर्ष में दिन

जब भी [illegible] उपलब्ध रहूंगा

19 अन्य जानकारी तथा मूल निवास स्थान का पता फोन नं. सहित :

20 पारिवारिक जनों की संख्या नाम सहित :

| क्रम. | नाम | गोत्र | पिता/पति का नाम | उम्र | अध्ययन | ह. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | [illegible] | | [illegible] | 50 | 10 | [illegible] |
| 2 | किरण देवी | - | पत्नी | 45 | 8 | |
| 3 | अशोक कुमार [illegible] | | पुत्र | | - | |
| 4 | [illegible] कुमार | | " | | | |
| 5 | | | | | | |
| 6 | | | | | | |
| 7 | | | | | | |

# नैतिक दायित्व

व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र एवं विश्व के सम्यक् विकास हेतु
कुछ रचनात्मक कार्यक्रम :-

समता संस्कार क्रान्ति महाअभियान
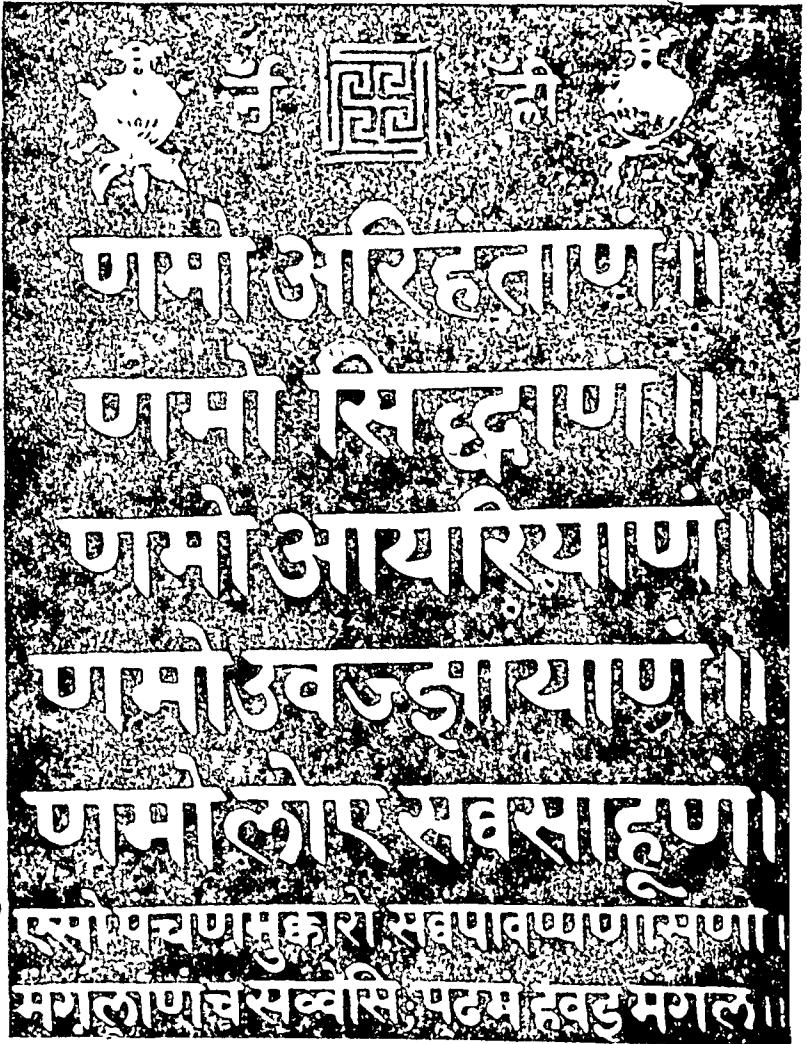
**प्रारम्भ :—**

प्रत्येक व्यक्ति की चारित्रिक दृढ़ता हेतु सप्त कुव्यसनो का त्याग
1-जुआ 2-मांस अण्डे 3-शराव 4-शिकार 5-चोरी 6-बीड़ी, सिगरेट
जर्दा व गुटका 7-परस्त्रीगमन वैश्यागमन ।

# आध्यात्मिक नैतिक जीवन के 45 नियम

1 प्रत्येक कार्य में समय की पाबन्दी टाईम टेबल बनाकर उसके अनुसार अवश्य होनी चाहिये ।

2 रात्रि को निर्धारित समय पर शयन की तैयारी ।

Early to bed and early to rise.

Makes the man healthy wealthy wise.

3 शय्या पर पर्यंकासन (सुखासन) से बैठकर मन वचन काया को एकाग्रता पूर्वक ग्यारह बार महामन्त्र (प्रभु) का ध्यान करना ।

4 तत्पश्चात् कम से कम 15 मिनिट का आत्मावलोकन ।

5 जागरण समय का मन को आदेश देते हुवे साभारी सथारा करना

> आहार शरीर उपधि पच्चखू पाप अठार ।
> मर जाऊं तो वो सिरे, जीऊं जागूं तो आगार ।।

हो सके तो अन्तिम समय का सथारे का प्रत्याख्यान कर लेना ।

6 उत्तम निद्रा के लिए अंग प्रत्यंग की शिथिलता पूर्वक श्वास गिनना

7 प्रात: उठकर आंखे बन्द कर 11 बार (महामन्त्र) प्रभु का ध्यान करना ।

8 तत्पश्चात् शय्या छोडकर तीन बार देव गुरु धर्म को वन्दन करना ।

9 सभी बड़े पारिवारिक सदस्यो को चरण छूकर नमस्कार करना ।

10 तत्पश्चात् घण्टा आधा घण्टा सत्संग स्वाध्याय करना ।

11 सर्व स्वाध्याय के पूर्व निम्न तीन बातों पर अवश्य ही ध्यान देना । (1) समय की पाबन्दी (2) [illegible] बदलना (3) घर में आने के पूर्व तपस्वी बीमार की सांसारिक बाधाओं की निवृत्ति (धर्म में कर्तव्य बना है)

12 स्वाध्याय के समय का 10, 15 और 25 मिनिटों का विभाजन

1-प्रथम 10 मिनिट में हाथ की अनानुपूर्वी पूर्वक मन की साधना

2-सधे हुवे मन में 15 मिनिट का स्वचिंतन (मै कौन हूं कहां से आया हूं, मेरा क्या स्वरुप है, मुझे क्या करना चाहिए और मैं क्या कर रहा हू) 1 माह मे 1 त्रुटि दूर करना ।

3-शेष 25 मिनिटों में सत्साहित्य को मनन पूर्वक पढ़ते हुवे 1 गुण को 1 माह में जीवन में अपनाना । अन्य बाते नही करना ।

13 गाव में विराजित महापुरुषों के दर्शन एवं विधियुक्त वन्दन ।

14 धर्मगुरुओं के सन्मुख वोलने का विवेक रखना ।

15 दैनिक नियमो के चिन्तन पूर्वक यथा शक्ति प्रत्याख्यान ।

16 सप्त कुव्यसन (उल्लिखित) के त्याग पूर्वक आदर्श जीवन बनाना

17 मित्र जो भी सदस्य मिले उनका सत्कार सम्मान युक्त अभिवादन

18 क्रिया से कर्म उपयोग से धर्म, एवं परिणाम से वन्ध के सिद्धान्त को सदैव स्मरण कर व्यावहारिक जीवन सुधारना ।

19 प्रवचन स्थल पर नियत समय पर उपस्थित होकर शान्ति से सुनना ।

20 जीवन की पाक्षिक शुद्धि के लिए लगे दोषों का प्रकटीकरण ।

21 प्राणी मात्र से मित्रता (सत्वेषु मैत्री) बिना छने पानी नहीं पीना

22 सद्गुणी आत्माओं में प्रति आदर भाव । गुण-ग्रहण की भावना ।

23 दुखियों पर अनुकंपाभाव । यथाशक्ति उनके दुखों को दूर करना ।

24 विरोधी एवं शत्रुओं पर भी समभाव । घृणा पाप से, पापी से नही । जीवतु में शत्रुगणा सदैव, येषा प्रसादान, सुविचक्षणोऽहं । ये ये मां प्रतिवाध्यति, ते ते मां प्रतिबोधयन्ति ।।

25 जड़ चेतन के सदभाव पूर्वक आत्मिक शक्ति पर अटल विश्वास ।

26 मोह ममत्व के परिहार पूर्वक सात्विक प्रेम-भाव का विस्तार ।
नव विश्व में ऐसी वहा दूं, प्रेम की मन्दाकिनी ।
दिल मे तड़प हो प्रेमी की, अरु प्रेम जल की प्यास हो ।।

27 क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष अज्ञान व पापकारी प्रवृत्तियो के त्याग पूर्वक जीवन मे क्षमा नम्रता सरलता आदि सद्गुणो से जीवन विकसित करना ।

28 धार्मिक पर्वों मे सम्मिलित रुप से धार्मिक अनुष्ठान करना ।

29 प्रति दिन कुछ न कुछ नया ज्ञान सीखना । सीखे हुवे का विवेचन करना ।

30 उत्पन्न शंकाओं का समुचित समाधान प्राप्त करना ।

31 अपनी पुत्र-वधु व जामाता के प्रति पुत्री व पुत्र का सा - व्यवहार करना ।

32 अपने सास ससुर के प्रति माता-पिता का सा-व्यवहार करना ।

33. अपनी जेठ जेठानी को माता पिता और देवर देवरानी को पुत्र पुत्री समझना ।

34. बड़ों के सामने नहीं बोलना, बाद में नम्रतापूर्वक निवेदन करना ।

35 अपनी स्त्री के प्रति भी अपमानजनक शब्दों का प्रयोग नहीं करना भारी अपराध होने पर भी उसे शान्ति से समझाना ।

36 अपने पति की इच्छा के विरुद्ध कोई भी कार्य कभी न करना ।

37 घुरा श्रमिक (कर्मचारी) तथा पड़ोसियों के साथ सदैव सद्भावना पूर्ण व्यवहार करना ।

38 अपने बालक-बालिकाओं को धार्मिक शिक्षण नियमित रुप से दिलाना ।

12 स्वाध्याय के समय का 10, 15 और 25 मिनिटों का विभाजन

1-प्रथम 10 मिनिट में हाथ की अनानुपूर्वी पूर्वक मन की साधना,

2-सधे हुवे मन में 15 मिनिट का स्वचितन (मै कौन हूं कहां से आया हूं, मेरा क्या स्वरुप है, मुझे क्या करना चाहिए और मैं क्या कर रहा हूं) 1 माह में 1 त्रुटि दूर करना ।

3-शेष 25 मिनिटो में सत्साहित्य को मनन पूर्वक पढ़ते हुवे 1 गुण को 1 माह में जीवन में अपनाना । अन्य बाते नही करना ।

13 गांव में विराजित महापुरुषों के दर्शन एवं विधियुक्त वन्दन ।

14 धर्मगुरुओं के सन्मुख बोलने का विवेक रखना ।

15 दैनिक नियमों के चिन्तन पूर्वक यथा शक्ति प्रत्याख्यान ।

16 सप्त कुव्यसन (उल्लिखित) के त्याग पूर्वक आदर्श जीवन बनाना

17 मित्र जो भी सदस्य मिले उनका सत्कार सम्मान युक्त अभिवादन

18 क्रिया से कर्म उपयोग से धर्म, एवं परिणाम से बन्ध के सिद्धान्त को सदैव स्मरण कर व्यावहारिक जीवन सुधारना ।

19 प्रवचन स्थल पर नियत समय पर उपस्थित होकर शान्ति से सुनना ।

20 जीवन की पाक्षिक शुद्धि के लिए लगे दोषों का प्रकटीकरण ।

21 प्राणी मात्र से मित्रता (सत्वेषु मैत्री) बिना छने पानी नही पीना ।

22 सद्गुणी आत्माओं में प्रति आदर भाव । गुण-ग्रहण की भावना ।

23 दुखियों पर अनुकंपाभाव । यथाशक्ति उनके दुखों को दूर करना ।

24 विरोधी एवं शत्रुओं पर भी समभाव । घृणा पाप से, पापी से नही । जीवतु में शत्रुगणा सदैव, येषां प्रसादान्, सुविचक्षणोऽहं । ये ये मां प्रतिवाध्यति, ते ते मां प्रतिबोधयन्ति ।।

25 जब चेतन के सदभाव पूर्वक आत्यिम शक्ति पर अटल विश्वास।

26 मोह ममत्व के परिहार पूर्वक सात्विक प्रेम-भाव का विस्तार।
सब विश्व में ऐसी बहा दूं, प्रेम की मंदाकिनी।
दिल में तड़प हो प्रेमी की, अरु प्रेम जल की प्यास हो।।

27 क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष अज्ञान व पापकारी प्रवृत्तियों के त्याग पूर्वक जीवन में क्षमा नम्रता सरलता आदि सद्गुणों से जीवन विकसित करना।

28 धार्मिक पर्वों में सम्मिलित रुप से धार्मिक अनुष्ठान करना।

29 प्रति दिन कुछ न कुछ नया ज्ञान सीखना। सीखे हुवे का रिवीजन करना।

30 उत्पन्न शकाओं का समुचित समाधान प्राप्त करना।

31 अपनी पुत्र-वधु व जामाता के प्रति पुत्री व पुत्र का सा - व्यवहार करना।

32 अपने सास ससुर के प्रति माता-पिता का सा-व्यवहार करना।

33. अपनी जेठ जेठानी को माता पिता और देवर देवरानी को पुत्र पुत्री समझना।

34. बड़ों के सामने नहीं बोलना, बाद में नम्रतापूर्वक निवेदन करना।

35 अपनी स्त्री के प्रति भी अपमानजनक शब्दों का प्रयोग नहीं करना भारी अपराध होने पर भी उसे शान्ति से समझाना।

36 अपने पति की इच्छा के विरुद्ध कोई भी कार्य कभी न करना।

37 युवा श्रमिक (कर्मचारी) तथा पड़ोसियों के साथ सदैव सद्भावना पूर्ण व्यवहार करना।

38 अपने बालक-बालिकाओं को धार्मिक शिक्षण नियमित रूप से दिलाना।

39 आगन्तुक का यथोचित सत्कार करते हुए नम्र व मधुर वार्ता करना ।

40 घर पे या बाहर पे खान पान रहन महन में सादगी ध्यान रखना।

41 सभा सोसायटी में उपस्थितों का अभिवादन कर यथा स्थान पर बैठना ।

42 अन्य की निन्दा व आत्म प्रशंसा कभी नही करना ।

43 जो काम स्वयं को अच्छा लगे वही कार्य दूसरों के प्रति करना।

44 नाच व अश्लील चित्रपट नही देखना ।

45 मृत्यु पर रिवाज रुप में रोना नही बारह दिन वाद बैठक रखना नही ।

# महिलाओं के तेतीस नियम

1 नित्य प्रातः सपरिवार गुरुवन्दन एव प्रार्थना करना ।

2 घर में बड़ों को नमस्कार करना ।

3 सामायिक में मोन रखते हुए धार्मिक ग्रथों एव पुस्तकों का पठन करना । व्यर्थ की वाते नही करना ।

4 नित्य प्रति गांव में विराजित सन्त सतियों के दर्शन करना परिवार और पड़ोसियों को साथ लाने का प्रयत्न करना ।

5 धर्म स्थानों में बारीक वस्त्र व अनावश्यक अधिक आभूषण पहिन कर नही जाना ।

6 परस्पर मिलने पर जय जिनेन्द्र करना ।

7 पांच नमस्कार मन्त्र गिनकर भोजन करना झूठा न डालना ।

8 बहनों को पर्दा नहीं करना, अन्यों से छुड़ाने का प्रयत्न करना ।

9 अशिक्षित भाई बहनों को अक्षरी ज्ञान का प्रयत्न करना ।

10 आवश्यकता होने पर वृद्ध बीमार आदि की सेवा करना ।

11 बालक बालिकाओं में धार्मिक शिक्षण का प्रबन्ध करना ।

12 बालक बालिकाओं को संस्कारित एवं सभ्य बनाना ।

13 घर के लोगों को सूचित कर बाहर जाने की आदत डालना ।

14 घर के लोगों को पूछने पर सत्य बात कहना ।

15 कभी भी अप शब्दों का प्रयोग नही करना ।

16 किसी धर्म को निंदा नही करना सत्य धर्म की परूपणा करना ।

17 अन्य की निन्दा न करते हुए 'परस्पर प्रेम बढे' ऐसो प्रवृति करना

18 प्रतिदिन दानार्थ कुछ न कुछ निकालना ।

19 कूड़ा-कर्कट, मेला आदि नियत डब्बे या स्थान पर डालना ।

20 सप्ताह में छुट्टी के दिन परिवार के बीच में कुछ समय बैठकर घरेलू समस्याओं पर विचार कर कठिनाइयों का हल (समाधान) निकल सके ऐसा प्रयत्न करना ।

21 विवाह आदि के अवसर पर व्यर्थ के रीति-रिवाजों को भी कम करते हुए सादगी से काम करना ।

22 दहेज में तिलक का ठहराव नही करना ।

23 मृत्यु भोज स्वयं बन्द करना एव भाग नही लेना ।

24 मृत्यु आदि दुःखद प्रसंगों पर रोना नही । आर्तध्यान करना नहीं

करवाना नहीं। तथा शव पर अनावश्यक वस्त्र आदि का प्रयोग नहीं करना। असमय में न रोना न रुलाना।

25 जहां बली चढ़ती हो ऐसे तथा कथित देव स्थानों में जाकर मस्तक नही झुकाना एवं भेट पूजा नहीं चढ़ाना। जाने वाले करने वालो को समझाना रोकना।

26 रेशम, चर्वी आदि के हिंसक वस्त्र नही पहनना। हिंसक वस्त्र का प्रयोग नहीं करना।

27 घर में पड़ौस में कोई बीमार हो तो संभाल किये बिना सोना नहीं दिन में एक बार जरुर सम्भालना।

28 बच्चों को क्रोध में बेसुदा होकर नही पीटना

29 किसी पर कलंक नही देना। झगड़ा चोरी नहीं करना।

30 मादक, नशीले पदार्थ काम में न लेना। आत्म हत्या नही करना।

31 स्वपति संतोष रूप सदाचार का पालन करना।

32 गन्दे गीत न गाना, अश्लील चित्रपट नही देखना तथा विरोध करना।

33 गर्भपात न करना न करवाना, करने वालों को मना करना संयम पूर्वक रहना ताकी गर्भपात का मोका न मिले। गर्भपात महा पाप है।

# पुरुष वर्ग दैनन्दिन चार्ट

माह सन्

1 2 3 4 5 6 7 8

1 ध्यान चिंतन मनन राईसी प्रतिक्रमण

2 प्रार्थना प्रत्याखान स्वाध्याय वंदन

3 नमन, जयजिनेन्द्र

4 प्रवचन श्रवण

5 मौन साधन

6 विशेष तप

7 सामायिक

8 नया ज्ञान लिखना

9 देवसी प्रतिक्रमण

10 प्रश्नोत्तर, धर्म चर्चा

11 रात्रि भोजन त्याग

12 ध्यान सागारी संथारा

13 अन्तरावलोकन

14 कषायवर्जन

15 निन्दा विकथा वर्जन

16 अनर्थ दण्ड वर्जन

17 विजय, विवेक, आज्ञापालन, सादगी

18 हस्ताक्षर

# बालक वर्ग दैनंदिन चार्ट

माह सन

1 प्रातः सूर्य उदय होने से पहले उठा ?

2 उठकर ध्यान एवं वंदन किया ?

3 बड़ों को प्रणाम जय जिनेन्द्र किया ?

4 दतौन, शौच किया ?

5 सन्त महासतियों के दर्शन किये ?

6 बड़ों की आज्ञा पालन किया ?

7 नवकारसी आदि प्रत्याखान किया ?

8 धार्मिक स्कूल गये व अध्ययन किया ?

9 शाला गये व घर पर अध्ययन किया ?

10 गाली दी व लड़ाई झगड़ा किया ?

11 पैसों से खेला ?

12 नशीली वस्तुओं का सेवन किया ?

13 किसो प्राणी को सताया ?

14 रात्रि भोजन किया ?

15 सोते समय ध्यान आदि किया ?

16 समय चक्र का बराबर पालन हुआ ?

17 सामायिक संख्या

18 हस्ताक्षर बालक के

# (1) समाज को भावी विकास के लिए पारिवारिक भूमिका

1 पारिवारिक सदस्य स्वय मादक द्रव्यो एव मद्य मांसादि का सेवन न करे।

2 बच्चों के प्रति सम्मान सूचक शब्दों का प्रयोग करें. उन्हें स्नेह दे उनके प्रति उपेक्षा वृति न रखे। साथ ही बच्चों को माता-पिता का अधिकाधिक सानिध्य प्राप्त हो इसका ध्यान रखा जावे।

3 अभिभावक ऐसे होठलों और क्लबों में न जावे जहां भद्दे, कामुक प्रदर्शनों साभिष व्यजनों एवं मादक द्रव्यों का प्रचलन हो।

4 अपने बच्चों के साथ अश्लील चलचित्र टी. वी. न देखे न उन्हें ऐसे चलचित्र देखने दे। यथासम्भव इनकी बुराईयां उनके सामने स्पष्ट करते रहे।

5 बच्चों को संतुलित एवं स्वास्थ्य वर्धक आहार देने का प्रयत्न करे।

6 अपने बालकों की गतिविधियों पर ध्यान रखे और उन्हें सुसंस्कारी बालकों के साथ ही आने जाने दे।

7 बच्चों में अध्यात्मिक तत्वों के प्रति निष्ठा जागृत हो इसके लिए परिवार में आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण करे। सामुहिक प्रार्थना एवं आध्यात्मिक चर्चाओं का आयोजन करे।

8 यह प्रयत्न करे की बालकों को समय-समय पर सत्पुरुषों और महापुरुषो का सानिध्य प्राप्त होता रहे।

9 घरों में गन्दा कामुक व अश्लील साहित्य न आने दे। इसके स्थान पर सत्साहित्य का संग्रह और पठन पाठन करे।

10 घरों में सिनेमा अभिनेत्रियों के अश्लील चित्र न टांके। उनके स्थान पर आदर्श पुरुषों के चित्र टांके।

11 पारिवारिक जीवन में परस्पर सहयोग की भावना का विकास करे। वच्चों में पारस्परिक घृणा और विद्वेष के वीज न वोये।

12 बच्चों को स्वावलम्वी बनने की प्रेरणा देवें ।

13 माताएँ गर्भावस्था में अपना आहार-विहार पठन-पाठन और रहन सहन आदि को सुन्दर और सात्विक बनावें ।

14 भय, प्रताड़ना के द्वारा बच्चों की आकांक्षाओं को न दवाया जावे अपितु योग्य मार्ग-दर्शन द्वारा उनकी आदतों में परिवर्तन किए जावे ।

15 अपने अज्ञान को छिपाने हेतु अथवा उत्तर देने में अपना असमर्थता के कारण डांटकर बालकों की जिज्ञासा वृति को समापन करे। और न उन्हें अस्पष्ट उतर दे ।

16 पालक अपने बच्चों के प्रति अविश्वास का भाव न रखे । उन्हे निस्त्साहित न करे । अपितु उन्हें जिम्मेदारियां सौंपकर उनके आत्म विश्वास को जागृत करे ।

## (2) सामाजिक भूमिका :—

1 समाज विहिन अविकसित जातियों एवं परिवारो के बालकों में चरित्र निर्माण हेतु समाज आर्थिक एव बोद्धिक सहयोग प्रदान करे ।

2 ऐसे आवासिय विद्यालयो एव छात्रावासों का विकास किया जावे जिनमें वच्चों में खान-पान में शुद्धता एव आचार - व्यवहार की पवित्रता का ध्यान दिया जावे ।

3 वर्तमान में कार्यरत छात्रावासों में भी खान - पान और आचार व्यवहार की पवित्रता पर विशेप ध्यान दिया जावे ।

4 समाज उन वालकों शिक्षकों एवं व्यक्तियों का सम्मान करे जिनका

जीवन प्रमाणिक और सेवा परोपकार आदि के उच्च मूल्यों को साकार बनाने में समर्पित रहा हो ।

5 सचरित्र एवं प्रमाणिकता को ही सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार बनाया जावे न की सत्ता और सम्पति को ।

6 समाज से मादक द्रव्यों के सेवन वैश्यावृति व्यभिचार एवं हिंसक प्रर्वतियों को समाप्त करने के लिये सामुहिक प्रयास किया जावे ।

7 समाज अच्छे स्तर की शिक्षण सस्थाओं एव लाजो की स्थान - 2 पर स्थापना करे ।

8 अठारह वर्ष तक की उम्र में बालकों का राजनैतिक क्षैत्र एवं चुनाव आदि प्रचार-प्रसार में उपयोग न किया जावे ।

9 समाज सत्साहित्य का सरल भाषा मे निर्माण के लिए प्रयत्न करे एव उसे अल्प-मूल्य मे उपलब्ध करावे ।

10 अनाथ निराश्रित एवं अपराधी बालकों को सुसंस्कारित करने के लिए सस्कार निर्माण ग्रहों की भी स्थापना की जावे ।

11 शादी विवाहादी प्रसंगों पर भोंडे नृत्यों की बढ़ती हुई प्रवृतियों पर रोक लगाई जावे ।

12 रेड़ीयो-टेलीवीजन एवं सिनेमा आदि का उपयोग शिक्षा एव्रं स्वास्थ्य मनोरंजन के लिए हो इसके द्वारा प्रसारित होने वाला कार्यक्रमों पर कठोर नियन्त्रण रखा जाये क्योंकि वालकों में अनेक कुसस्कार इन्ही से आते है ।

13 समाचार पत्रों मे हिसा व्यभिचार आदि की उत्तेजनात्मक खबरो को प्राथमिकता न दी जावे । अपितु सदाचार, सच्चारिगता एव इमानदारी से सम्बन्धित खबरो को प्राथमिकता के साथ छापा जावे ।

## (3) शैक्षणीय भूमिका :—

1 शिक्षक स्वयं को जीवन व्यसन रहित बनावे ।

2 वे बालकों को आत्मियता का वातावरण दे । और उनके प्रति अभिभावक की भूमिका निभाये ।

3 बालक का मस्तिष्क केवल सूचनाओं से नही भरे अपितु उसे स्वचिंतन के लिए प्रेरित करे ।

4 खेल एवं अन्य प्रवृतियों के द्वारा बालकों में पारस्परिक सहकार की भावना का विकास करे ।

5 बालकों में पारस्परिक संवेदन-शीलता को विकसित करे उन्हे एक-दूसरे के सुख-दुख में भागीदार बनावे ।

6 शिक्षक बालको की रूचियों का पता लगावे ताकि उन्हें अपनी रूचि के अनुकूल क्षैत्र में विकसित किया जावे ।

7 पुस्तकीय ज्ञान के साथ अनुभावनात्मक ज्ञान को प्राथमिकता दे ।

8 शिक्षा के पाठयक्रम में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा को सीचा जावे ।

9 बालकों मे नैतिकता और सचरित्रता को विकसित करने के लिए आदर्श पुरुषों में जीवन चरित्र एवं नैतिक मूल्य पर आधारित नाटक आदि अभिनीत किये जावे ।

10 परस्पर सहकार की भावना को विकसित करने के लिए समाज सेवा के शिविरों का आयोजन किया जा ।

# [ 5 ]

## 'आदर्श गृहस्थ धर्म समता साधन रचना हेतु प्रतिज्ञा'

1 सगाई तिलक सावा स्थापना तथा मण्डप-रोहण के समय अल्पहार तथा भोजन का आयोजन नही करना ।
(आवश्यकता अनुसार पेय व आईसक्रीम का ही प्रयोग करना ।

2 प्रीतिभोज विवाह प्रसग तथा स्वागत समारोह के कार्यक्रमों का आयोजन अनुकूलता अनुसार दिन में करना ।

3 उपरोक्त प्रसंगों पर आयोजित अल्पाहारों या प्रीतिभोज में आलू प्याज आदि जमीकंद का प्रयोग नही करना ।

4 माङ्गलिक विवाहादि प्रसंग पर शोभा यात्रा में यदि युवकों एवं स्त्रीयो द्वारा सड़क पर नृत्य प्रस्तुत करने पर उसे रोकने का अनुरोध करना अन्यथा उससे अलग हो जाना ।

5 इन प्रसगो पर आतिशबाजी का प्रयोग नही करु ंगा ।

6 मेरे परिवार में सगाई या विवाहदि प्रसंगों पर दहेज की मांग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से न करू ंगा न कराउ ंगा ।

7 इन प्रसंगो पर तास के पतों पर पैसा नहीं लगाउ ंगा जुवा नहीं खेलू ंगा ।

8 मदिरा आदि अभक्ष्य वस्तु किसी भी रुप में सेवन कभी नहीं करु ंगा यदि कही होता होगा तो उसे रोकने का प्रयास करु ंगा ।

9 मेरे परिवार में पुत्र व पुत्री के विवाह प्रसंग पर सामुहिक विवाह पद्धति में सम्मलित होने का प्रयास करु ंगा तथा सामने वाले पक्ष द्वारा सुझाव आने पर सहर्ष स्वीकृति दू ंगा ।

10 घर में बहू आदि किसी सदस्य को किसी निमित से ताना कशी नही करु गा न सताउ ंगा ।

# ( 10 )

## ॥ जीवन में आचरण की 21 सूत्री योजना ॥

उद्बोधक परम पुज्य आचार्य श्री नानालालजी म. सा. समता दर्शन में विश्वास रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को ।

1 ग्राम धर्म, नगर धर्म, राष्ट्र धर्म आदि की सुव्यवस्था अर्थात तत्सम्बन्धी सामाजिक नैतिक नियमो का पालन करना, उससे कोई कुव्यवस्था पैदा नही करना एव कुव्यवस्था पैदा करने वालो का सहयोगी नही होना ।

2 अनावश्यक हिसा का परित्याग करना तथा आवश्यक हिसा की अवस्था में भी भावना को व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र आदि की रक्षा की रखना तथा विवशता से होने वाली हिसा में लाचारी अनुभव करना न कि प्रशन्नता ।

3 झूठी साजी नही देना, स्त्री पुरुष, पर भूमि आदि के लिने झूठ नही बोलना ।

4 वस्तु में मिलावट करके धोके से नही बेचना ।

5 ताला तोड़कर, चाबी लगाकर तथा सेंध लगाकर वस्तु नही चुराना किसी की अमानत को हजम नही करना ।

6 पर स्त्री का त्याग करना स्व स्त्री के साथ भी अधिक से अधिक ब्रमचर्य पालना ।

7 व्यक्ति समाज व राष्ट्र आदि की जिम्मेदारी के अनावश्यक अनुमान के अतिरिक्त धन धान्य पर अपना अधिकार नही रखना आवश्यकता से अधिक धन धान्य हो तो ट्रस्टी बनकर उसका यथ आवश्यकता शल्य समवितरण की भावना रखना ।

8 लेन देन एवं व्यवसाय आदि की सीमा एव मात्र की अपनी सामर्थ्य के अनुसार मर्यादा व मात्रा की अपनी सामर्थ्य के अनुसार मर्यादा करना ।

9 परिवार समाज एवं राष्ट्र के चरित्र में कलंक लगे ऐसा कोई भी कार्य स्वयं न करना ।

10 नैतिक, धरातल पूर्वक आध्यात्मिक जीवन के निर्माणार्थ तदनुरुप सत्प्रवृति का ध्यान रखना ।

11 मानव जाति के गुण कर्म के अनुरुप वर्गीकरण पर श्रद्धा (विश्वास) रखने देगें । किसी भी व्यक्ति से घृणा व द्वेष नहीं रखना ।

12 उत्तम सयमी मर्यादाओं का पालन करना एवं अनुशासन को भंग करने वालों को अहिंसक असहयोग के तरिके से सुधारना परन्तु द्वेष की भावना न लाना ।

13 प्राप्त अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करना ।

14 कर्त्तव्य पालन का पूरा ध्यान रखना लेकिन प्राप्त सत्ता में आसक्त (लोलुप) नही होना ।

15 सत्ता और सम्पत्ती को मानव सेवा का साधन मानना न कि साध्य ।

16 सामाजिक व राष्ट्रीय चरित्र पूर्वक भावात्मक एकता को महत्व देना ।

17 जनतन्त्र का दुरुपयोग नहीं करना ।

18 दहेज, बिटी, तिलक, टिका आदि की मांगनी सोदेबाजी तथा प्रदर्शन नही करुंगा ।

19 सादगी में विश्वास रखना तथा बुरे रीति-रिवाजों का परित्याग करना ।

20 चरित्र निर्माण पूर्वक धार्मिक शिक्षण पर बल देना एवं नित्य प्रतिक्रमण समय एक घण्टा धार्मिक क्रिया पूर्वक स्वाध्याय चितन मनन करना ।

21 समता दर्शन के आधार पर सुसमाज व्यवस्था में विश्वास रखना ।

## 17 संवर प्रतिज्ञा

करेमि भंते ! सवरं पंचासवा जुत्तं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि णमुक्कार पज्जत एगविहं एगविहेण न करेमि कायसा (दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वायसा कायसा) तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

## 18 सामायिक प्रतिज्ञा

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविह-तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा-वयसा-कायस तस्स भते ! पडिक्कमामि निदामि-गरहामि अप्पाण वोसिरामि ।

卐

## श्री स्थानक वासी साधुमार्गी जैन के लिये पारित नियम :

1 एक शहर मे स्थानकवासी या तेरापथी दोनो में से एक ही चातुर्मास होना चाहिये । यदि किसी कारण से दो चातुर्मास करवाना पड़े तो दोनों संघों की सहमति आवश्यक है ।

2 साधुओं मे दो ठाणा और साध्वियों में तीन ठाणा से कम संख्या हो तो चातुर्मास नहीं करवाना ।

3 यदि एक ही शहर में साधु एवम् साध्वीयों का आवगमन हो तो दोनो में ठहरने की व्यवस्था अलग-2 स्थान पर करनी चाहिये ।

4 विहार के समय साधु एव साध्वीयों का एक साथ विहार हो तो उन्हे रोकना और आगे पीछे विहार करवाना ।

5 शहर से प्रस्थान होने से पहले साधु साध्वी का विहार हो तो उसे रोकना ।

6 सन्तों में शिथिलाचार न बैठे इस ओर सभी शहरों के संघों को सतर्क रहना चाहिये और श्रावकों को व्यक्तिगत रूप से इस ओर ध्यान देना चाहिये ।

7 जिस शहर में श्रावकों के घर है उस शहर में साधुओं को सूझता आहार मिले उस तरफ श्रावकों को विशेष लक्ष्य देना चाहिये । आधाकर्मी अनुकती और साधु सन्तों के अयोग्य वस्तु जिसे कहते हैं उसकी जानकारी श्री संघ के अधिकारी सभी श्रावक वर्ग को देकर पालन करने के लिये सतर्क रहे ।

8 श्रावक-श्राविका किसी के भी तपस्या हो तो सांझी या गीत का कार्यक्रम सामुहिक रूप से एक ही बार एक ही स्थान पर हो तो ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये । यदि किसी को सांझी के लिये अपने घर बुलाना हो तो साता पूछते समय रुपयों का लेन देन नहीं करना चाहिये साधु साध्वी की तपस्या पर साझी या गीत नही रखना चाहिये किन्तु जाप का आयोजन हो सकता है ।

9 श्रावक व श्राविकायें स्थानक में आकर ही सामायिक स्वाध्याय करे इसका आग्रह रहना चाहिये ।

10 शहरो में बच्चों के लिये धार्मिक पाठशाल हो तो शुरु करने का प्रयास करना चाहिये ।

11 दो शहर जहां श्वेताम्बर समाज के घर हो और उनका अन्तर ज्यादा हो तो ऐसे दो शहरों के बीच सार्वजनिक धर्मशाला का निर्माण किया जावे ताकि विहार के समय साधु साध्वी को कष्ट कम हो दिनांक 27-8-82 आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म. सा. चातुर्मास है तपस्या का पवित्र उद्देश्य कर्मों निजरा करने का होता है लेकिन उसे भूलकर तपस्या निमित जुलुस व जीमण-वार बाहर से सगे सम्बन्धी को आमन्त्रित करना आदि कई आडम्बर किये जाते है इन कार्यों में जीवों की हिंसा होती है जो की उचित नही है बल्कि धार्मिक दृष्टि से अनावश्यक एवम्

निषिद्ध है हमारे यहां तपस्या के प्रसंग पर इन सभी अनावश्यक रिती-रिवाजों को तिलाञ्जनी देने की प्रथा प्रस्थापित हुई है उसी अनुसार कोई आडम्बर नही किया गया।

दिनांक 20-8-89 जैन पाक्षिक प्रकाश 76 अक 20/21 पृष्ठ 37 क्या आप जानते है? तेरापंथी समाज में तपस्या की दैनिक पत्रो में सूचनाये नही आती है, उनके वर घोड़ा नहीं निकलता, किन्तु जो वडी तपस्याये करते है, वह एक या दो वस द्वारा दर्शन यात्रा करते है और तपस्या के पारणे के बाद पू. साधु साध्वीयों के दर्शनार्थ सगे - सम्बन्धी को ले जाते है। वे आडम्बर प्रदर्शन आदि में धन खर्च के बदले तात्विक पुस्तकों का प्रकाशन धर्म प्रचार भावी पीढ़ी में धार्मिक संस्कार सिचन हेतु अधिकाधिक समय शक्ति और लक्ष्मी का उपयोग करते है। तपस्या स्वयम महान दर्शन है।

## समता क्रान्ति का आह्वान

# विषमता की आग

( आचार्य श्री नानेश )

संसार में आज विषमता की आग धू-धू करके जल रही है। व्यक्ति से विश्व तक, अन्त:करण से बाह्य जीवन तक सर्वत्र अशान्ति, असंयम अविश्वास और अनीति छाई हुई है। ऐसा प्रतीत होता है कि हजारों वर्षों के प्रयास और त्याग द्वारा विकसित की हुई सभ्यता और संस्कृति का लोप हो जायेगा। भीतर से खोखलापन आ चुकने पर ध्वस्त होते देर ही क्या लगती है? स्वार्थ, भोग-लिप्सा निष्ठुरता, हिंसा और धन संग्रह की होड़ ने जीवन के सन्तुलन को डगमगा दिया है। हमारे समस्त साधन और समूची प्रगति विषमता के ही साधन बनते जा रहे हैं। विषमता का यह विस्तार और प्रभाव अभूतपूर्व है। आज वह अधिक जटिल और नियोजनबद्ध हो गई है। यहां शोषण ने सेवा की, हिंसा ने धार्मिकता और दया की, अनाचार ने सदाचार की, भोग ने त्याग की, चोरी ने साहूकारी की, अनीति ने नैतिकता की और घोर परिग्रह ने पुरुषार्थ की केवल पोशाक ही नहीं धारण कर ली है, बल्कि अपने लिये सम्मान, पुरस्कार और स्थायित्व की व्यवस्था भी कर ली है। नैतिक मूल्यों की इतनी अवमानना इससे पूर्व कभी नहीं हुई। समाज की व्यवस्था सम्मान, सुरक्षा और नैतिकता के मानदण्ड विषमता और भोगवाद द्वारा ही निर्धारित होने लगे हैं। अत. समता क्रान्ति ही इस बिगड़े हुए सन्तुलन को पुन: कायम करने एवं स्थायित्व देने का अन्तिम उपाय है।

इतिहास साक्षी देता है कि विषमता को पाटने के लिये समय-समय पर क्रान्तियां और बगावतें होती रही हैं। किन्तु हर क्रान्ति और बगावत ने विषमता को बढ़ाया ही है। उन क्रान्तियों का असर बुनियाद तक नहीं गया। उन अभियानों का ध्यान किन्हीं खास विषम परिस्थितियों पर केन्द्रित था। अत. जो परिवर्तन आये, उनका प्रभाव भी परिस्थितियों तक ही सीमित रह गया। परिणामस्वरूप शोषित को शोषण के चंगुल से सदाशयता पूर्वक यदि मुक्त भी किया गया, तो भी

शोषण की जड़ों का उच्छेदन नही हो सका। बुनियादी क्रान्ति के लिये आवश्यक है कि विषमता की बुनियाद पर प्रहार किया जाय। विषमता की बुनियाद मानव मन में है, अतः बुनियादी क्रान्ति के लिये मानव की बुनियादी रचना को ध्यान में रखकर चलना होगा।

समता क्रान्ति मानव जीवन में बुनियादी क्रान्ति का विज्ञान है। इसका लक्ष्य विषम परिस्थितियो पर नियन्त्रण के साथ ही विषमता को जड़-मूल सहित उखाड़ फेंकना और समता की प्रतिष्ठा करना है। जब तक मानव जीवन जागृत, सचेतन, सवेदनशील और सदाशयी नही बनेगा, समता की स्थापना नही हो सकती। अतः अब क्रान्ति वही कारगर होगी, जिसमें सृजन-चेतना का विराट आशय होगा।

पतन, पाशविकता, घोर परिग्रह और भोग - लिप्सा मानव की दुर्बलता पर खडे है। जब आत्म-चेतना का द्वार वन्द हो जाता है, जब मानव अपने शाश्वत स्वरुप और प्रकाश से अपरिचित हो जाता है, जब वह अपने जीवन को ऊंचे मूल्यों की ओर गतिशील कर पाने में अयोग्य हो जाता है, तभी उसके भीतर के पाशविक जड़त्व को अवसर मिलता है कि वह उसे भोग-लिप्सा और जघन्य परिग्रह मे झोक दे। अतः धन और भोग के साधनो के अन्ध सग्रह की जो लिप्सा है, वह मानवीय पुरुषार्थ की निकृष्टतम अभिव्यक्ति, पाशविक अधोगति और शोचनीय दुर्घटना है : परिग्रह की अहन्ता और उसी पर आस्था मानव के विषम मन के कारण ही जीवन में जड़ जमाते है। परिग्रह तव तक जीवन के लिये होता है, तब तक वह सात्विक होता है, किन्तु जब जीवन को परिग्रह के लिये झोंका जाता है तब विषमता का जन्म होता है। जब जीवन में उच्चतर अर्थ प्रकाशित नही हो पाते, तब विकृत जीवन ही परिग्रह में लिप्त होता है।

यह मानव-जीवन ही दुर्घटना है। हिसा शोषण, अनैतिकता पाषण्ड, अनाचार और प्रपंच आदि विषम परिग्रह को ही शाखाएं प्रशाखाए है। मानव मन के विकृत हुए बगैर ये उसे रूचिकर नहीं हो सकते, अत जघन्य परिग्रह के वशीभूत मानव के हिसक आवेग पर नियन्त्रण स्थापित करना जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है उसे आत्मन् की दिशा में जागृत करना। इतिहास साक्षी है कि मानव जब कभी और जहां कहीं भी अपने चैतन्य के प्रति सजग हुआ है, जडत्व की परवशता उसके जीवन से स्वतः झड़ गई है। वह करुणा, अहिसा, सदाशयता,

सहानुभूति, सेवा और प्राणी मात्र के मंगल का अजस्त्र स्त्रोत बन गया है, तथा परिग्रह की चट्टाने भी उसके मानवीय वेग को रोक नही सकी है। अतः विषमता के उन्मूलन के लिये जो क्रान्ति उठे, उसमें यह भाव होना चाहिये की परिग्रह द्वारा ग्रस्त मानव भी दयनीय है और उसके उद्धार और जागरण की व्यवस्था होनी चाहिये। इससे उस क्रान्ति का आशय विस्तृत होगा। समता क्रान्ति की यही सदाशयता उसकी व्यापक सफलता का आधार बनेगी। उसमें नियन्त्रण और सुधार के साथ ही उद्धार का आग्रह भी होगा।

चेतन और जड़ के मिलन का नाम संसार है। आत्मा का स्वरुप ज्ञानमय चेतना है। चेतना शरीर के साथ संयुक्त है। जड़ पदार्थ जीवन संचालन का निमित्त है। मानव चेतना में जड़ के प्रति स्वामित्व बोध अनादि है। यह स्वामित्व बोध धीरे-धीरे ममत्वबोध में ढलता है, फिर आसशक्ति वश पदार्थ के भोग और उस पर निर्भयता का उदय होता है। पदार्थ पर निर्भरता का अगला चरण परवशता है। इस प्रकार चेतन पर जड़ का शासन स्थापित हो जाता है और व्यक्ति जड़ पदार्थों का कठपुतला बन जाता है।

जड - पदार्थ जीवन संचालन का निमित्त है। किन्तु जड़त्व के व्यामोह से अपनी आत्म-चेतना की ओर से मानव-मन जब विचलित हो जाता है, तब उसमें असीम भोग लिप्सा का आवेग जागृत हो उठता है। यह भोग लिप्सा ही धन-लिप्सा और सत्ता - लिप्सा का रुप धारण करती है। राग और द्वेष की तीव्रतावश यह उग्र परिग्रह-भाव, हिसा शोषण, निर्दयता, असत्य और दुराचार से समझौता करके व्यक्ति को भी विषम बना देता है और समाज में भी विषमता-जनित सघर्ष छिड़ जाता है। उस पाशविक परिग्रह को मानव - चेतना की मूर्च्छना कहा गया है -

मुच्छा परिग्गहो वुत्तो।

आत्म चेतना का स्वरूप सच्चिदानन्दमय है। उसका प्रकाश, दया करुणा, शान्ति, त्याग, सदाशयता और सहानुभूति के रुप में प्रस्फुटित होता है। जड़ पदार्थों के प्रति व्यामोह जहां विषमता का कारण है, वहाँ चेतनाशील जगत के प्रति क्रियाशील आस्था समता का आधार है।

मानव यदि अपने आत्म स्वरूप के प्रति जागृत हो जाय, तो चेतना के प्रति आस्था का विकास होने लगता है और उसी अनुपात में जड़त्व मोह क्षीण होता जाता है। जड़ पदार्थो के प्रति अनासक्ति से आत्मा की शुद्धि होती जाती है। पूर्ण शुद्धि को मोक्ष कहा गया है।

ममता की स्थिति में जडत्व के प्रति जितना तामसिक आकर्षण होता है। समता की स्थिति बनते ही जीवन और चेतना के प्रति उतना ही सात्विक और आत्मीय लगाव हो जाता है। आत्मानुभूति और आत्म-जागृति के प्रकाश को ही निर्णायक शक्ति कहा जाता है। मन के तल पर समता आने से दृष्टिकोण समतामय हो जाता है और तब कर्म भी सौम्यतामय हो जाता है।

विश्व की समस्त आत्माए मूल स्वरूप मे एक समान है। उनमें भेद कर्मावरण के कारण है। परिग्रह तथा उसके अनिवार्य अनैतिक अवयवों से मुक्ति के लिये आत्म जागरण की आवश्यकता है।

हिंसा, शोषण और अनाचार परिग्रह के अनिवार्य अग है। और फिर परिग्रह ही दुराचार, अनैतिकता और कपट को व्यक्ति की चेतना से जोड़ देता है। यह एक प्रत्यक्ष सच्चाई है, ससार के चिन्तको ने कहा है और विषमता के रूप में मानव जाति का भोगा हुआ यथार्थ भी है। इसके लिये शास्त्र भी ऐसा ही कहते है हां, शास्त्र और धर्म इतनी सहानुभूति अवश्य छोड़ते है कि इसे चेतना मूर्च्छना कहते है। नैतिक अर्जन से धन-बाहुल्य सम्भव नही होता अर्थात धन का बाहुल्य अनैतिकता का बाहुल्य ही है।

# दासत्व से स्वामित्व तक—

## —परिग्रह से त्याग तक—

परिग्रह में ममत्व तीव्र होता है और वह मनुष्य की भोग-लिप्सा का साधन होता है, अत व्यक्ति को भ्रम हो जाता है कि वह अपने संग्रह का र [illegible] है। उसकी वास्तविक स्थिती एक दास की होती है और ये परिग्रहित साधन उसे आत्म - चेतना की चरम ऊंचाइयो से खीचकर भोग, हिसा दुराचार और अनीति के पंक में आपादमस्तक

डुबोये रहते है। उसकी दासता इतनी संवेदनशील हो जाती है कि उसके परिग्रह पर आई हुई चोट उसकी अपनी चेतना को झकझोर जाती है। यह मालिक की हैसियत तो कदापि नहीं है। स्वामित्व-बोध की परख तो त्याग में है। स्वामी ही त्याग कर सकता है, चिपकाव गुलामी का लक्षण है। अतः व्यक्ति को जागृत होकर परखना चाहिये कि वह अपने धन, अपने शरीर और अपने पद का स्वामी है अथवा गुलाम। त्याग ही कसोटी है। स्वामित्व का विकास ही आत्म - चेतना की जागृति का सूचक है।

卐

## विश्व चेतना के प्रति आत्म भाव—

जडत्व-बन्धन और भोग-लिप्सा के उद्दाम वेग का शिथिल करके समता क्रान्ति को गतिशील बनाने के लिये व्यक्ति से समाज तक एक वातावरण का निर्माण आवश्यक होगा। प्रत्येक संकल्प और कार्य की परख और मूल्यांकन के लिये विश्व-चेतना के प्रति सदाशयी दृष्टिकोण अपनाना होगा और तदनुरूप ही मानदण्ड निर्धारित करने होंगे। प्रत्येक संकल्प और कार्य को परखने के लिये कसौटी यही होगी कि यह विश्व की चेतना-सत्ता के लिये मंगलदायी तो है। यदि प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से शोषण, हिंसा, दुराचार अथवा भोगवादी संचय से जुड़ा हुआ है, तो वह अकरणीय है और उससे विषमता बढेगी।

ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, कलह और अनैतिकता के विचार जिस व्यक्ति के मन मे है, उसे स्वयं शान्ति और सुख नही प्राप्त हो सकते। यदि ये बीज समाज की भूमि में पड़ते है, तो विषमता और अशान्ति बढ जाते है।

# आत्म सम्बोधन

## -: आत्म जागृति के प्रेरक सूत्र :-

1 हे चैतन्य ! तू चिन्तन कर कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, किस लिये आया हूं और क्या कर रहा हूं ।

2 हे चैतन्य देव ! तू सतचितु आनन्दघन स्वरूप ज्ञाता एव दृष्टा है, किन्तु कर्मबन्धन के कारण अनादिकाल से चतुंगति ससार में भटकता आ रहा है । प्रबल पुण्योदय से तुझे यह अमूल्य मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है ।

3 हे ज्ञान पुन्ज ! ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि आत्म गुणो के विकास एव परम शान्ति, अखण्ड आनन्द की प्राप्ति हेतु तुझे यह मानव तन प्राप्त हुआ है ।

4 हे ज्योतिर्मय आत्मन् ! तू सम भाव से चिन्तन कर कि तुम्हारा तो सोचना, बोलना एवं चिन्तन करना तुच्छ भाव से युक्त नही है ।

5 हे सुज्ञ चैतन्य ! तू जिन भौतिक पदार्थों को ही सर्वोपरि मानकर उनकी प्राप्ति के लिये असत्य, प्रपन्च आदि दुष्प्रवृतियों मे उलझता हुआ अमानवीय भावों में बहता रहता है एव कटु वचनों के द्वारा अनेक हृदयों को चोट पहुंचाता रहता है क्या यह तेरे गौरव के अनुरूप है ? नहीं कदापि नही ।

6 हे प्रवुद्ध चैतन्य ! यह निश्चित समझ कि मिथ्या श्रद्धा, मिथ्या ज्ञान, असत्य आचरण और पर पदार्थो पर ममत्व भाव तुम्हारे स्वभाव नही है । पर निन्दा करना, सक्लेश उत्पन्न करना एव मोहवृद्धि के कार्य तेरी एव अन्य किसी की आत्मा के लिये हितकर नही है ।

7 हे विज्ञाता ! तू यह अविचल श्रद्धा न कर कि सुदेव, सुगुरु, सुधर्म अहिसा, सत्य, अचौर्य ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह एवं स्याद्वाद आदि सिद्धान्त ही तेरी आत्मा को उन्नति करने वाले हैं ।

8 हे सिद्ध बुद्ध निरंजन आत्मन ! सिद्धावस्था की अपेक्षा से न तू दीर्घ है न तू ह्रस्व आदि लौकिक विशेषणों से युक्त है। तेरा कोई वर्ण, गन्ध, रस स्पर्शादि युक्त आकार भी नही है। तु अरूपी है, अशरीरी है, अजर है, अमर है, अवेदी है, अखेदी है, अलेशी है, अक्षय सुख, रूप एव ज्ञाता व द्रष्टा आदि सम्परिपूर्ण गुणों से सम्पन्न है।

9 हे सुज्ञानी आत्मन् ! तू विशुद्ध आत्मिक स्वरूप के आदर्श को समक्ष रखते हुए सम्यग विधि से जीवन को उन्नत बनाओ तथा अन्त में समग्र बन्धनों से विनिर्मुक्त बनो।

ये प्रश्न, ये बिन्दु, ये उद्बोधन, जब अन्तस की गहराइयो में उतर जाते है, जब 'मै' की सात्विक प्यास जाग उठती है। व्यक्ति की चेतना, जो 'यह' 'वह' और 'मेरा' के तन्तुओं के द्वारा जड़त्व से कसी गई रहती है, मुक्त पृथक और स्वत. प्रकाशित होने लगती है, जड़त्व के बन्धन शिथिल और दुर्बल होने लगती है, विषमता के समस्त विकास प्रत्यक्ष होने लगते है, और सच्चिदानन्दघन की तीव्र तलाश में भोग एव स्वार्थ के समस्त आयोजन निरर्थक प्रतीत होने लगते है। बन्धन के जड़त्व से अनन्त तक की यह साधना - यात्रा, इस सक्षिप्त साहित्य की विषय सामग्री नही बन सकती। किन्तु जागृति के इस आयोजन का अपना प्रभाव है। उससे विषमता के प्रति मोह छिन्न हो जाता है और समता के प्रति आत्मीयता स्थापित हो जाती है।

卐

## आत्म नियन्त्रण–

आत्म-जागृति के साधना-काल में व्यक्ति को आत्म-नियन्त्रित भी रहना पड़ेगा। स्वार्थ, भोग और परिग्रह की आसक्ति, जिसके प्रभाव से जगत चल रहा है, बहुत सशक्त होती है। दुर्बलता से अकिंचन समझौता भी विषमता और व्यामोह के पंक तक सरका सकता है। इस नियन्त्रण के लिये कतिपय नियमों और व्रतों का सहारा बहुत आवश्यक और उपयोगी होता है। साधक को सावचेत रहकर इनका पालन करना

चाहिये । समतामय आचरण के प्रमुख पहलू है-

1 हिंसा का त्याग और समस्त आत्माओं की समानता में आस्था।
2 मिथ्या आचरण से परहेज ।
3 चोरी और प्रमाद का त्याग ।
4 इन्द्रिय-संयम ।
5 तृष्णा पर अंकुश
6 चरित्र का विकास
7 अधिकारों का सदुपयोग
8 अनासक्ति का भाव
9 सत्ता और सम्पत्ति को साध्य नही मानना
10 सादगी और सरलता
11 स्वाध्याय और चिन्तन
12 कुरीतियों से तटस्थता
13 जीवन-व्यवहार में प्रामाणिकता को प्राथमिकता
14 धन-धान्य के सम वितरण में आस्था
15 अविचल नैतिक निष्ठा
16 सुधार के अहिंसक अभियान में विश्वास
17 गुण और कर्म के अनुसार मानव के स्तर का निरूपण
18 भावात्मक एकता की दृष्टि
19 जनतन्त्र के आदर्शों का प्रसार-विकास
20 वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना
21 समता पर आधारित समाज-व्यवस्था ।

# सामाजिक नियन्त्रण-

व्यक्ति की भोगाकांक्षा, धनाकांक्षा को यदि खुला खेलने का वातावरण समाज में बना रहे, तो विषमता अर्थात शोषण, हिंसा, अन्याय दुराचार आदि पर नियन्त्रण नहीं पाया जा सकता। समता की स्थापना और विपमता के विरोध के लिये समाज में जागृति पैदा करना समता क्रान्ति के लिये अनिवार्य कर्तव्य है। अतः समता क्रान्ति के कार्यकर्त्ता को समाज मे नियन्त्रण - चेतना का उत्साह उत्पन्न करना चाहिये। सचेतन लोगों की एक सेना खड़ी कर ली जाये, जो निम्न बिन्दुओ पर सामाजिक नियन्त्रण के प्रति सचेष्ट रहे।

1 उदासीनता का त्याग
2 विषमता के कार्यो का पर्दाफाश और प्रकाशन
3 स्वैच्छिक सामाजिक तथा धार्मिक सस्थाओं की सही भावना की रक्षा और उन्हे भोग एवं परिग्रह वादियों के कुप्रभाव से बचाना।
4 समाज में सद्गुण, सत्कर्म, सत्प्रवृत्ति और मानवीय योग्यता के प्रति आदर और प्रोत्साहन का भाव जागृत करना।
5 धन के प्रभाव में आकर समाज के भोले लोग दुराचारियों की पूजा मे नही लगें, ऐसा स्वाभिमान एव निर्भयतापूर्ण वातावरण बनाना।
6 चोरी, दुराचार, भ्रष्टाचार, हिसा, फरेब और परिग्रह के सभ्य दिखने वाले छद्‌म रूपों का प्रकाशन।
7 इस बात का ध्यान रखना कि विषमता पोषी शक्तियां, सद्गुणी और सत्कर्मी लोगों का चरित्रहनन न करने पाये।
8 धन और सत्ता को प्रतिष्ठा का कारण नही बनने देना।
9 परिग्रहवादियों के कुचक्रों से जनतन्त्रीय अधिकारो और आदर्शो की रक्षा करना।
10 समता क्रान्ति की पवित्र भावना के प्रति जनमत तैयार करना।
11 सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन का अभियान चलाना।

विशेष:-समता-क्रान्ति के कार्यकर्ताओ का प्रत्येक अभियान अहिंसात्मक होना चाहिये। अहिंसा से विचलन समता क्रान्ति की भावना के विपरीत है।

—विद्वद्वर्य श्री सम्पत मुनिजी म.सा.

"जय गुरु नाना"

# जैन सिद्धान्तो में विज्ञान अधूरा है।

(स्व. श्री दुलहराजजी रांका, जयनगर)

अभी 15 जुलाई सन् के जैन प्रकाश के मुख्य पृष्ठ पर उपध्याय श्री अमर मुनिजी का 'चिन्तन के झरोखे मे' शीर्षक नामक लेख छपा था जिसे पढ़कर दुःख हुआ कि उपाध्याय पद पर आसीन होने हुये भी जैन धर्म के सिद्धान्तो को नष्ठ करने का विज्ञान की ओट में कुचक्र चला रहे है। इन्होंने तो विज्ञान को ही एकान्त सत्य और पूर्ण मान लिया है।

जिस लोक सस्थान भावना से शिवराज ऋषि का विभंग नान मिटकर विशुद्ध अवधि ज्ञान प्राप्त कर क्रमशः केवल ज्ञान प्राप्त किया था उसी लोक स्वरुप का कविजि म. विज्ञान के पर्यवेक्षण मे उलझ कर उनका जैन सिद्धान्तों पर प्रहार करना कहां तक का न्याय हे।

विज्ञान अभी अधूरा है किन्तु वीतराग परुपित सिद्धान्त त्रिकाल सत्य है। लेकिन फिर भी चन्द्रलोक पर और अन्य दूसरे ग्रहो पर पहुचने की जो वाते लिखी है वे कविजी म. के अनुकुल नही है क्योकि (जैन वैदिक) ग्रन्थों में सूर्य से चन्द्रमा ऊपर है और चन्द्रमा स्फटिक रत्न मय विमान है। इस दृष्ठि से अनुमानतः वैज्ञानिको द्वारा प्राप्त की गई मिट्टी और कंकड़ वेताढ्य पर्वत की पहाड़ियों की हो सकती है।

इन विज्ञान वादियों के विचारों को देखते हुये तो ढाई द्वीप से पच विदेह आदि क्षैत्रों में बीस तीर्थंकर भगवान व 2 करोड़ केवली भगवान आदि बताने वाले सिद्धान्तो पर शका होना उनके लिये स्वाभाविक है क्योंकि विज्ञान की वहां तक अभी पहुंच नही हुई है।

इसी तरह आगे नरक स्वर्ग आदि अनेक मान्यताओं पर भी उपाध्याय मुनिजी के विज्ञान द्वारा प्रहार होगा और धीरे-2 साधारण जनता नास्तिकवाद की ओर अग्रसर होगी क्योंकि वैसे तो आधुनिक शिक्षा प्रणाली पाश्चात्य पद्धति द्वारा प्रचलित है और साथ ही कविजी

म. के जैसे विचारों का योग मिलने से आस्तिकता नष्ट होकर मिथ्यात्व का पाप बढ़ता चला जायेगा।

अन्त में इन उपरोक्त तथ्यों को पर्दशित करते हुये कविजी म. से यही आशा रखता हूं कि भगवान महावीर के द्वारा बताये गये सिद्धान्तों का सत्य रुप में परुपित कर उपाध्याय पद की महत्ता बढ़ावे।

## सूक्तियां

समाधान – यही कुटुम्ब का सुख।
व्यवस्था – यही घर की शोभा।
सन्तुष्टि – यही घर की लक्ष्मी।
अतिथ्य – यही घर का वैभव।
धार्मिकता – यही घर का शृंगार।
विनय विवेक – यही विद्या का सार।

## मुक्तक

हर शूल में पीछे फूल छिपा है।
हर भूल में पीछे मूल छिपा है॥
शूल और भूल से क्यो घबराते हो।
हर प्रतिकूल के पीछे अनुकूल छिपा है॥

"जय गुरु नाना"

# जैन सिद्धान्तो में विज्ञान अधूरा है।

(स्व. श्री दुलहराजजी रांका, जयनगर)

अभी 15 जुलाई सन्    के जैन प्रकाश के मुख्य पृष्ठ पर उपध्याय श्री अमर मुनिजी का 'चिन्तन के झरोखे में' शीर्षक नामक लेख छपा था जिसे पढकर दुःख हुआ कि उपाध्याय पद पर आसीन होने हुये भी जैन धर्म के सिद्धान्तो को नष्ठ करने का विज्ञान की ओट में कुचक्र चला रहे है। इन्होंने तो विज्ञान को ही एकान्त सत्य और पूर्ण मान लिया है।

जिस लोक संस्थान भावना से शिवराज ऋषि का विभंग ज्ञान मिटकर विशुद्ध अवधि ज्ञान प्राप्त कर क्रमशः केवल ज्ञान प्राप्त किया था उसी लोक स्वरुप का कविजि म. विज्ञान के पर्यवेक्षण से उलझ कर उनका जैन सिद्धान्तों पर प्रहार करना कहां तक का न्याय है।

विज्ञान अभी अधूरा है किन्तु वीतराग परुपित सिद्धान्त त्रिकाल सत्य है। लेकिन फिर भी चन्द्रलोक पर और अन्य दूसरे ग्रहों पर पहुचने की जो वाते लिखी है वे कविजी म. के अनुकुल नही है क्योकि (जैन वैदिक) ग्रन्थों मे सूर्य से चन्द्रमा ऊपर है और चन्द्रमा स्फटिक रत्न मय विमान है। इस दृष्ठि से अनुमानतः वैज्ञानिको द्वारा प्राप्त की गई मिट्टी और कंकड़ वेताढ्य पर्वत की पहाड़ियों की हो सकती है।

इन विज्ञान वादियों के विचारों को देखते हुये तो ढाई द्वीप से पच विदेह आदि क्षेत्रों में वीस तीर्थंकर भगवान व 2 करोड़ केवली भगवान आदि वताने वाले सिद्धान्तो पर शका होना उनके लिये स्वाभाविक है क्योकि विज्ञान की वहां तक अभी पहुंच नही हुई है।

इसी तरह आगे नरक स्वर्ग आदि अनेक मान्यताओं पर भी उपाध्याय मुनिजी के विज्ञान द्वारा प्रहार होगा और धीरे-2 साधारण जनता नास्तिकवाद की ओर अग्रसर होगी क्योकि वैसे तो आधुनिक शिक्षा प्रणाली पाश्चात्य पद्धति द्वारा प्रचलित है और साथ ही कविजी

म. के जैसे विचारो का योग मिलने से आस्तिकता नष्ट होकर मिथ्यात्व का पाप बढता चला जायेगा ।

अन्त मे इन उपरोक्त तथ्यों को पर्दशित करते हुये कविजी म. से यही आशा रखता हू कि भगवान महावीर के द्वारा बताये गये सिद्धान्तों का सत्य रुप में परुपित कर उपाध्याय पद की महत्ता बढ़ावे ।

## सूक्तियां

समाधान – यही कुटुम्ब का सुख ।
व्यवस्था – यही घर की शोभा ।
सन्तुष्टि – यही घर की लक्ष्मी ।
आतिथ्य – यही घर का वैभव ।
धार्मिकता – यही घर का शृंगार ।
विनय विवेक – यही विद्या का सार ।

## मुक्तक

हर शूल में पीछे फूल छिपा है ।
हर भूल में पीछे मूल छिपा है ।।
शूल और भूल से क्यो घबराते हो ।
हर प्रतिकूल के पीछे अनुकूल छिपा है ।।

(ख) क्रोध, मान, माया, लोभ और मत्सर आदि कषायभाव से आत्मा को मलिन न होने देना, उसे इनके प्रतिपक्षी गुणों से सदा पवित्र रखना ।

(ग) इन्द्रियों और मन को वश करना एवं बहिरंग अर्थात् ससार-भाव मे लिप्त न होना ।

(घ) उत्तम क्षमा, निर्लोभता, सरलता, मृदुता, लाघवता, शौच, संयम, तप, त्याग, ज्ञान, ब्रह्मचर्यात्मक धर्म को धारण करना ।

(ङ) झूठ, चोरी, कुशील, मानवद्रोह, विश्वासघात, द्रोह, रिश्वत देना - लेना, दुर्व्यसन आदि निन्द्य कार्यों से ग्लानि करना अर्थात् उन्हें त्यागना ।

यह संसार स्वयं सिद्ध अर्थात् अनादि अनन्त है इसका कर्ता - हर्ता कोई नही है :

आत्मा Soul और परमात्मा God में केवल विभाव और स्वभाव का अन्तर है । जो आत्मा रागद्वेष रूप विभाव को छोड़ कर निजस्वभावरूप हो जाता है उसे ही परमात्मा कहते हैं ।

0 ऊँच-नीच, छूत-अछूत का विकार मनुष्य का निज का किया हुआ विकार है, वैसे मनुष्य मात्र में प्राकृतिक भेद कुछ भी नही है ।

# जैन धर्म के दस नियम

1 जगत में दो द्रव्य Substances मुख्य है, एक जीव Soul दूसरा अजीव Nonsoul । अजीव के पुद्गल Matter, धर्म Medium of Motion to Soul and Matter जीव और पुद्गल के चलने में सहकारी, अधर्म Medium of Rest to Soul and Matter जीव और पुदगल के ठहरने में सहकारी, काल Time वर्तना लक्षणवान् और आकाश Space स्थान देने वाला इस प्रकार 5 भेद है।

3 स्वभाव की अपेक्षा सब जीव समान और शुद्धस्वरुप है। परन्तु अनादि काल से कर्मरूप पुदगलों के सम्बन्ध से वे अशुद्ध है। जिस प्रकार सोना खान से मिट्टी में मिला हुआ अशुद्ध निकलता है।

3 उक्त कर्ममल के कारण इस जीव को नाना योनियों में अनेक संकट भोगने पड़ते है और उसी के नष्ट होने पर यह जीवअनन्त-ज्ञान-अनन्तदर्शन अनन्तसुख और अनन्तशक्ति आदि को जो कि इसकी निजी सम्पति है और जिसे मुक्ति कहते है प्राप्त करता है।

4 निराकुलता लक्षणयुक्त मोक्षसूख की प्राप्ति इस जीव के अपने निजी पुरुषार्थ के अधिकार में है किसी के पास मागने में नही मिलती।

5 पदार्थो के स्वरुप का यह सत्यश्रद्धान Right belief सत्यज्ञान Right Knowledge और सत्य आचरण Right Conduct ही यथार्थ में मोक्ष का साधन है।

6 वस्तुएं अनन्त धर्मात्मक है, स्याद्वाद ही उनके प्रत्येक धर्म का सत्यता से प्रतिपादन करता है।

7 सत्य-आचरण में निम्नलिखित बाते गर्भित हैं, यथा-

(क) जीव मात्र पर दया करना, कभी किसी को शरीर से कष्ट न देना, वचन से बुरा न कहना और मन से बुरा न विचारना।

(ख) क्रोध, मान, माया, लोभ और मत्सर आदि कषायभाव से आत्मा को मलिन न होने देना, उसे इनके प्रतिपक्षी गुणों से सदा पवित्र रखना।

(ग) इन्द्रियों और मन को वश करना एवं बहिरंग अर्थात् संसार-भाव में लिप्त न होना।

(घ) उत्तम क्षमा, निर्लोभता, सरलता, मृदुता, लाघवता, शौच, सयम, तप, त्याग, ज्ञान, ब्रह्मचर्यात्मक धर्म को धारण करना।

(ङ) झूठ, चोरी, कुशील, मानवद्रोह, विश्वासघात, द्रोह, रिश्वत देना - लेना, दुर्व्यसन आदि निन्द्य कार्यों से ग्लानि करना अर्थात् उन्हें त्यागना।

8 यह संसार स्वयं सिद्ध अर्थात् अनादि अनन्त है इसका कर्ता - हर्ता कोई नहीं है :

9 आत्मा Soul और परमात्मा God में केवल विभाव और स्वभाव का अन्तर है। जो आत्मा रागद्वेष रूप विभाव को छोड़ कर निजस्वभावरूप हो जाता है उसे ही परमात्मा कहते हैं।

10 ऊंच-नीच, छूत-अछूत का विकार मनुष्य का निज का किया हुआ विकार है, वैसे मनुष्य मात्र में प्राकृतिक भेद कुछ भी नहीं हैं।

# विज्ञान द्वारा स्वीकृत आगमिक सिद्धान्त

1 आगमों में कहा है कि शब्द ( Sound ) जड़ मूर्तिमान् और लोक के अन्त तक प्रवाहित होने वाला है, आज के विज्ञान ने भी ग्रामोफोन और रेडियो का आविष्कार करके यह सिद्ध कर दिया।

2 आचारांग सूत्र में वनस्पति में जीवों का अस्तित्व बताने के लिए निम्न लक्षण दिए है। 'जाइधम्ममं' उत्पन्न होने वाला है, 'बुड्ढिधम्यं' इसके शरीर मे वृद्धि होती है, 'चित्तमतय' चैतन्य है, 'छिन्न यिलाइ' काटने पर सूख जाता है, 'आहारग' आहार भी ग्रहण करता है, 'अणिच्चय' आसासयं' इसका शरीर भी अनित्य और अशाश्वत है, 'चओवचइय' इसके शरीर में भी घट बढ होती रहती है। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र वसु ने अपने परीक्षणों द्वारा उपरोक्त सब लक्षण सिद्ध किए है जिसे समस्त वैज्ञानिक लोग मान चुके है।

3 आगामी ने समस्त द्रव्यों को अनादि माना है। इसी बात को प्रसिद्ध प्राणीशास्त्रवेता J.B.S. हॉल्डन ने भी माना है, वे कहते है कि मेरे विचार में जगत् की कोई आदि नही है।

4 जैन धर्म किसी को कर्ता हर्ता नहीं मानता, इसे आज का विज्ञान भी स्वीकार करता है।

5 शब्द, ज्योति, ताप और आतप को आगम ने पुद्गल कहा है जिसे विज्ञान ने भी मैटर Matter के रुप मे मान लिया है और इसे भी स्वीकार किया है कि ये सब पुद्गल-द्रव्य के पर्याय-विशेष है।

6 प्रसिद्ध भूगर्भ-वैज्ञानिक फ्रांसिस अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक Ten years under earth मे लिखते है कि मैने पृथ्वी के ऐसे - ऐसे रूप देखे है जिनसे पृथ्वी में जीवत्व शक्ति प्रतीत होती है। अभी तक वे निश्चय पर नही पहुंचे सके, परन्तु आगमो ने तो स्पष्ट कहा है कि पृथ्वीकाय में जीव है।

7 स्थानांग सूत्र 5, 2, 5 में आता है कि स्त्री विना संभोग के भी शुक्र पुद्गल ग्रहण कर गर्भवती हो सकती है। आधुनिक विज्ञान-वेत्ताओं ने भी कृत्रिम गर्भाधान द्वारा इसे सिद्ध कर दिया है।

8 आगम पदार्थ की अनीश्वरता और आत्मा की अजर - अमरता वताते है, जिसे सुविख्यात वैज्ञानिक डाल्टन ( Dolton ) ने Low of conservation द्वारा सिद्ध कर दिखाया है। परन्तु आत्मा की तह तक विज्ञान अव तक नहीं पहुंच सका।

9 भगवान महावीर के गर्भस्थानान्तरण को कई लोग असम्भव मानते है जिसे प्राणीशास्त्रवेता डा. चांग ने बोस्टन विश्वविद्यालय जव रसायनशाला में गर्भस्थानान्तरण परीक्षणों द्वारा सिद्ध किया हे। अमेरिकन हिरनी के गर्भबीज को एक अग्रेजी हिरनी के गर्भाशय में स्थानान्तरित करने में उन्हे सफलता भी मिली है।

10 आगम कहते हैं कि द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा न कोई द्रव्य घटता है न बढता है जो रूपान्तर होता है वह उसका पर्याय है। वैज्ञानिक भी मानते है कि कोई पुद्गल ( Matter ) नष्ट नही होता, केवल दूसरे रूप (Form) में बदल जाता है। वे लोग इसे Prini-ple Conservation of Mass and Energy कहते है।

11 आगम मानते है कि पानी की एक बून्द मे असख्य जीव होते है। वैज्ञानिकों ने भी सूक्ष्मवीक्षण यन्त्र द्वारा पानी की एक बून्द में 36000 से भी अधिक जीव देखे है और यह भी मानते है कि बहुत से जीव ऐसे हैं जो सूक्ष्मवीक्षण यन्त्र द्वारा भी नही देखे जा सकते देखो हाई निकोल की मिक्रोप्स बाई द मिलियन पैनगिन द्वारा 1945 में प्रकाशित।

12 भगवान् महावीर ने पुद्गल की अपरिमेय शक्ति वताई है जिसे आज के विज्ञान ने 'एटमबम' 'अणुवम' ' उद्जनवम' आदि से सिद्ध कर दिखाया है।

13 जेनशास्त्रानुसार लोहे का सोने में परिवर्तन करना सम्भव है, जिसे विज्ञान ने भी स्वीकार किया है कि सोने के एक परमाणु में 79 प्रोट्रोन्स (Protrons) और लोहे के परमाणु मे 36 प्रोट्रोन्स होते हें, यदि दोनों की संख्या किसी प्रकार सम कर दी जाय तो वह सोने का परमाणु हो सकता है।

14 ध्यान और योगसम्बन्धी सिद्धान्त के लिए डा. ग्रे वाल्टर की The living brain नामक पुस्तक देखें।

15 प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टाइन का 'थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी' स्याद्वाद से बहुत सा साम्य रखता है।

16 विज्ञान ने जीव, पुदगल, आकाश (Space), काल (Time) और धर्मास्तिकायको भी 'ईथर' के रूप में माना है।

17 आगम कहते हैं कि परमाणु पुदगल कभी स्थिर और कभी चल रहता है। वैज्ञानिकों ने भी 'हाईड्रोजन' के एलेक्ट्रोन को बाहर और भीतर के वृत्त में अनिश्चित काल तक चल विचल होते देखा है।

18 आगमो में परमाणु अनन्त प्रकार के और अत्यन्त सूक्ष्म कहे है वैज्ञानिक अनन्तता तक तो नही पहुच सके फिर भी उन्होंने 14 प्राइमरी पारटीकलस् माने है और वे यह स्वीकार करते है कि Primary Partic es इतने सूक्ष्म है कि उनमे से कइयों को वे महाशक्तिशाली यन्त्रों द्वारा भी नहीं देख सके।

19 जीवों की उत्पत्ति स्थान मृत शरीर (अन्तरमुहूर्त के बाद) जीवित प्राणी का अग और पुद्गल भी हो स ता है ऐसा जैन शास्त्र मे मानते हैं। जिसे किसी अपेक्षा से चौथो हाइपोथिसिस (*Hypo*thess IV) द्वारा वज्ञानिकों ने भा स्वीकार किया है।

20 शास्त्रों में वर्णित अवगाहना आदि को कई लोग असम्भव मानते हैं, उन्हे 10 जनवरी 1945 के सण्डे स्टेण्डर्ड में रेडिएशन के बारे में फ्रेंक चेलेजर द्वारा लिखित लेख देखना चाहिए। रेडिएशन से प्रतिवर्ष सवा इच के हिसाब से उचाई में वृद्धि बताई है। यदि अवसर्पिणी के छठे आरे का मनुष्य उत्सर्पिणी के सुषमा काल तक जिसका अन्तर 10 कोडा-कोडी सागरोपम होता है तीन गाऊ की अवगाहना वाला हो तो कोई आश्चर्य नहीं। आगम मानते है कि मनुष्य के संस्थान, सहनन, आयुष्य, अवगाहना, भूमि के वर्ण, गंध, रस, स्पर्श आदि में अवसर्पिणी काल में ह्रास और

उत्सर्पिणी काल में क्रमशः वृद्धि होती है। इसके लिए मार्टिनिज द्वारा लिखित 'विचित्र' रेडिएशन एवं उनका आश्चर्यकारक प्रभाव, नामक लेख देखें।

नोट-ऐसे अनेक तथ्य है जिनका विज्ञान ने स्वीकार किया है और कई तथ्यों तक तो वह अभी पहुंच भी नहीं सका है। सच है कहां जड़-वादी विज्ञान और कहा अध्यात्मवादी आगम ! दोनों में जमीन आसमान का अन्तर है।

संग्रहकर्ता
**सम्पतलाल चोपड़ एम. एस.**
(उधना) सूरत

## प्रतिज्ञाएं . . .

1 मै एक प्रामाणिक जैन हूं।
2 वीतराग वाणी पर मेरी दृढ़ श्रद्धा है।
3 अरिहन्तोपासक सन्त सतीजी की सादर सेवा भक्ति करू।
4 दैनिक प्रार्थना प्रवचन में उपस्थित होऊंगा।
5 शांत एव उत्साही वातावरण निर्मित करुंगा।
6 सभी जीवों को धर्म प्रेमी बनाऊंगा।

॥ श्री महावीराय नमः ॥

# समता युवा संघ

## जयनगर (शम्भूगढ़) ३०५०११ [राज.]

## --विनम्र निवेदन--

प्रिय भाईयों, माताओं एव बहिनों,

ससार के प्रत्येक धर्म मे त्याग की महिमा बताई गई है। जैन धर्म के अनुसार ससार में 24 लाख वनस्पति है, इसमे 14 लाख साधारण वनस्पति (जमीकन्द-अनन्ता जीव) एवं 10 लाख प्रत्येक वनस्पति (एक जीव वाले) है। हमारे जीवन में मुश्किल से 100 वनस्पति का उपयोग भी नही हो पाता है। जिन - 2 वनस्पति का त्याग किया जाता है वे अपनी ओर से निर्भय हो जाती है।

अत. जब तक त्याग नहीं करेगे हम पाप के अवश्य भागी बन रहे है, त्याग के अभाव में बिना जल जैसे मछली तड़फती है वैसे ही सभी वनस्पति कम्पायमान रहती है। अतः निम्नांकित साग-सब्जी, फल-फूल आवश्यकतानुसार रखकर अन्य का त्याग (पच्चक्खान) करे।

नोटः-जो वनस्पति रखनी हो उसके सही √ का चिन्ह और शेष को क्रास × कर देवे। यदि जमीकद की इच्छा हो तो उसका नाम खाली स्थान पर लिख लेवे।

### —हरी साग के नाम—

1 ककड़ी
2 करेला
3 भिन्डी
4 तोरई
5 चवले की फली
6 गवार की फली
7 मूंग की फली
8 मटर की फली
9 हरे चने
10 लौकी (आल, लाऊ, घिया)
11 खरबूजा
12 काचरा
13 काचरी
14 तरबूज (कलिदा, मतीरा)
15 घिया तोरई
16 मोगरी

17 टीडसी
18 टिंडोरा
19 करौंदा
20 खीरा
21 परवल
22 भुट्टा (मकई)
23 हरी मिर्च
24 आंवला
25 लिसोड़ा (बड़गुन्दा)
26 दक्खिनी वटरा की
27 सरगवा की सीग (फली)
28 हरी जुवार
29 हरा बाजरा
30 सागरी, खोखा
31 कैर
32 टमाटर
33 पपीता (एरण्ड ककड़ी)
34 गांठ गोभी (पत्तोवा
35 मेथी
36 पालक
37 वथुआ
38 चन्दरोई
39 धनिया
40 सुवा
41 सरसों के पत्ते
42 मूली के पत्ते
43 पोदीना
44 परवल के पत्ते
45 मीठे नीम के पत्ते
46 अजवाईन के पत्ते
47 तुलसी के पत्ते
48 नागर बेल के पान
49 अफीम के डोडे
50 कींकोड़ा ककरेला
51 तरककड़ी
52
53
54
55

## —फूलों के नाम—

1 गुलाब
2 मोगरा
3 चमेली
4 चम्पा
5 केवड़ा
6 वेला
7 गैन्दा
8 मोरसिरी
9 जूही
10 मरुवा
11 कनेर
12 रात की रानी
13
14
15
16
17

## —हरे फलों के नाम—

| | |
|---|---|
| 1 आम (सभी प्रकार के | 2 खरबूजा |
| 3 मीठा नीबू (मौसमी) | 4 केला |
| 5 अमरुद | 6 नारंगी |
| 7 सेव | 8 अनार |
| 9 अंगूर | 10 सीताफल |
| 11 चिकोतरा | 12 नासपती |
| 13 नारियल कच्चा | 14 अन्नारस (अन्नानास) |
| 15 कमरख | 16 ईख (साठा) |
| 17 पपीता | 18 बेर (बोर) |
| 19 फालसा | 20 खिरनी (रायण) |
| 21 गोदा (गुन्दी) | 22 सफरजन्द (सेव) |
| 23 जामुन काला | 24 जामुन सफेद |
| 25 गुलाव जामुन | 26 कमलगट्टा |
| 27 सिघाडे | 28 नीबू छोटे |
| 29 हाडी (कच्ची खुरसानी) | 30 हरी बादाम |
| 31 आडू | 32 अमरुद |
| 33 सहतूत | 34 हरी खारक (खजूर) |
| 35 हरी सौपारी | 36 हरी इमली |
| 37 हरी सौंप | 38 टीबरू |
| 39 कसेरल | 40 सफेदा |
| 41 पीलू | 42 |
| 43 | 44 |
| 45 | 46 |
| 47 | 48 |

संकलनकर्त्ता :

**छाऊदेवी रांका (जयनगर)**

# संवत्सरी सर्व सम्मत हो

## ( आचार्य श्री नानालालजी म. सा. )

तीर्थंकर दवों की, वाणी का जो स्वरुप प्रगट हुआ उसमें पर्व-तिथीयों सम्बन्धी दिग्दर्शन भी उपलब्ध है श्वेताम्बर जैन समाज ने ग्यारह अंग सूत्रों (शास्त्रों) को प्रभु की मौलिक धर्म देशना स्वीकार की है। यह अग सूत्र श्वेताम्बर जैन समाज की अनमोल धरोहर है। इस धरोहर का चतुर्थ अग समवायांग सूत्र है जिससे श्रमण भगवान महावीर के द्वारा चातुर्मासिक पाखी पर्व से 1 माह 20 दिन बीतने के पश्चात सवत्सरी पर्व आराधना का भव्य प्रसग उपस्थित किया गया। इसमें श्रावण भादवा आदि किसी माह का तथा चतुर्थी पचमी आदि किसी तिथी का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता।

सवत्सरी पर्व आत्मशुद्धी का पर्व है। इसलिए लौकीक पर्वो की अपेक्षा इसकी अनिर्वचनीय गरीमा । किन्तु इस आत्म शुद्धी के पर्व को सारी जैन समाज एक साथ मिल जुलकर नही मना सके यह समाज के लिए गम्भीरतापूर्वक विचारणीय प्रश्न है।

कर्तव्यबोध भारत जैन महा मण्डल के कार्यकर्ता एवं जैन एकता समन्वय समिती का शिष्टमण्डल जो की सवत्सरी पर्व एकता के उद्देश्य को लेकर उपस्थित हुआ। उसने अपना ब्योरा मेरे सामने व्याख्यान के पूर्व एवं व्याख्यान में प्रस्तुत किया। सवत्सरी एकता के सभी इच्छुक है। इसमें मुझे जो कुछ सशोधन देना था वह मैं व्याख्यान के पूर्व भी व्यक्त कर चुका हूं।

अनादि काल से भादवा सुदी पचमी को ही यह पर्व मनाया जा रहा है यह बात शास्त्र के नाम से यदि कही जाती है तो मैं इसमे सहमत नही हूं। प्रारूप में उल्लेखीत अन्य कई बातें भी विचारणीय है किन्तु अभी उसकी चर्चा मै इसलिए नही कर रहा हूं कि प्रारूप के भावो की अपेक्षा संवत्सरी एकता का उद्देश्य महत्वपूर्ण है। अभी तर्क वितर्क में उलझने की अपेक्षा अक्ष्यगत प्रगती आवश्यक समझ रहा हूं। वैसे मैं इस विषय में श्रमण भगवान महावीर प्रभु की 2500 वी

निर्वाण शताब्दी के प्रसंग से अपने भाव अभिव्यक्त कर चुका हूं।

निर्वाण शताब्दी के प्रसंग पर श्री सम्पतलालजी गादिया ने पूछा थ। कि इस प्रसग पर आपका क्या कार्यक्रम है। तब मैंने उसे कहा था कि 'हम तो सन्त हैं, सन्त तो प्रभु महावीर के शासन में सदा के लिए समर्पित है। इसलिए नया कोई कायक्रम नही है। तब उन्होंने कहा हमारे लिए क्या कुछ मार्गदर्शन है। तब मैंने उनके समक्ष कहा की यदि आप लोग सवत्सरी एकता की दिशा में कुछ प्रयास करे और वह समग्र जंन समाज की एक दिन हो सके तो यह सबसे बड़ी उपलब्धी होगी। तब से में भी इस दिशा मे निरन्तर प्रयत्नशील रहा और जब भोपालगढ़ में आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. से मिलन का प्रसग आया तब साध्वाचार संहिता आदि विषयों पर गम्भीर विचार विमर्श भी हुआ। उसी मिलन के अवसर पर सवत्सरी एकता के विषय मे चिन्तन किया। इस विषय में निष्कर्ष रूप देनो की सयुक्त अभिव्यक्ति समाज के सामने प्रस्तुत हो चुकी है। समग्र जैन समाज की अथवा श्वेताम्बर जैन समाज को या स्थानकवासी जेन समाज को सावत्सरिक एकता बनने का अवसर आये तो हमारी पूर्ण तैयारी है।

बहुमत नहीं सर्व सम्मत मैं चाहता हूं की जैन समाज का बच्चा-बच्चा इस एकता से वचित न रहे। इस विषय में लौकीक राजनीती कूट नीती का प्रवेश न हो। जहां लौकीक नोतियों का प्रवेश हो जाता है वहां बहुमत आदि प्रकार से कार्य हुआ करते है क्योंकि उसमें अन्य कई प्रकार के प्रयोजन रहा करते है। उसमें बहुमत से भी कार्य चल सकता है। किन्तु आध्यात्मिक एकता मे अन्त:करण की शुद्धी अनिवार्य है यह एकता अन्त करण की शुद्धीपूर्वक सर्व संमती से होनी चाहिए। इस विषय में समीगीण चिन्तन होना अपेक्षित है ऐसे कार्यों में विलम्ब भले ही हो किन्तु कार्य स्थायित्व की भूमिका पर है, सर्व समती से हो क्योंकि समग्र स्था. जैन समाज की एकता के लिए पूव में भाउसाहेब श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया चिमनभाई चकुभाई शाह आदि ने अनेक प्रयत्न किये। साथ ही मूर्धन्य श्रमण वर्ग का भी प्रयत्न रहा। उनके सद्प्रयास से श्री वर्धमान स्था. जैन श्रमण सघ स्थापना हुई। एक आचार्य के नेतृत्व में शिक्षा दीक्षा चातुर्मास विहार प्रायश्चित के दुरगामी उद्देश्यपूर्वक सिध्दंत निर्माण हुए आचार संहिता आदि कार्यों

में प्राय सर्वानुमती की स्थिति रही। बाद में कुछ ऐसी स्थितियां बनी जिनसे मतभेद उत्पन हुए सोचा गया था की ये बाते छोटी छोटी नगण्य है भविष्य में उन्हे ठीक कर लगे। उसका परिणाम रहा यह जनता के सामने है। एक छोटासा छिद्र भी नौका को डूबो सकता है।

प्रबुद्ध जीवी कार्यकर्ताओं को सोचना चाहिए की जहां लौकिक विधिविधानो में भी बहुमत होने के बावजूद भी अल्पमत का सक्रामक रोग किस कदर पीछे पीछे फलता है उसके क्या कुछ मनो वैज्ञानिक परिणाम होते है ? यह आपसे छिपा हुआ नही है। इसी तरह यदि आध्यात्मिक क्षेत्र में अल्पमत की भी उपेक्षा की गई, अनदेखा किया गया तो बहुमत के प्रयास भी प्रश्नवाचक चिन्ह बने बिना नही रहेंगे। क्या उससे सावत्सारिक सफलता सदिग्ध नही होगी ? मनोवैज्ञानिक दृष्टी से अल्पमत का क्या कुछ चिन्तन या प्रयास हो सकता है यह भी विचारणीय है। क्या ऐसा करने से सार्वजनिक छुट्टी खतरे मे नही पड़ेगी ? विज्ञजन गम्भीरता से सोचे।

जब मै इस विषय को लेकर आध्यात्मिक चिन्तन करता हू तो मुझे लगता है कि ये बहुमत की बाते राजनीती में होती हैं जिन्हें समस्या का बुनियादी हल नही कहा जा सकता है। इस प्रकार के निर्णयों का क्या कुछ परिणाम निकलता है इसका आप आये दिन अनुभव कर हा रहे है।

## आदर्शों का यथार्थ दृष्टिकोण

मैं अपने यथार्थवादी सही दृष्टीकोन को प्रस्तुत करने का सदा से आदि रहा हूं जिसे कटु सत्य भी कहा जा सकता है। कोई कुछ भी कहे मुझे अपनी आत्म साक्षी से ही चलना पसद है। मै जितना कहता हूं उससे भी अधिक करने पर विश्वास रखता हूं। 'कहना कम, करना अधिक' इस पर मेरा गहरा विश्वास है इस संवत्सरी पर्व के प्रसंग को लेकर जो आत्मजागरण हुआ है वह तात्कालीन भावावेश नही होना चाहिए। इसके मूल में रही हुई सभी स्थितियां पूर्णतया परिमार्जित हो जानी चाहिए। यदि कुछ बाकी रह गयी तो उसे अल्पमत बहुमत का सघर्ष रूप सक्रामक रोग जीर्ण शीर्ण कर देगा अथवा यों कहू की संशोधित चित्तवृत्तीयां पर गम्भीर आघात होगा। सारी स्थिती घपले गडबड़ में पड़ जायेगी। आप जानते है की कैंसर टी. बी. आदी प्रकार के

संक्रामक रोगों के मूल को प्रथम चिकित्सा के समय ही डॉक्टर मूल से नष्ट करने का प्रयत्न करते है। उसके बिना छुट्टी देना नही चाहता। साथ ही डाक्टर यह भी चाहता है कि लिखा गया सारा कोर्स रोगी दवाईयां आदि के रूप ग्रहण करे, यदि रोगी दी जा रही औषधी आदि को लेने में कृपणता करे, डाक्टर के निर्देश से कम दवा ले तो डाक्टर इसे पसंद नही करते है। वह कहते हे की ऐसा करने से रोग पुन. घेर लेगा। इसी प्रकार सावत्सारीक एकता का निदान थोड़े से अपूर्ण प्रयास पर कर लिया तो सम्भव है यह राग पुन: उभर जाय। अस्त रोग निवारण की प्रक्रिया मूलत: होनी चाहिये। गुजरात आदि सभी प्रदेशों की जैन सम्प्रदायों को इस एकता में समिलित किया जाना चाहिये। ताकि यह मतभेद का रोग पुन: पुन: नही घेरे।

यह संवत्सरा पर्व अनेकता विभद संक्रामक रोग से मुक्त होने का पवित्र पर्व है। इसकी आराधना में जैन समाज का बच्चा बच्चा शामिल है।

बच्चे बच्चे को क्षमायाचना का अवसर मिले, समस्त वैर विरोध शांत हो यह इस पर्व को मनाने का मुख्य ध्येय है यदि एक बच्चा भी हमारे कार्य व्यवहार से तनाव ग्रस्त है और उसे क्षमायाचना का एक ही दिन अवसर नही दिया गया तो समझे की सांवत्सारीक एकता का उद्देशपूर्ण नही हुआ। उस अपूर्णता को दूर करने के लिये प्रयास करना है।

सन्त जीवन 'वसुधैव कुटुम्बकम' की पुनीत भावना को लेकर चलता है मैं भी उसी भावना को लेकर चल रहा हूं।

मैने अपने विचार स्पष्ट रूप से विस्तार के साथ प्रस्तुत कर दिये हैं। इसमें कोई सुज्ञान संशोधन है तो मै उस पर भी चिन्तन करने को तत्पर हूं।

संकलनकर्ता :
**प्रो. प्रेमसिंह बुरड़**
M.A. B A B.ED.
कालियास (भीलवाड़ा)

# दहेज समाज के लिए अभिशाप

( अमरचन्द दुगड़, जयनगर )

खिला नही सकते अधरों पर मुस्कानों को,
दर्द पुराना याद दिला कर तो न रुलाते।

जिला नहीं सकते माना चसक सुधा का,
अधरों से जलछीन, गरल में तो न डुबोते।।

दहेज रूपी राक्षस की विभीपिका स्मरण करते ही कवि की उपर्युक्त पंक्तिया सहज ही स्मृति पट पर उभर आती हे। आज दहेज के नाम पर कन्याओ का पशुओं की तरह विक्रय होता है। कितनी ललनाओ का जीवन इस दहेज की वलिवेदी पर स्वाहा हो जाती है। इसी कुप्रथा के कारण विवाह के अवसर पर उपयोग मे आने वाला यज्ञ कुण्ड अग्नि कुण्ड मे परिवर्तित हो जाता है। न जाने कितनी सुशील ओर मेघावी कन्याओं का जीवन इस कुप्रथा की वेदी पर आज तक वलि चढ चुका है।

दहेज जिसका मतलव है द+हेज यानि प्रेम-पूर्वक उपहार देना। पिता स्वेच्छा व प्रेम-पूर्वक अपनी पुत्री को जो कुछ देता है, वह वास्तविक दहेज है। लेकिन खेद के साथ कहना पड़ता है कि विगत कई दशको से यह दहेज प्रथा विकृत हो चुकी है। इसलिए दहेज प्रथा आज का एक ज्वलन्त प्रश्न है, एक जहू से सना-निशान है। वर का पिता आज किसी जागीरदार से कम नहीं है, लड़का उसकी जागीर है, वह उसे नीलाम करना चाहता है। वह यह नही देखता है कि लड़के का भविष्य क्या होगा? उसका विश्वास केवल दौलत मे है। उसे दहेज के माध्यम से धन चाहिए, अनन्त सम्पति चाहिए, चाहे उसका परिणाम कुछ भी क्यों न हो? इसी दहेज की कुप्रथा के कारण अनेक दम्पति नरक तुल्य जीवन व्यतीत कर रहे है। हम आये दिन समाचार पत्रों में पढते है कि यथेस्ट दहेज न मिलने के कारण कुल-वधुओं की हत्याऐ व आत्म हत्याऐ हो जाती है। मुझे आश्चर्य होता है यह सब देखकर कि उसी नारी की हत्या कर दी जाती है जिसके लिए राष्ट्र कवि कहते है–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग-पग-तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल मे ।।

नारी के चेहरे पर दमन दोहन के निशान है। विगत शताब्दियों से भी उसके साथ उचित व्यवहार नहीं किया गया है। उसकी दुर्बलताओं का भरपूर शोषण हुआ है। उसे घर की चार दीवारी मे बन्द रखा गया है। उसकी सेवाओं का पुरस्कार उसे क्रूरताओ के रूप में मिला है। इसलिए आज उसके दिल में बगावत है, उसे बार-बार ऐसा लगता है कि जैसे किसी घर में कन्या का जन्म नही वरन विधाता की शोक-कथा अवतरित हुई हो। दुनिया की कोई बेटी यह नही चाहती है कि उसके विवाह के कारण उसके पिता की आर्थिक रीढ़ टूट जाय वह दर-दर का भिखारी बन जाये। यह असम्भव है उस पुत्री के लिए जिसकी हर सास उसके माता-पिता को समर्पित है।

मुझे तरस आता है समाज के उन ठेकेदारों पर जो एक तरफ तो धार्मिक जीवन का प्रदर्शन करते है और दूसरी ओर यथेष्ट दहेज न मिलने के कारण अपनी कुल-वधु की हत्या तक कर डालते है। ऐसे व्यक्ति मनुष्य के रूप में किसी राक्षस से कम नही है।

अब हमें इस बात का चिन्तन करना है कि इस दहेज का मूलभूत कारण क्या है? जब तक उसका निदान नही किया जायेगा, समाज का यह कलंक समाप्त होने वाला नही है। कहा जाता है कि जब तक चोर की मां जिन्दा है तब तक चोर को फांसी दी जाती रहे तो भी कोई अन्तर नही आयेगा, क्योंकि नये चोर पैदा होते रहेंगे। इसका मूलभूत कारण है, मनुष्यों का धन सग्रह के प्रति बढ़ता आकर्षण भौतिक सुखों में आशक्ति। दहेज उन्मूलन के लिए हमें समाज में सशक्त वातावरण तैयार करना होगा व नैतिक मूल्यों पुन स्थापना करनी होगी। आवश्यकता इस बात की है कि नवयुवक व नवयुतियां इस बात का संकल्प करे कि जहां दहेज के नाम पर ठहराव होगा वहां हम शादी नहीं करेंगे, तभी हम समाज को दहेज की विभीषिका के क्रूर पंजों से मुक्त कर सकेंगे।

# भ्रम दूरी से ही नहीं विषमता से भी है

**( प्रवचनकार समताविभूति आचार्य श्री नानालालजी म. )**

प्रसग चल रहा है प्रभु महावीर के सिद्धान्तों को हृदयंगम करने का। भगवान ने स्पष्ट कहा है–

**जे अज्झत्यं जाणइ से बहिया जाणइ।**
**जे बहिया जाणइ से अज्झात्थं जाणइ ।।**

–आचारांग

जो अन्तर को जान लेता है वह वाहर को भी जान लेता है और जो वाहर को जान लेता है। जिसने अन्तर के स्वरुप को जान लिया अन्तर की गहराई में अवगाहन कर लिया है, उसने बाहर को भी जान लिया है, जिसने बाहर को समता भाव से जान लिया तो वह अन्तर में प्रवेश कर गया।

जानने का सूत्र एक है 'सम्यग्-सूत्र' वह सूत्र समता के धरातल पर है। उसका हम चिन्तन करे तो न किसी प्रकार का भ्रम न क्लेश न शका आदि किसी का कोई स्थान नहीं रह सकता। धर्म क्लेश का कारण नही शान्ति का हेतु है। सम्यग् - सूत्र समता की भूमिका पर टिकता है। समता की भूमिका पर प्रत्येक वस्तु का चिन्तन करे तो किसी प्रकार की भ्रांति नही रह सकती। धर्म का सही स्वरूप जब तक जीवन में प्रवेश नही कर पाता तब तक सारा काम वाहरी ही होता है। धर्म का कार्य सिर्फ वाहरी ही नहीं उसका सम्बन्ध अन्तर्जीवन के साथ भी है।

आज प्रत्येक भाई-वहिन को तटस्थ भाव से चिन्तन करना है कि हमारी जीवन की स्थिति कैसी और किस प्रकार की है? समता के धरातल पर अन्तःकरण पूर्वक चिन्तन किया जाय तो किसी भी स्थिति में किसी भी प्रकार की कोई अशान्ति नही रह सकती।

आज जैन धर्म की दृष्टि से–प्रभु महावीर के सिद्धान्तों की दृष्टि

से श्रावक एवं श्राविका अपने आपका चिन्तन करें कभी-कभी कुछ लोग अपने विचारों में भ्रम के कारण एक-दूसरे के प्रति कुछ गलत कल्पनाए कर बैठते है। सुज्ञजनों का कर्तव्य है कि जो बात जिससे सम्बन्धित हो उसी से खुले एवं एवं स्पष्ट दिल से बात कर उसका यथायोग्य समाधान पाकर अपनी भ्रांति को दूर करें।

वीतराग देव का मार्ग ऐसा ही है जिसमें हम मानव - समाज को एक सूत्र में पिरो सकते हैं। आज की स्थिति बड़ी विचित्र है। समस्त मानवता तो क्या जैन समाज भी एक रूप होकर नही चल पा रहा है। जैन समाज तो क्या, नजदीक से देखने पर भाई - भाई भी एक-दूसरे से दूर है। अच्छा हो, न मेरी बात मानी जाय, न दूसरो की, वीतराग देव की वाणी मानी जाय। मूल पाठ के आधार पर ही बात मानी जाय। उसमें भी जो सर्वमान्य है उसके अनुसार चतुर्विध सघ की स्थिति हो तो मूल महाव्रतों की सुरक्षा का भव्य प्रसग उपस्थित हो सकता है।

सादड़ी सम्मेलन में आचार सहिता नियत की गई थी, लेकिन कर्मो का उदय या दुर्भाग्य की स्थिति समझिये उसके अनुरूप सर्वत्र क्रियान्विति न हो पायी, समता के एक धरातल का निर्माण होने पर नहीं चल पाए।

तथाकथित अपहृत साध्वी का प्रसंग हुआ। कर्मो की स्थिति समझिये या और भी कुछ ? कैसे बना ? क्या बना ? कितनी भ्रांतियां पैदा हुई ? किसी की सुनी हुई बात पर विश्वास न करे। खुले दिल से समाधान करे। सुज्ञ पुरुष सम्बन्धित व्यक्ति से सम्पर्क साधकर समाधान करे। इससे भ्रम मिट कर धर्म आ सकता है।

मै संवत्सरी के विषय में भी दूर रहने वाला नही। प्रत्येक स्तर पर एकता के पक्ष मे हूं। यदि समस्त जैन समाज की एकता बनती है तो मै भी दूर रहने वाला नहीं। स्थानकवासी समाज मे तो एकरूपता होनी ही चाहिये। इसके लिए सिद्धान्त के एक धरातल पर चिन्तन किया जाय।

इस विषय में भी अनेक भ्रांतियां चल रही हैं। विचरण की स्थिति से इस प्रकार का अनुभव होता है। मै तो अपनी यथास्थिति में ही रहता हूं।

मैं जलगांव गया, लोगों के मन मे अनेक प्रकार की भ्रांतियां चल रही थी। महाराज ऐसा कर देगे, वैसा कर देगे, लेकिन चातुर्मास समाप्ति के वाद अध्यक्ष मन्त्री आदि ने कहा कि "हमने जो आप के विषय में सुना था वैसा कुछ नही देखा। जो भ्रांतियां हमारे मन और मस्तिष्क में पैदा हो गयी थी वे निकल गई है। वीतराग वाणी के धरातल पर सम्यग्-सूत्र का चिन्तन करे, प्रभु महावीर के नाते, धर्म के नाते हम सब भाई है। प्रत्यक्ष के प्रसग से भ्रांति निवारण करे।

श्री विजय मुनिजी से मिलने का प्रसग आया। सुदामा नगर में नही मिल सके। आज मिलने का प्रसग आया। ये मेरे भ्राता के समान ही है। मै तो नीचे ही वैठना पसन्द करता हू, लेकिन भ्रातागण नहीं मानते, वे भी अपना कर्तव्य पूर्ण करते है। आत्मा एवं धर्म की दृष्टि से सभी भाई है। सुज्ञ श्रावको के सौहार्दपूर्ण वातावरण से सब ठीक हो सकता है। हर विषय की भ्रांति मिट सकती है।

एक महात्मा विहार करके आ रहे थे। लोग लेने के लिये गये। हात्मा कुछ लेट हो गये। उसी रास्ते से एक पटेल आ रहा था।

भाइयो ने पूछा–'तुमने महात्मा को रास्ते में कही देखा है ?

पटेल ने कहा–'हां महात्मा जी नदी में पानी पी रहे थे।'

सभी के मन में उथल-पुथल मच गई। महात्मा नदी का पानी कैसे ी सकते है ? महात्मा के आने पर सुज्ञ श्रावक ने तथ्य निकालना ाहा। पटेल को बुलाया भ्राति का निवारण किया नदी में एक बून्द ी पानी नही था, नदी में वैठकर वे अपने लकड़ी के पात्र में से पानी ी रहे थे।

चाहे वह कटु सत्य भी क्यों न हो, उसे स्पष्ट कर ही लेना चाहिये। जो वात है जो उसका यथातथ्य है उसका स्पष्टीकरण कर लेना चाहिये।

वाहर जाकर जो बात करते है चाहे वे श्रावक-श्राविका या ...गण की ही वह ठीक नही करते, इससे क्लेश वढ़ता है। इनसे ...राग शासन की अवहेलना होती है। मैं चाहता हूं प्रभु महावीर के

सन्देश को आचरण के रूप में ले। एकता में या प्रगति में जो सर्वमान्य वस्तु है वह सभी मुझे स्वीकार है। आप सब भी स्वीकार करके चले। कुछ बात यदि स्वीकार न हो सके तो आमने-सामने चिन्तन किया जा सकता है। समता भाव के साथ निरीक्षण एवं परीक्षण करें, चिन्तन करें एवं मनन करें। मेरे से सम्बन्धित जो बात हो वह मुझ से पूछे, बैठकर बात करें, कोई भी योग्य संशोधन दे, सुझाव दे, वह यदि सिद्धान्त सम्मत है तो वह मैं मानने को तैयार हूं। बस वीतराग देव की वाणी का आग्रह है।

हम विराट जैन सिद्धान्त को समाज में प्रसारित करे। हम अपनी मर्यादा में रहे और आप अपनी मर्यादा में रहे। साधु-जीवन की परिधि अलग है, गृहस्थ-जीवन की मर्यादा में रह कर धर्म का प्रचार - प्रसार करे तो श्री वीतराग शासन का भविष्य समुज्ज्वल बनेगा तथा हमारे महाव्रती जीवन की प्रभाविकता भी सिद्ध होगी।

मै चाहता हूं क्षैत्रीय दूरी के साथ बीच की ऊबड़-खाबड़ भूमि की विषमता भी दूर हो। जो कुछ भी सोचना है वह विषमता की धरती पर खड़े रहकर न सोचे। समता के सन्तुलित सम्यक धरातल पर ही भ्रमपूर्ण परिस्थितियो का सही निराकरण व समाधान हो सकता है। साथ ही उससे लक्ष्यगत प्रगति भी साधी जा सकती है। आप और हम सब मिलकर सही दिशा में प्रयत्नशील हो और वीतराग देव के शासन की प्रभावना करेगे और मगलप्रद अवस्था के साथ आगे बढे तो भ्रम की दीवारे टूट जायेगी और समता के धरातल का निर्माण हो जायेगा। एक दूसरे को देखने या मिलने से पूर्व शुद्ध समता - परक धरातल का निर्माण करने का प्रयास करे।

Shantilal Ranka

संकलनकर्ता :

**शांतिलाल रांका** (B A)

जयनगर

# अहिंसा या हाइड्रोजन बम : दो ही विकल्प

ढाई हजार से भी ज्यादा वर्ष पहले एक राजकुमार ने जन्म लिया जिसे महावीर के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। महावीरता के लिए उसने क्या किया था? कितनी बड़ी सेना थी? कितना फैला राज्य था? क्या अस्त्र-शस्त्र थे? नहीं इस तरह का कुछ भी परिकर उसके पास न था। जन्म से राज पाया, विवाह से परिवार बना, लेकिन यह सब उसने त्याग दिया। त्याग के मार्ग पर सर्वथा निर्वस्त्र और अकिंचन अपने को बना लिया। वृत्ति भिक्षा की थी और अधिकांश तो अपनी तपस्या में वह निराहार रहा। इस सब पुरुषार्थ के लिए हमें उस पुरुष को इस अर्थ में 'महावीर' कहना पड़ता है कि कायोत्सर्ग की इस साधना में उसके समतुल्य कोई दूसरा ठहरेगा नहीं। उसने जीता तो अपने को जीता। अपने साथ का यह युद्ध अत्यन्त विकट है। उसमें से कैवल्य की सिद्धि होती है। अर्थात जो मिलावट है, सब छंट-कट जाती है। शेष रहता है केवल शुद्ध आत्मचैतन्य। इस उपलब्धि को मोक्ष कहना होता है।

**जीवन-मरण का चक्र :-**

इस तीर्थ-पुरुष ने संसार में प्रवेश तो किया, पर पाया कि सामने यहां से वहां तक शून्य में लिखा एक प्रश्न है। प्रश्न कि यह सब क्या है? जीवन और मरण का चक्र क्यों है? आदमी आता है और चला जाता है, जो है मरणशील है—काल की इस अनादि-अनन्त प्रक्रिया में वह क्या है जो सत् है और शाश्वत् है?

इस प्रश्न ने उस राजपुत्र को इतना विकल कर दिया कि सब उसके निस्सार हो गया। इसका उत्तर पाने के लिए निकल पड़ा वह—वह सब छोड़कर जो बन्धन रचता है जो रोकता है और सीमा बांधता है जो व्यवधान बनता है जीवन की मुक्तता में हमें सत्य से दूर और प्रमाद में प्रवृत्त रखता है।

और घोर तपश्चरण एवं गहन आत्ममन्थन में से उसने प्राप्त किया है कि समस्त सृष्टि के चक्र को थामने वाला तत्व है–प्रेम। प्रेम जिसमें कामना नहीं, अहिंसा है। उसमें उत्तरोत्तर विकासवान् परस्परता उपलब्ध होती है। इस परस्पर्य की परम सिद्धि है। कैवल्य में, अखण्ड अद्वैत में। जीवन में खण्ड नही है, और हमारे साथ लगा अहंकार ही है, जिसे परास्त और क्षय करना है। अत: जीवन शुद्ध है और वह अपने साथ लगे असत् के साथ है। अन्यथा जीवन मात्र प्रेम है। प्रेम अखिल के प्रति सक्षेप में, जीवन है अखण्ड सद्भाव।

महावीर तो अन्तिम, चौवीसवे तीर्थंकर थे। किन्तु इस सार्वभौम अहिंसा तत्व का आविष्कार हो गया था हजारों वर्ष पहले इस भारतवर्ष में, जब मानव की सभ्यता अपने आरम्भिक में ही थी।

आज वह सभ्यता अपने चरम पर है। इस विकास में कुछ एक शताब्दी पहले मनुष्य की मेधा ने विज्ञान का आविष्कार किया, और आज उसकी उपलब्धियों का पार नहीं है। मनुष्य पर से उसने सीमा उठा दी है। उसके धरती से बंधा प्राणी नहीं है, उसके यान ग्रहों पर और नक्षत्रों के निकट पहुंच रहे है। विज्ञान के बल पर मनुष्य अब ब्रह्माण्ड का है और ब्रह्माण्ड उसका है।

किन्तु सब जीतकर वह अपने से हार रहा है। वह अपने से अन्य को सहना उसे मुश्किल हो रहा है। उसका प्रभाव बड़ा है। लेकिन यदि बराबर में दूसरे का प्रभाव बढ़ रहा है तो यह उसे सह्य नही है। सभ्यता के शीर्ष पर आकर उसे अनुभव हो रहा है कि अपनी मुक्ति के लिए दूसरे का होना खतरा है। इसलिए सहार आवश्यक है।

और संहार के एक से एक उपकरण तैयार हो रहे हैं। विश्वव्यापी योजनाएं बन रही है। अरबों-खरबों रुपया व्यय हो रहा है। युद्ध-सामग्री के निर्माण में। मानव जाति के राजनेता जब आपस में मिलकर इन घातक तैयारियों में कुछ रोकटोक लाना चाहते है, पर परस्परता में भय और सशक्त का बीज ऐसा गहरा गढ़ गया है कि कुछ उपाय कारगार नही होता। बातचीत चलती है और टूट जाती है। फिर-फिर चलाने की कोशिश की जाती है और हर बार उसे टूटना पड़ता है। इस बीच संहार की तैयारियां जारी रहती है और अणुबम

के अम्बार दोनों ओर इतने लग गये है कि बार बार समूची मानव जाति स्वाहा हो सकती है।

दूसरे विश्वयुद्ध की आग अभी ताजा है। उपसंहार हुआ था उसका हिरोशिमा और नागासाकी पर पड़े परमाणु बमों से अब तो उनकी अपेक्षा सैंकड़ों-सैंकड़ों गुनी घातक शक्ति वाले बम तैयार हैं। इन नाभिकीय शास्त्रों की पंक्ति में सबसे नए और सबसे दारुण शस्त्र का नाम है 'न्यूट्रान' बम।

इस शस्त्र की एक बड़ी विशेषता है। यों तक कह सकते हैं कि उसे गहरा विवेक प्राप्त है। वह जड़ वस्तु को प्रायः नहीं छूता, सम्पदा ज्यों की त्यो बची रह जाती है।

संकलनकर्ता :

**ललितकुमार डांगी (सी.ए.)**

(भीलवाड़ा)

# महावीर ने कहा था

— जो पाप से दूर रहता है वह ज्ञानी है।

— प्रत्येक वाद-विवाद (राग-द्वेष) का कारण है।

— साधक को कभी दीन और अभिमानी नही होना चाहिए।

— कषाय रखने वाला सयमी नही होता।

— पुरुषार्थहीन व्यक्ति प्रत्येक कार्य में दोष ढूंढ़ता है।

— जब तृण और कनक में समबुद्धि हो जाती है तभी प्रव्रज्या होन कहा जाता है।

— तृष्णा बिष बेल है।

— प्रिय-अप्रिय सब समभाव से देखो।

— स्वयं पर भी क्रोध मत करो।

— लोभ मुक्ति मार्ग का बाधक है।

**प्रेषक : गौतमचन्द जैन (सी ए.**

## चतुर पुरुष—

चतुर पुरुष वह होते है, जो समझते है ऐन।
ऐनन में समझे नहीं, तासे करिए सैन॥
सैनन में समझे नहीं, तासे करिए बैन।
वैनन में समझे नहीं, तासे लेन न देन॥

# 卐 भक्तामर-पाठ 卐

भक्ति युक्त निज शीश झुका, जब देव वन्दना करते है,
उनके मुकुट मणी रत्नो में, दिव्य तेज जो भरते है।
मिथ्यातम कर दूर जीव को भवदधि से सूपथ गहले
ऐसे श्री जिनराज चरण को, विधि सहित वन्दन पहले ।1।

तत्वज्ञान से पूर्ण स्वर्गपति, इन्द्रो ने महिमा गाई,
भाव भरे स्त्रोत रचन कर करी स्तुति मन चाई
आश्चर्य, मै तुच्छ बुद्धि हूं, फिर भी साहस ठाऊंगा,
उन्ही श्री आदि जिनन्द की मैं भी महिमा गाऊंगा ।2।

देख चन्द्र की छाया जल में बालक का मन जाता है,
ज्ञान नही होने के कारण उसे, पकड़ना चाहता है,
बुद्धि हीन हूं, निर्लज होकर, तव स्तोत्र की तैयारी,
करने का उद्यत हुआ मेरा, साहस अतिशय भारी ।3।

प्रलय काल के प्रबल वेग में, सागर जब लहरें देता,
किसकी ताकत भुजा के बल से, पार तैरकर कर लेता,
उसी भांति हे गुण सागर तेरी, गुण महिमा गाने में,
मेरा क्या सामर्थ स्वय वृहस्पति अपूर्ण बनाने में ।4।

यद्यपि मुझ में शक्ति नही है, तेरी महिमा गाने की,
पर भक्ति के वश मे हू, इच्छा है स्तोत्र बनाने की,
सिंह के मुंह में देख लाल, शक्ति का ध्यान नही लाती है,
प्रीति के वश में हो हरिणी, सिंह से लड़ने जाती है ।5।

कोयल क्यों ना हरदम बोले, बसन्त ही जब आती है,
आमों की मंजरि ही बस, उनको मीठा बुलवाती है,
उसी तरह अल्पज्ञ हू पर तव, भक्ति मुझे विवश करती,
शक्ति नहीं बस भक्ति ही, इस रचना का कारण रखती ।6।

सम्पूर्ण विश्व में घोर तिमिर, छाया रहता है अति भारी,
पर पल में हो जाय नष्ट, जब आती रवि किरणें प्यारी,
उसी तरह तेरी स्तुती करता है जो देहधारी,
क्षरण भर में नष्ट हो जाते है, भव-भव के पातक भारी ।7।

साधरण जल का बिन्दु, कमलिनी के पत्तों पर होता,
मोती नहीं, पर उस पते पर, वह मोती सा ही सोहता,
उसी तरह मुझ मन्द मति से, तुच्छ स्तोत्र बन पावेगा,
पर तेरे प्रभाव से भगवन, सज्जन के मन भावेगा ।8।

सूर्य उदय से प्रथम प्रभा की, देख कमल खिल उठता है,
सूर्य देखकर कमल खिलै इसमें, क्या आश्चर्य लगता है,
तेरी केवल चर्चा ही से, पाप नष्ट हो जांय सभी,
इस स्तोत्र से होवेगे ही, इसमें नही सन्देह कभी ।9।

उदार हृदय स्वामी का सेवक, समय पड़े पाकर धन-धान,
अपने स्वामी के समान ही, हो जाता है भगवान धनवान,
उसी तरह है जग भूषरग, जो तेरी महिमा गाते है,
तेरे समान ही उच्च पद पा, विश्व वन्ध हो जाते है ।10।

एक बार क्षीर जो सागर का, मीठा पानी पी लेता,
फिर खारा पानी पीने की, कैसे इच्छा रख सकता,
उसी तरह जो तेरे दर्शन, कर लेता है सुख दाई,
अन्य देवों के दर्शन को वो, कभी न मन देगा भाई ।11।

जिन पुदगल परमाणु से तब शरीर बना है गुरग धामी,
वे परमाणु उतने ही थे, सारे विश्व में है स्वामी,
यदि अधिक परमाणु होते अन्य रुप कोई बनता,
स्पष्ट है इस धरती पर नही रुपवान तुमसा जंचता ।12।

निष्कलक और दिव्य छवि है तेरे मुख सुख कन्दा की,
उपमा कैसे दे सकता हूं, उसी कलंकी चन्दा की,
दिन में ढाक के पत्तो सा व , प्रभाहीन हो जाता है,
पर तेरा मुख तो है उज्जवल, सदा एक सा पाता है ।13।

चन्द्र किरण सम निर्मल भगवान, गुण समूह तेरा भारी,
तीन भुवन का करे उलंघन, इसमें क्या आश्चर्यकारी,
तीन जगत के नाथ आपका, जो भी आश्रय चित धरता,
भला उसे स्वतन्त्र गमन में, कौन अड़चना दे सकता ।14।

प्रलयः काल की हवा से भगवन, सारे पर्वत हिल जाते,
पर सुमेरु पर्वत को किंचित, भी नहीं डिगा पाते,
तेरे समुख देवांगना ने, भोग प्रदर्शन दिखलाए,
पर तेरे विरक्त भाव को, किंचित नही डिगा पाए ।15।

संसारी दीपक में भगवन, तेल धुआ बत्ती होती,
जरा हवा के झोंके में ही बुझ जाती उसकी ज्योति,
वो केवल घर का उजियाला तू त्रिभूवन का उद्योत,
डिगा सके नही प्रलय हवा है सदा अखंडित अविचल ज्योत ।16।

सूर्य अस्त होता संध्या को तू तो सदा प्रकाशी है,
तीन जगत का तू उजियाला, वो एक जम्बू वासी है,
राहु ग्रहण लगता है सूर्य को, तू निष्कलक सूर्य का नूर,
उसके तेज को मेघ ढके, पर तुने कर्म किए चकनाचुर ।17।

कैसे चन्द्र की दू उपमा, वह तो रात्रो में ही रहता,
साधारण अन्धकार हरे और राहु ग्रसे बादल ढकता,
पर तेरा मुख सदा उदय अज्ञान मोह तम को हरता
तीन जगत में सदा प्रकाशी अनन्त कान्ति का तू धरता ।18।

पकी हुई अन्न राशि पर गर जो मेहा आकर बरसे
सिवाय कीचड़ फैलाने के अन्य लाभ क्या हो उससे
जहा तेरा मुख रुपी चन्द्र अज्ञान तिमिर को हरता है
चद्र सूर्य का शीत उष्ण वहां व्यर्थ अतिपसा लगता है ।19।

जो प्रकाश शोभा पाता है प्रभु मणी को पाकर के
वह क्या शोभा को पावेगा कांच टुक में जाकर के
स्वयं प्रकाशी आप सभी को देते हो जो ज्ञान प्रकाश
अन्य हरिहर में पाने की कर सकता हूं कैसे आश ।20।

अच्छा है हरिहर को देखना भरे पड़े रागादि दोष
वितरागी जब देख तुझे आ जाता है अतिशय सन्तोष
पर जब देख लिया तुझको तो अन्य कोई जचता ही नही
मेरे मन का हरण प्रभो फिर कोई कर सकता ही नही ।21।

यद्यपि अन्य दिशाऐ है पर पूर्व दिशा अति प्रियकारी
वो ही देती जन्म सूर्य का प्रकाश पाते ससारी
इस तरह है नाथ जगत में जननी पद सबने पाया
पर तेरी माता ने ही जग में तुझ सा पुत्र रत्न जाया ।22।

राग द्वेष से रहित हो निर्मल मोह नाश को सूर्य स्वरुप
तेरी प्राप्ति पर मृत्यु डसे नही इस कारण मृत्यु जय रुप
निरूपद्रव मोक्ष मार्ग नही अन्य कोई भगवन
परम पुरुष अज्ञान विनाशक तुझे मानते है सन्त जन ।23।

है अव्यय अचितय विभी असंख्य गुणों के धारक हों
आदि धर्म के कर्त्ता हो ब्रह्म ईश विकार सहारक हो
अनन्त ज्ञान के धारी हों योगीश्वर तुम में पूर्ण विवेक
अनेक में ही एक आप हे नाथ एक में सदा अनेक ।24।

दवों से सम्मानित केवल ज्ञान तेरा ही बुद्ध हो
त्रिभुवन के कल्याण मार्ग के रचता शकर तुम खुद हो
कल्याण मार्ग की विधि के दाता ब्रह्मा भी तो आप ही हो
पुरुषों में उत्तम होने से पुरुषोत्तम तो साफ ही हो ।25।

त्रिभुवन पीड़ा हरण हार हो तुमको मेरा नमस्कार
जग के उज्जवल अलकार प्रणाम तुम्हें मेरा हर बार
तीन जगत के नाथ आपके चरणों में जाऊ बलिहारी
भव सागर के शोषण कर्त्ता तुमको वन्दन बारम्बार ।26।

जग मे जितने गुण थे भगवन सबने तुम में किया निवास
अवगुण रहते सदा घमण्ड में आते नही तुम्हारे पास
क्योंकि जग के अन्य देवो ने उनको अपना रखा है
पर दोषो से रहित आपने गुण ही का रस चक्खा है ।27।

नभ में बादल के समीप जब सूर्य प्रतिबिम्ब छाता है
शोभा देता है अति सुन्दर सब के मन को भाता है
उसी तरह अशोक वृक्ष के नीचे तेरी छवि प्यारी
निर्मल अङ्ग शोभा पाता है भासमान सा प्रियकारी ।28।

प्रकाशमान मणियों से युक्त है रत्न जड़ित तव सिंहासन
उस पर कितना प्यारा लगता शरीर आपका हे भगवन
उदयाचल पर्वत के शिखर पर जब कि सूरज आता है
कितना सुन्दर और मनोहर अति शोभा को पाता है ।29।

समवशरण में उच्च सिंहासन पर जब तुम बैठे होते
सफेद कुंज के पुष्प जैसे दो आस - पास चामर ढुलते
सुमेरु गिरि के दोनों तटों पर मानो दो झरने झरते
चन्दा सम निर्मल जल बहता ऐसे वो चामर लगते ।30।

तेरे शीश पर तीन छत्र शोभा पाते है प्रियकारी
चन्दा जैसी कान्ति जिनकी तेज सूर्य से भी भारी
मणियों की पड रही जाल वो ऐसा तेज दिखाते है
उर्ध्व मृत्यु पाताल लोक पति मानो तुम्हें बताते है ।31।

हे नाथ आपके समवशरण में देव दुंदुभी बजती है
उच्च स्वर गम्भीर गुन्जाव में वो ऐसी लगती है
तीन लोक को करा रही हो मानो तेरा समागम ध्यान
करती हो तव विजय घोषणा गाती हो तेरा यश गान ।32।

गन्धोदक पानी से भीगे मन्द पवन शोरभ सरसा
उधर्व मुखी पंचवर्णी पारीजातिक पुष्पो की बरसा
समवशरण में जब होती है, मानो यो कहतो सारे
पुष्प रूप कर धारण बरस रहे स्वयं वचन प्रभु के प्यारे ।33।

जहा विराजो आप दयानिधि वही आपके मुख के पास
प्रभा अति तेजस्वी छाती भामण्डल का दिव्य प्रकाश
यद्यपि सूर्य सा तेजस्वी हैं पर आताप न कर पाता
शशि ज्योत ज्यो सोम्य आपकी वीतरागता बरसाता है ।34।

समवशरण में आप प्रभु जब वचनामृत वरसाते है
धर्म तत्व का प्रतिपादन कर मोक्ष मार्ग दरसाते है
विशुद्ध अर्थ और सरल सर्व ही भावानुगामिनी है
पैतीस अतिशययुक्त वह भाषा सब ही के मन भाविनी है ।35।

खिला हुआ सुवर्ण वर्णी कमल समूह लगता प्यारा
नख पंक्ति युक्त चरण कमल तव है उसको जीतना हारा
ऐसे उत्तम चरण कमल है नाथ आप जहां रखते है
वहां देव गण पद्म कमल की, आकर रचना करते है ।36।

अष्ट महा प्रतिहार्यादि की इन विभूतियों के स्वामी
अन्य हरिहरादि देवों को नही मिले रहती स्वामी
जिस प्रकार अन्धकार हरण को होती दिव्प सूर्य ज्योति
वैसी ग्रह नक्षत्रादि में प्रभा कभी नहीं हो सकती ।37।

मद से झरना कपोल जिसका मलिन और चञ्चल होता
उन्मत भंवरों की गुञजार से छाया क्रोध भान खोता
ऐसा रोष भरा हाथी भी गर जो सामने आवेगा
तेरा आश्रय लेने वाला भक्त नही घबरावेगा ।38।

मदोन्मत कुञ्जर के मस्तक का जो विदारण कर लेता
रक्त मिश्रित मोतियों से पृथ्वी को चमका देता
तेरे युगल चरण पर्वत का जो भी आश्रय मन धरता
क्या ताकत वो पराक्रमी सिह उसका सामना कर सकता ।39।

प्रचंड पवन तिनके उछले और भय पद्र ज्वाला भभक रही
मानो जग को हड़प जायेगी ऐसी अग्नि धधक रही
जैसे चन्दन का एक बिन्दु मेटे मणो तेल का कान्त
तेरा पवित्र नाम लेने से होती वह अग्नि भी शान्त ।40।

लाल नेत्रों में क्रोध भरा और उंचा फण फुंकार करे
मदोन्मत्त अति काला सर्प आ पैरों के निचे विचरे
तेरे नाम की नाग मनी जड़ी यह जिसके हृदय है
सर्प न बाधा पहुंचा सकता चाहे कितना ही निर्दय है ।41।

घोडे करेर हुंकार गर्जना हस्तो भी करते भारी
रण में हो वलवान भूपति ले अपनी सैना सारी
किन्तु सूर्य के उदय होते ही अन्धकार नष्ट हो जाता
इसी तरह तव भक्ति के वल रण में जीत भक्त पाता ।42।

वरस रहे हो वरछी भाले तलवारों की लगकर मार
वहे वेग मे हाथियों के रक्त रुपी जहां जल की धार
यद्यपि पार करने का इच्छुक पर योद्धा बल हुआ समाप्त
तेरा भक्त तो कर ही लेता शत्रु पथ से जय को प्राप्त ।43।

भयकर है मगर मच्छ, वडवाग्नि भी जलती न्यारी
समुद्र तरंगों में जहाज डोलायमान हो रहा भारी
ऐसा जहाज भी कुशल पूर्वक सागर तट को पा लेता
तव सुमिरण भक्तों कों यात्रा सुख से पार करा देता ।44।

जलोधर आदि रोगों से झुक जो कुवड़ा हो जाता
जीवन आशा छोड़ चुका जो दशा शोचनीय को पाता
वे गर तेरे चरण कमल की रज हृदय से अपनाते
रोग सोम्य हो दूर शीघ्र हो कामदेव से वन जाते ।45।

पावो से ले गले तक जो अङ्ग सांकलो से जकड़ा
वेड़ियों की वड़ी बड़ी नोको से जंघा को रगड़ा
वे नर भी जव तेरे नाम का ध्यान हृदय में लाते है
वन्धन जाते टूट स्वयं ही शीघ्र मुक्त हो जाते है ।46।

हस्ति सिंह अरु अग्नि सर्प हो युद्ध शत्रु सागर या रोग
वन्धन हो या अन्य कोई भी जीवन में विपदा संयोग
हे नाथ आपके इस स्तोत्र को भक्ति युक्त जो भी गाते
उनके यह सारे भय क्षण में स्वय ही डर कर भग जाते ।47।

पुष्प हार ज्यों शोभा देता वेसे ही यह गुण की माल
बुद्धिमान कर धारण इसको हो जावेगा परम निहाल
कर कठस्थ गाथा को रचना मानतुंग के मन भाती
लक्ष्मी को पा लेता 'जीत' वह स्वयं विवश होकर आती ।48।

**संकलनकर्ता—नेमीचन्द बाफणा (मसूदा)**

## 卐 पांच बोल 卐

1. जमीन में सुगन्ध नही।
2. हथेली में बाल नहीं।
3. आकाश में खम्भे नहीं।
4. जीभ में हड्डी नही।
5. मोक्ष में श्मशान नही।

इसी प्रकार सूत्र में झूठ नहीं।

संकलनकर्ता :
**घीसूलाल मूथा**
ब्यावर

## श्रावक का वचन व्यवहार

1. श्रावकजी थोड़ा बोले।
2. श्रावकजी आवश्यकता होने पर बोले।
3. श्रीवकजी मीठा बोले।
4. श्रावकजी चतुराई पूर्वक अवसर के अनुसार बोले
5. श्रावकजी अहंकार रहित वचन बोले।
6. श्रावकजी मर्म खोलने वाला एवं आघात-जनक वचन नहीं बोले।
7. श्रावजी सभी जीवों के लिए हितकारक बचन बोले।

## 卐 श्रावक के गुण 卐

1. दीजे दान
2. लीजे यश
3. कीजे परोपकार
4. खाइजे गम
5. पीजे प्रेमरस
6. पालजे शील
7. टालजे कुसंगत
8. छोड़जे पाप
9. आदरजे धर्म
10. ध्याइजे अरिहंत देव
11. सेवजे निर्ग्रन्थ गुरु
12. रमजे स्वाध्याय ध्यान में

संकलनकर्ता
**दौलतराम शोभालाल मेड़तवाल**
( करजालिया )

## 卐 मूल 卐

1. समस्त गुणों का मूल विनय है।
2. सभी रसों का मूल पानी है।
3. सभी पापों का मूल लोभ है।
4. सभी धर्मों का मूल दया है।
5. सभी कलह का मूल हंसी है।
6. सभी रोगों का मूल अजीर्ण है।
7. सभी प्रकार के मरण का मूल शरीर है।
8. सभी बन्धनों का मूल स्नेह है।

卐

## 卐 नहीं 卐

1. क्रोध के समान विष नहीं ।
2. क्षमा के समान अमृत नही ।
3. लोभ के समान दु:ख नहीं ।
4. संतोष के समान सुख नहीं ।
5. पाप के समान वैरी नहीं ।
6. धर्म के समान मित्र नही ।
7. कुशील के समान भय नही ।
8. शील के समान शरणभूत नही ।

## 卐 श्रृंगार 卐

1. शरीर का श्रृंगार शील
2. शील का श्रृंगार तप
3. तप का श्रृंगार क्षमा
4. क्षमा का श्रृंगार ज्ञान
5. ज्ञान का श्रृंगार मौन
6. मौन का श्रृंगार शुभध्यान
7. शुभध्यान का श्रृंगार संवर
8. सवर का श्रृंगार निर्जरा
9. निर्जरा का श्रृंगार केवल ज्ञान
10. केवलज्ञान का श्रृंगार अक्रिया
11. अक्रिया का श्रृंगार मोक्ष
12. मोक्ष का श्रृंगार अव्याबाध सुख

संकलनकर्त्ता :
**बिरदीचन्द लुणाव**
विजयनगर

# तीर्थंकर पद प्राप्ति के 20 बोल

1. अरिहन्त भगवन् की भक्ति, उनके गुणों का चितवन करते रहने से उत्कृष्ट रस जमे, जो तीर्थकर नाम-कर्म का बन्ध होता है ।
2. सिद्ध भगवन् की भक्ति और उनके गुणों का चिन्तन करने से ।
3. निर्ग्रन्थ-प्रवचन रुप श्रुतज्ञान में अनन्य उपयोग रखने से ।
4. गुरु महाराज की भक्ति, आहारादि द्वारा सेवा करने से ।
5. जाति स्थविर, श्रुत-स्थविर प्रव्रज्या स्थविर की भक्ति करने से ।
6. वहुश्रुत मुनिराज की भक्ति करने से ।
7. तपस्वी मुनिराज की भक्ति करने से ।
8. ज्ञान की निरन्तर आराधना करते रहने से ।
9. सम्यक्त्व का निरतिचार पालन करने से ।
10. विनय 7-10-134 करने से ।
11. भाव पूर्वक दोनों समय प्रतिक्रमण करते रहने से ।
12. व्रत, नियम, पच्चकाण का निर्दोप रीति से पालन करसे से ।
13. धर्मध्यान, शुक्ल ध्यान सदा सवेग भाव रखने से ।
14. 12 प्रकार का निर्जरा तप करने से ।
15. अभयदान, सुपात्रदान, भक्ति पूर्वक देने से ।
16. आचार्यादि दस प्रकार की वैयावृत्य करने से ।
17. चार तीर्थ 6 काया के जीवों को साता उपजाने से ।
18. नया नया ज्ञान का अभ्यास करने से ।
19. श्रुत ज्ञान की भक्ति तथा वहुमान करने से ।
20. धर्म का प्रचार करने से ।

उपरोक्त बीस बोलों की उत्कृष्टता पूर्वक आराधना करने से तीर्थंकर नाम-कर्म का बन्ध होता है। इस बन्ध के उदय वाले महापुरुष तीर्थंकर बनकर मोक्ष मार्ग का प्रवर्त्तन करते हैं और भव्य जीवो का कल्याण करते है।

संकलनकर्ता
**मनोहरलाल बोहरा**
(सारोठ)

卐

# दस प्रकार का मिलना महामुश्किल है

1 मनुष्य जन्म का मिलना महा मुश्किल है।

2 आर्य क्षेत्र मिलना महा मुश्किल है।

3 उत्तम कुल मिलना महा मुश्किल हैं।

4 शरीर निरोगा मिलना महा मुश्किल है।

5 पांच इन्द्रियो का मिलना महा मुश्किल है।

6 लम्बी आयु मिलनी महा मुश्किल है।

7 साधु मुनिराज की सेवा दर्शन मिलना महा मुश्किल है।

8 प्रवचन, सुत्र सिद्धांत की वाणी मिलना महा मुश्किल है।

9 धर्म के विषय श्रद्धा आनी महा मुश्किल है।

10 धर्म के विषय पराक्रम करना महा मुश्किल है।

संकलनकर्ता
**अनु, अंशु, अंकुर, अमित, अभिषेक**
**एवम् राँका परिवार**

## श्रावक श्राविका संगठन समाचारी उदयपुर
## वि. सं. २०१७ माघ वदी" दि. १७-१-६१

1 चतुर्विध श्री संघ में संगठन व प्रेम बढ़ाने के लिए पूरी शक्ति और साधनों का सदुपयोग करना एवं संघ की उन्नति के लिए यथायोग्य सहायता देना।

2 पांच महाव्रत धारी साधु को ही अपना गुरु माना जाय।

3 संघ के आचार्य की निश्राय बिना आज्ञा बहिस्कृत और स्वच्छंदता से विचरने वाले साधु साध्वियों को साध्वोचित वन्दन सत्कार व व्याख्यान श्रवण आदि न किया जाय। किन्तु अन्नादि देने का निषेध न समझें।

4 संघ की समाचारी व नियमों के विरुद्ध यदि कोई साधु साध्वी प्रवृति करते हों तो शीघ्र ही उसे सावधान किया जाय, या संघ के आचार्य श्री को सूचित किया जाय ताकि वह अपनी प्रवृति ठीक कर सके या उसके लिए प्रबन्ध हो सके किन्तु ऐसा न करके दूसरों के सामने उसको अपमानित करने की चेष्टा न की जाय।

5 संघ की समाचारी व नियम विरुद्ध प्रवृति करने वाले साधु साध्वी को सावधानी दिलाने पर वह अपनी विरुद्ध प्रवृतियों को न बदले और आचार्य श्री की आज्ञा को न माने बल्कि उल्टा गलत प्रचार करे तो जन साधारण को सही मार्ग पर रखने के लिए उसकी विरुद्ध प्रवृतियों को जाहिर करना आवश्यक समझा जाय।

नोटः-इस संघ के समस्त श्रावक और श्राविकाएं निम्नोक्त प्रवृतियां करने वाले को साधु न समझे। और उससे साध्वोचित सहकार न करे।

1-जो साधु महाव्रतों में सदोष हो।

2-एकल विहारी हो।

3-भगवान को चूका बतलाता हो।

4-जीव रक्षा और अनुकम्पादान में पाप की प्ररूपणा करता हो।

5-बिना कारण साध्वियों के साथ आहार पानी का लेन - देन करता हो।

6-अपना फोटू खिचवाता हो तथा पत्र लिए चबूतरे आदि बनाने का उपदेश देता हो।

7-धातु की बनी हुई कोई चीज अपनी नेश्राम में रखता हो।

8-पोस्ट कार्ड लिफाफे टिकट आदि पास मे रखता हो।

9-रुपयो के लेन-देन तथा रखने रखाने का व आरम्भ समारम्भ का उपदेश देता हो।

10-रात्रि में जिस साधु के यहां बहनों का आवागमन और साध्वी के स्थान पर भाइयों का आवागमन होता हो।

11-अपना चरणोदक ग्रहस्थियों को देता हो।

12-नित्य एक घर से आहार पानी लाता हो।

13-बिना किसी समझदार के भाई की उपस्थिति में साधु भाई व साध्वियों से वार्तालाप करता हो तथा सेवा लेना बैठना आदि कार्य करवाता हो।

14-वस्त्रों की दोनो समय प्रतिलेखना न करते हो।

15-साधुओं के निमित बने हुए मकान, पाल, छप्परे, तम्बू, दरवाजे व पांडाल आदि में उतरता व बैठता हो।

16-अपनी नेश्राय के पुस्तक पाने भण्डोपकरण ग्रहस्थों से उठवाता हो।

17-ग्रहस्थियों से पाट पाटले आदि मंगवाता हो और उनके लाये हुये वापरता हो।

18-ग्रहस्थों से हाथ पैर आदि दबवाता हो।

19-मर्यादा उपरान्त वस्त्र पात्र आदि रखता हो।

20-किसी की झूठी निन्दा करता हो।

21-रात्रि को पानी औषध व लेखन सामग्री होल्डर पेन व लोहे की कील वाले चश्में आदि रखता हो।

22-अपने हाथ से लिखकर पत्र व्यवहार करता हो

23-चातुर्मास व तपस्या आदि के अवसर पर श्रावकों से आमन्त्रण पत्रिकाऐ दिलवाता हो ।

24-सरक्षक की विना आज्ञा वैरागी या वैरागीन को दीक्षा देता हो

25-यन्त्र-मन्त्र जादू टोना तावीज फीचर के अक ज्योति आदि निमित्त ग्रहस्थियों को बताता हो ।

26-जो रास्ते की से ा बताकर ग्रामानुग्राम विहार करने शोच जाते व गोचरी जाते समय निष्कारण ग्रहस्थियो को साथ में रखते हो । ग्रामानुग्राम विहार करते समय रास्ते मे उनसे भोजन पानी लेते हो ।

27-जो किसी पत्रादि का सम्पादन करते हो ।

28-जो पुस्तक वस्त्रादि का भण्डार अपनी नेश्राय मे रखता हो रखाता हो ।

29-जो माइक (लाऊड स्पीकर) मे बोलता हो ।

30-जिनकी फिलमे उतरती हो तथा टाइप ( टेप रेकार्ड ) किया जाता हो ।

31-अपने ठहरने के खास स्थान तथा व्याख्यान के हाल में जहां विजली आदि की रोशनी की जाती हो और पंखे चलते हो वहा व्याख्यान देता हो ।

32-जो विजली आदि की रोशनी मे वैठकर पठन - पाठन आदि करते हो ।

33-जो कल्प के विरुद्ध प्रवृति करता हो तथा जो अनैतिक स्वरुप शिथिलाचार का पोपण करता हो व प्रश्रय देता हो ।

34-जो उपर्युक्त प्रवृतियां करने वाले के साथ सम्बन्ध रखता हो, (एवं साधु मर्यादाओं के विपरीत प्रवृति करता हो)

6 सघ के किसी साधु - साध्वी या श्रावक - श्राविका के विरुद्ध लेख या पत्र-पत्रिकादि छपवाना नहीं । किसी गांव या नगर के संघ मे यदि कोई मतभेद या वैमनस्य पैदा हो जाय तो आचार्य श्री के

सामने उसका निपटारा कर लेना तथा बिना नाम के पत्र लेखादि निकालना नही ।

7. साधु साध्वियों की अनुपस्थिति में श्रावक-श्राविकाओं को प्रतिदिन सूर्योदय के बाद प्रातःकाल प्रार्थना करना चाहिए ।

8. संघ के श्रावक-श्राविकाओं को अपने देव अरिहन्त गुरु पूर्वोक्त गुणो वाले निर्ग्रन्थ, जिनोक्त धर्म पर पूर्ण रूप से श्रद्धा रखनी चाहिए।

9. किसी भी कुदेव, भैरू भवानी को न मस्तक झुकाना और न बोलना की मनौती करना चाहिए ।

10. किसी भी फोटू चित्र, पाट पत्र लिया समाधि आदि को वन्दन नमस्कार न करना चाहिए । न धूप दीप करना और न जड़ तीर्थो की मान्यता करनी चाहिए ।

11. किसी भी साधु-साध्वी का फोटू खीचना या खीचवाना नही व उनके कल्प के विरुद्ध किसी कार्य में भाग नही लेना ।

12. सघ के श्रावक-श्राविकाओं को अपने ग्राम या नगर में विराजित साधु-साध्वियों का प्रतिदिन दोनो समय दर्शन करना चाहिए। कारणवश न हो सके तो बात अलग ।

13. सघ के श्रावक-श्राविकाओं को प्रतिदिन सूखे सभाधे एक समायिक करनी चाहिये शारिरिक या राजमत देवमत कारणवश न हो सके तो उसके अभाव मे अनुपूर्वी या नमस्कार मन्त्र की माला का नियमन रूप से जाप करना चाहिए ।

14. सघ के श्रावक - श्राविकाओं को वैरागी या वैरागिन के दीक्षा महोत्सव पर फिजूल आडम्बर नहीं करना बल्कि सादगी को काम में लेना ।

15. किसी भी साधु - साध्वी की तपस्या दीक्षा आदि के उपलक्ष में उत्सव नही मनाना । तपोनमन व दीक्षा महोत्सव आदि के निमित आमन्त्रण पत्र नही देना तथा गाजा-बाजा व वर घोड़ा आदि नहीं

निकालना। हां तपस्या आदि के अवसर पर धर्म ध्यान जीवदया व तपस्या आदि धार्मिक प्रवृत्तियां करते हो तो अच्छा है।

16 संघ के प्रत्येक सदस्य को सात कुव्यवसनों का त्याग करना चाहिए तथा बन सके तो रात्रि भोजन का भी त्याग करना चाहिए।

17 साधु साध्वी के कल्पा-कल्प की जो समाचारी निर्ग्रन्थ श्रमण संघ के आचार्य श्री गणेशीलालजी म. की ओर से तैयार हो उसे प्रत्येक ग्राम या नगर का संघ, अपने संघ में प्रसारित करने की कोशिश करे, जिससे सर्व साधारण को साधु के कल्पाकल्प का ज्ञान हो सके यदि किसी समय संघ की तरफ से कोई नियम रद्दोबदल किया जाय तो सर्व साधारण को समझा दिया जाय ताकि संघ को जानकारी रहे।

18 व्याख्यान वाचन या स्वाध्याय के समय के अलावा साधुजी के स्थान पर श्राविकाओं का तथा साध्वीयों के स्थान पर श्रावकों का आवागमन न होना चाहिए। यदि दर्शन प्रत्याख्यान या मांगलिक श्रवण के लिए कभी जाना पड़े तो खड़े-खड़े सुन लेना या कर लेना चाहिए। रात्रि में याने सूर्यास्त के बाद से लेकर सूर्योदय तक तो साधुजी के स्थान पर श्राविकाओं को तथा साध्वीजी के स्थान पर श्रावकों को कतई न जाना चाहिए। और न सूर्योदय होने से पहले साध्वीयों को साधुजी के स्थान पर व साधु को साध्वियों के स्थान पर जाना चाहिए।

19 संघ के श्रावक-श्राविकाओं को अपना जीवन संगत बनाने के लिए भगवान महावीर द्वारा निर्दिष्ट बारह व्रतों का यथाशक्ति पालन करना चाहिए। बारह व्रतों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। ताकि समय आने पर दूसरों को भी समझा सके।

जैन धर्म के प्रचारार्थ गम्भीर अध्ययन करना चाहिए। ताकि जहां साधु-साध्वियों का पहुंचना न हो वहां जैन धर्म के तत्वों का सुन्दर प्रचार कर सके।

20 संघ के अनुयायी श्रावकों के प्रत्येक घर में 6 वर्ष से अधिक उम्र के बालक-बालिकाओं को फर्जियात जैन धर्म की शिक्षा दि·

चाहिए, ताकि धार्मिक क्रियाओं में बच्चों को भी साथ लेना चाहिए।

21 कम से कम पुत्रों को 18 वर्ष तक पुत्री को 14 वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचार्य पालन की तथा सादगी व स्वावलम्बन पूर्वक जीवन की सुयोग्य शिक्षा देनी चाहिए।

22 सघ में कुछ विशिष्ट प्रभावशालो सेवावृती शास्त्रज्ञ साध्वाचार के ज्ञाता तथा सांसारिक कार्यो से निवृत श्रावक - श्राधिकाऐ तैयार हो जो साधु-साध्वियों के आचार-विचार की देख-रेख रख सके। किसी साधु व श्रावक-श्राविकाये में मतभेद हो जाय तो उसको दूर करने की कोशिश करे, यदि कोई वैरागी या वैरागिन हो तो उसकी समुचित व्यवस्था का ध्यान रखना अपना कर्त्तव्य समझे।

23 संघ के श्रावक-श्राविकाओं को वर्तमान में प्रचलित रीति-रिवाज जो समाज एव धार्मिक दृष्टि से हानिकारक हो उनका परित्याग धीरे-धीरे करते रहना चाहिए। तथा जीमन वारो में कन्दमूल का प्रयोग कदापि न करना चाहिए।

24 अपने ग्राम या नगर में सघ के श्रावकों के घर व मनुष्य की गणना रखनी चाहिए। तथा अपने ग्राम या नगर में पधारे हुए साधु साध्वियो के दर्शन व्याख्यान आदि के लिए जैन जैनेतर भाई बहिनो को लाने की कोशिश करना व नई श्रद्धा दिलाने का प्रयत्न करना चाहिए।

25 महावीर जयन्ति या पर्यूषण पर्व के अवसर पर सब भाई-बहिनो को सम्मिलित रूप से इकट्ठे होकर धार्मिक कार्य करना और उनके जीवन पर प्रकाश डालना चाहिए।

26 महिने मे एक रोज भाई-बहिनों को अपनी अनुकूलता अनुसार सामुहिक दया करनी चाहिए। जिसमें ज्ञान बुद्धि व धार्मिक तत्वो

की चर्चा आदि का प्रयोग करना चाहिए ।

27 संघ के अनुयायी श्रावक वर्ग को वीर संघ एवं समता प्रचार केन्द्र के सदस्य बनना चाहिए । ताकि सदस्यों को स्वाध्याय एवं साधना का समुचित ज्ञान हो और जीवन में अमल कर सके ।

संघ की कार्यकारिणी समिति में बने वहां तक उपरोक्त सदस्यों में से योग्य व्यक्तियों को लिया जाय ताकि अखिल भारतीय स्तर पर और स्थानीय स्तर पर वे सदस्य अन्य व्यक्तियों को साधना एवं स्वाध्याय सम्बन्धी प्रेरणा दे सके ।

—विद्वद्वर्य श्री सम्पत मुनिजी म.सा.

# अरे मन ! करले आतम ध्यान

इस दुनियां में कोई न अपना, क्यों होवे हैरान ।
अपना लोक आप में सर्जित, अविनाशी सुखधाम ।।
सुख सागर नित बहे आप मे, कर मज्जन स्नान ।
जिससे पावे सुख अनुपम, पावे गुण गुणखान ।।
निज में निज को देख अरे मन ! भरत नमी समान ।
अनित्य भावना भाते - भाते, पाया केवल ज्ञान ।।

## हे प्रभु वीर दया के सागर—

हे प्रभु वीर दया के सागर, सब गुण आगर ज्ञान उजागर।
जब तक जीऊं हंस-हंस जीवूं, ज्ञान सुधा रस अमृत पीवूं ॥
छोड़ूं लोभ घमण्ड बुराई, चाहूं सबकी नित्य भलाई।
जो करना सो अच्छा करना, फिर दुनियां में किससे डरना ॥
हे प्रभो मेरा मन हो सुन्दर, वाणी सुन्दर, जीवन सुन्दर
हे प्रभु वीर ......

## श्री चरण शरण से हुआ जीवन सुधार है

गुरुदेव ! तुम्हें नमस्कार बार-बार है।
श्री चरण शरण से हुआ जीवन सुधार है।
अज्ञानतम हटाके ज्ञान ज्योति जगा दी।
दृढ़ आतम ज्ञान में अखण्ड दृष्टि लगा दी।
उपदेश सदाचार सकल शास्त्र सार है ।1।
गुरुदेव तुम्हे— —

विधियुक्त शिर भुकाके कर रहे हैं वदना।
अब हो रही मंगलमयी सद्भाव स्पदना।
माधुर्य से मिटा रहे मन का विकार है ।2।
गुरुदेव तुम्हे———

यह है मनोरथ नित्य रहे सन्त चरण में।
अन्तिम समय समाधि मरण चार शरण में।
यह सूर्यचन्द्र मोक्ष मार्ग मे बिहार है ।3।
गुरुदेव तुम्हें———

# पद्य-भाग

# चन्द्रलेखा चरित्र

(तर्ज-तरकारी ले लो, मालण आई है बीकानेर से)

साहसी चन्द्रा ने कर्मों को जीता, पाया मोक्ष को ।।टेर।।

श्री निज नायक वीर प्रभु को, तन मन वश कर ध्याऊं ।
नाना गुरु की चरण शरण ले, नवल कथा यह गाऊं । 1 ।

यद्यपि मुझ में शक्ति नहीं है, चरित्र चित्रण करने की ।
किन्तु आपकी भक्ति ही, प्रेरित करती है शक्ति को । 2 ।

अष्ट कर्मदल अति जोरावर, उन्हें जीत सुख पावेगे ।
जालिम मोह मार (काम) को हमतो, साहस करी नशावेंगे । 3 ।

प्रण पालक भाई ने अग्रज भाई से माफी मांगी ।
मोह कर्म के वशीभूत हो, भाई को ठोकर मारी । 4 ।

चोट लगी है मर्म स्थल पर, मरकर तोती चन्द्रा ।
अग्रज भी भाई के मोह से, मर कर हुवा हर्षचंद्र । 5 ।

उज्जैनी नगरी का न्यायी, हर्षचन्द्र भूपाल ।
राजा प्रजा का वत्सल है वहां,नगर सेठ धनपाल । 6 ।

धर्म निष्ठ सेठ ने श्रावक, के वारह व्रत धारे ।
न्याय नाति से करे कमाई, नगर निवासी सारे । 7 ।

सेठानी है लक्ष्मीवाई, लक्ष्मी का अवतार ।
राम सीता की जोड़ी है नित,धर्म की चर्चा सार । 8 ।

चार पुत्र हैं संस्कारी, और वहुएं भी मन को भाई ।
विनयवान और आज्ञाकारी, सवजन को है सुखदाई । 9 ।

चार भाई के बाद में चन्द्रा सशिवत सौम्य स्वभाव ।
रूप रंग गुण में मन मोहक, सरल सन्तोष स्वभाव । 10 ।

महल झरोखे बैठके चन्द्रा, देखे तोता तोती ।
आम्र वृक्ष पर करे किलोले, दृस्टा का मन मोहती । 11 ।

ऐसा दृश्य कहीं पर देखा, जाति स्मरण होता ।
देख पूर्वभव स्वार्थ दशा का, मन विस्मय में खोता । 12 ।

मनहर कानन में मंगलमय क्रीड़ा मोद मनाते ।
शुक पोपट के अनेक जोडे, स्वतन्त्र विचरण करते । 13 ।

कंचनपुर के राजारानी, दास दासी परिवार ।
उस वन में आ डेरा डाला, नृप का व्यसन शिकार । 14 ।

और सभी गुण है राजा में, प्रजा पर प्रेम अपार ।
रानी भी है धर्मनिष्ठ, नृप को कहे बारम्बार । 15 ।

उड़ते पक्षी नील गगन में, पशु भी निरपराध ।
इनका शिकार नही आतम के हित, मानो मम सिरताज । 16 ।

किन्तु ध्यान नहीं देता राजा, मेरा मन बहलाता हूं ।
यों कह चला दास के संग मे, हिरण पकड़ कर लाता हूं । 17 ।

पीछा किया हिरण का नृप ने, अश्व चलाकर सरपट चाल ।
छुटे दास हिरण भी गायब, गरमी में राजा बेहाल । 18 ।

पानी खातिर झूंपी देखी, चला उधर अश्व को मोड़ ।
मारो पकड़ो मारो पकड़ो, नृप के कान पड़े ये शोर । 19 ।

हुआ अचंभित भूपति सोचे, क्या छिप रहे यहां पर चोर ।
लौटाया घोड़े को नृप ने, वन में चला दूसरी ओर । 20 ।

आवो पधारो आवो पधारो, शब्द पड़े ये नृप के कान ।
दिखता नहीं यहां भी कोई, कौन मुझ देता सम्मान । 21 ।

आगे बढ़ा झोपड़ी में से, आये योगी वृद्ध महान।
नृप ने जिज्ञासा का पाया उनसे तब सुसमाधान।22।

मानव की संगति से सीखे, तोते मीठे कड़वे बोल।
उस पल्ली में डाकू से, मेरे से उसमें सीखे बोल।23।

तृषा शान्त सुसमाधान पा नृप, पहुंचा जहां था डेरा।
उधर रानी भी मन बहलाती, देख देख शुक का जोड़ा।24।

सोचा एक जोड़े को लेकर सोने का पिंजरा बनवा।
स्वयं नहलाऊ पय पिलाऊ, और खिलाऊ फल मंगवा।25।

नृप का स्वागत करके उसने, सुना हाल सब राजा का।
किया निवेदन नृप से उसने, जोड़ा मंगादो इक शुक का 26।

नृप ने कहा बन्धन में पड़ता, डाले अन्य का बन्धन मे।
अतः उचित नही रानीजी, शुक को डालना बन्धन में।27।

मैंने कहा आप नहीं माने, अपना मन बहलाने को।
मैं मानव के बोल सिखाऊं, अपना मन बहलाने को।28।

नही मानी आदेश दिया चर को इक जोड़ा लाने को।
दिया एक जोड़े को लाकर, नृप को नृपने रानी को।29।

हृदय लगा महलों में लाकर, स्वर्ण पिंजरा बनवाया।
स्वय निरीक्षण में रानी ने, शुक जोड़े को पढवाया।30।

नृप रानीजी प्रवचन सुनने, साथ उसी शुक जोड़े को।
लेकर आई उपवन में गीतार्थ मुनि के दर्शन को।31।

अवसर देख गीतार्थ मुनि ने, कहा कर्मबन्ध हाल।
स्वच्छन्द प्राणी को बन्धन डाले, वह बन्धता कर्म जाल।32।

सुनकर रानी हुई प्रभावित, बोली नृप से महलो में।
छुटवादो इस शुक जोड़े को, अनुचर द्वारा जगलो में।33।

चार भाई के बाद में चन्द्रा सशिवत सौम्य स्वभाव ।
रूप रंग गुण में मन मोहक, सरल सन्तोष स्वभाव । 10 ।

महल झरोखे बैठके चन्द्रा, देखे तोता तोती ।
आम्र वृक्ष पर करे किलोले, दृस्टा का मन मोहती । 11 ।

ऐसा दृश्य कहीं पर देखा, जाति स्मरण होता ।
देख पूर्वभव स्वार्थ दशा का, मन विस्मय में खोता । 12 ।

मनहर कानन में मंगलमय क्रीडा मोद मनाते ।
शुक पोपट के अनेक जोडे, स्वतन्त्र विचरण करते । 13 ।

कंचनपुर के राजारानी, दास दासी परिवार ।
उस वन में आ डेरा डाला, नृप का व्यसन शिकार । 14 ।

और सभी गुण है राजा में, प्रजा पर प्रेम अपार ।
रानी भी है धर्मनिष्ठ, नृप को कहे बारम्बार । 15 ।

उड़ते पक्षी नील गगन में, पशु भी निरपराध ।
इनका शिकार नही आतम के हित,मानो मम सिरताज ।16।

किन्तु ध्यान नहीं देता राजा, मेरा मन बहलाता हूं ।
यों कह चला दास के संग में, हिरण पकड़ कर लाता हूं ।17।

पीछा किया हिरण का नृप ने, अश्व चलाकर सरपट चाल ।
छुटे दास हिरण भी गायब, गरमी में राजा बेहाल ।18।

पानी खातिर झूंपी देखी, चला उधर अश्व को मोड़ ।
मारो पकड़ो मारो पकड़ो, नृप के कान पड़े ये शोर ।19।

हुआ अचंभित भूपति सोचे, क्या छिप रहे यहां पर चोर ।
लौटाया घोड़े को नृप ने, वन में चला दूसरो ओर ।20।

आवो पधारो आवो पधारो, शब्द पड़े ये नृप के कान ।
दिखता नही यहां भी कोई, कौन मुझ देता सम्मान ।21।

आगे बढा झोपड़ी में से, आये योगी वृद्ध महान।
नृप ने जिज्ञासा का पाया उनसे तब सुसमाधान ।22।

मानव की संगति से सीखे, तोते मीठे कड़वे बोल।
उस पल्ली में डाकू से, मेरे से उसमें सीखे बोल ।23।

तृषा शान्त सुसमाधान पा नृप, पहुंचा जहा था डेरा।
उधर रानी भी मन बहलाती, देख देख शुक का जोड़ा ।24।

सोचा एक जोड़े को लेकर सोने का पिंजरा बनवा।
स्वय नहलाऊ पय पिलाऊ, और खिलाऊ फल मंगवा ।25।

नृप का स्वागत करके उसने, सुना हाल सब राजा का।
किया निवेदन नृप से उसने, जोड़ा मंगादो इक शुक का 26।

नृप ने कहा बन्धन में पड़ता, डाले अन्य का बन्धन मे।
अत उचित नही रानीजी, शुक को डालना बन्धन में ।27।

मैंने कहा आप नही माने, अपना मन बहलाने को।
मैं मानव के बोल सिखाऊ, अपना मन बहलाने को ।28।

नही मानी आदेश दिया चर को इक जोड़ा लाने को।
दिया एक जोड़े को लाकर, नृप को नृपने रानी को ।29।

हृदय लगा महलों में लाकर, स्वर्ण पिंजरा बनवाया।
स्वय निरीक्षण में रानी ने, शुक जोड़े को पढवाया ।30।

नृप रानीजी प्रवचन सुनने, साथ उसी शुक जोड़े को।
लेकर आई उपवन में गीतार्थ मुनि के दर्शन को ।31।

अवसर देख गीतार्थ मुनि ने, कहा कर्मबन्ध हाल।
स्वच्छन्द प्राणी को बन्धन डाले, वह बन्धता कर्म जाल ।32।

सुनकर रानी हुई प्रभावित, बोली नृप से महलों में।
छुड़वादो इस शुक जोड़े को, अनुचर द्वारा जगलो में ।33।

अन्य जगह मत छुडवाना, ये पंछी अपने परिजन से।
बिछुड़ जायेगे अत. मिलेगे, वही ये अपये परिजन से।34।

मानव बोली से हुए प्रभावित, वन में सब शुक वृन्दों ने।
राजा रानी का पद देकर, सम्मानित किया विहगों ने।35।

सत्कारित सम्मानित हो, वे प्रभु भक्ति में रहते लीन।
बड़े प्रेम से परिजन संग में, करे किलोले आनन्द लीन।36।

कालान्तर में तोती ने, एक पुत्र रत्न को जन्म दिया।
मात पिता वात्सल्य पाकर, तोता पुत्र प्रसन्न हुवा।37।

माता ने सोचा बेटे को, बोल सिखाकर ट्रेण्ड करु।
पिता ने सोचा मै बेटे को, उडना सिखा के ट्रेण्ड करु।38।

तोता पुत्र उड़ने को अच्छा,समझ पिता के साथ चला।
बहुत देर से आये तब, तोती ने आडे हाथ लिया।39।

मैं चाहती हूं इसे बोलना, आ जाए तो अच्छा है।
अपनी तरह यह भी विहगों का, राजा बने तो अच्छा है।40।

तोता बोला पहले उड़ना, बाद बोलना सिखलाना।
'बिल्ली आवे तो उड़ जाना', उड़ नही तो क्या कहना।41।

इस प्रकार प्रतिदिन झंझट से, तोता दूसरी ले आया।
तोती बोली अन्य लाये तो, बालक को मुझको देना।42।

बच्चा मेरा मेरे पास रह, तुम इसको सिखला सकती।
मै इसको नहीं दूंगा तुमको, तुम इसको नही पा सकती।43।

तोती दूसरी ले आए तो, उससे मन बहलाओजी।
मैं सिखलाऊ इसे बोलना, मम हक मुझको देओजी।44।

नही अधिकार तुम्हारा इस पर, मैं पूर्ण अधिकारी हूं।
यदि नही मानो राजाजी से, न्याय प्राप्त अधिकारी हूं।45।

बच्चे को लेकर चले दम्पति, उज्जैनी नगरी आए।
हर्षचन्द्र के न्यायालय में, उच्च स्थान बैठ जाए।46।

न्याय सभा का कार्य पूर्ण कर, नृपमन्त्री जाना चाहे।
हम भी न्याय कराने आये, कार्य हमारा निपटाए।47।

देखा मन्त्री कौन बोल रहा, मानव तो दिखता नहीं।
मानव भाषा में बोला शुक तब, खिड़की में बैठे यांही।48।

दृष्टि पड़ी तब राजाजी की, क्या मतभेद तुम्हारा है :
तोती बोली सुनलो भूपति, यह मतभेद हमारा है।49।

मैं सिखलाना चाहती बोली, मानव की इस बालक को।
ये सिखलाना चाहते उड़ना, विहाय में इस बालक को।50।

उड़ना तो अधिकार जन्मसिद्ध, हम लोगों का है ही है।
बोली सीख लेगा तो पितुवत्, नृप अधिकारी है ही है।51।

ये ले आए अन्य तोती, अपना मन बहलाने को।
अतः दिलाओ शुक तोते को, मानव बोल सिखाने को।52।

तोते को पूछा राजा ने, तुम क्या कहना चाहते हो।
पुत्र पर अधिकार पिता का, मैं नही देना चाहता हूं।53।

मेरे पास रहकर सिखलावे, मुझे कोई एतराज नहीं।
पर यह कहती पूर्ण रुप से, मेरा कोई अधिकार नहीं।54।

आप पूछते नाम पिता का, माता का पूछत नाही।
फसल खेत मालिक की होती, खेतों की हरगिज नाहीं।55।

राजा ने पूछा मन्त्री से बोलो, क्या निर्णय देना।
मन्त्री ने कहा आप स्वामी है, समाधान शुभ करना।56।

मेरी राय है कि तोते ने, दूसरी तोती लाया है।
उसके भी सन्तान होवेगी, इसे तोती को देना है।57।

नृप ने कहा मन्त्रीवर तुम भी,पक्ष गह
सही दलील तोते की ९, कि पुत्र

निर्णय सुनकर बच्चे को ले,तोता गगन
तोती हाय हाय कर रोती, नृप ने

तोती को समझाते मन्त्री, न्याय करा
मेरा निवेदन भी नहीं माना, अब

रुदन बन्द कर तोती बोली, होनहार नह
नृप से कहकर इस निर्णय को, दर्ज र

नृप की आज्ञा होने पर, दर्ज रजिस्ट
सवत मिती तारीख आदि सब, निर्णय

तोती चलकर शेष जिंदगी भगवद्भक्ति
पुण्य योग से वह ही तोती, सेठ की

चन्द्रा ने देखा पूरव भव दृश्य सामने
पुरुष सभी स्वार्थी होते मन में नि

इसी नगर के राजा ने सोलह वर्ष पहले
दिया फैसला अब मैं नृप को छकाऊ क

मात पिता भाई और भाभी चन्द्रा को मूर्च्छित
योग्य उपचार किया तब उनने जाग उठी

पूछा सबने क्या हो गया मौन रही कुछ नहीं कह
भाई भाभी के अति आग्रह से सन्देशा मां

मन नहीं लगता माताजी संसार स्वरुप को लखकर
त्याग नही सकती मै इसको मोह ममता का च

मेरा मन बहलाने हेतु आप सभी की यदि इच्छा
हो तो मंगा दे घोड़ो दस उनकी करके प

अश्वो का व्यापार नहीं है [illegible] ।
दो वर्षों के लिए [illegible] ।74।

सहस्त्र मोहरें प्रति [illegible] पाव ।
भेजे राजमहल में [illegible] नहीं आवे [illegible] ।75।

दो वर्षों मे नृप घोड़ियां के पैदा हुवे बछेरे ।
चन्द्रा के संकेतो पर भृत्यों ने उनको घेरे ।76।

कुपित होय मन्त्री को हुक्म दे चन्द्रा को बुलवाई ।
दास दासियो सहित पालकी मे चन्द्रा तब आई ।77।

विनय सहित बोली तब चन्द्रा देखो आप का न्याय ।
अमुक तिथि को किया आपने तोता तोती न्याय ।78।

देख फैसला स्तब्ध रहा नृप उसने कैसे जाना ।
भरी सभा के बीच में मेरा किया इसने अपमाना ।79।

बदला कैसे लिया जाय यह सोचन लगा राय ।
बिन अपराध दण्ड दूं कैसे युक्ति नहीं जम पाय ।80।

चिता से निर्जीव जले पर चिन्ता जीवित जलाती ।

नृप ने कहा मन्त्रीवर तुम भी,पक्ष गलत क्यों लेते हो।
सही दलील तोते की ९, कि पुत्र पिता का होता है ।58।

निर्णय सुनकर बच्चे को ले,तोता गगन में चला गया।
तोती हाय हाय कर रोती, नृप ने तोते का पक्ष लिया ।59।

तोती को समझाते मन्त्री, न्याय कराने आए थे।,
मेरा निवेदन भी नही माना, अब रोने से क्या होता ।60।

रुदन बन्द कर तोती बोली, होनहार नही टलती है।
नृप से कहकर इस निर्णय को, दर्ज रजिस्टर करनी है ।61।

नृप की आज्ञा होने पर, दर्ज रजिस्टर होता है।
सवत मिती तारीख आदि सब, निर्णय लिखा जाता है ।62।

तोती चलकर शेष जिंदगी भगवद्भक्ति करती है।
पुण्य योग से वह ही तोती, सेठ की बिटिया होती है ।63।

चन्द्रा ने देखा पूरव भव दृश्य सामने आया है।
पुरुष सभी स्वार्थी होते मन में निश्चय ठाया है ।64।

इसी नगर के राजा ने सोलह वर्ष पहले भाई।
दिया फैसला अब मै नृप को छकाऊ करके चतुराई ।65।

मात पिता भाई और भाभी चन्द्रा को मूर्च्छित देखा।
योग्य उपचार किया तब उनने जाग उठी चन्दर लेखा ।66।

पूछा सबने क्या हो गया मौन रही कुछ नहीं कहती।
भाई भाभी के अति आग्रह से सन्देशा मां को देती ।67।

मन नही लगता माताजी संसार स्वरुप को लखकर के।
त्याग नही सकती मै इसको मोह ममता का चक्कर है ।68।

मेरा मन वहलाने हेतु आप सभी की यदि इच्छा।
हो तो मंगा दे घोड़ो दस उनकी करके परोक्षा ।69।

पिता श्रीजी बोले विदेशी अपने नही अश्व का पार।
पर भाई भाभी की राय से मंगवाए होकर लाचार।70।

कम्बोज देश के अश्व मगाए स्वयं निरीक्षण करती है।
राजमहल की श्रोर भेजकर राजा का मन हरती है।71।

राजा ने पूछा मन्त्री से कौन सौदागर श्राया है।
पांच सात ये अश्व खरीदो शाभा बडे सवारी है।72।

नही सौदागर नगर सेठ की लड़की के ये अश्व।
आदर सहित बुलाया उसको क्रीत करन को अश्व।73।

अश्वों का व्यापार नही है तब मन्त्री उससे बोले।
दो वर्षो के लिए अश्व दो द्रव्य चाहे सो ले लेवो।74।

सहस्त्र मोहरे प्रति अश्व की तयकर घोड़े पांच।
भेजे राजमहल में कह कर तन नही आवे आंच।75।

दो वर्षो में नृप घोडयो के पैदा हुवे बछेरे।
चन्द्रा के संकेतो पर भृत्यों ने उनको घेरे।76।

कुपित होय मन्त्री को हुक्म दे चन्द्रा को बुलवाई।
दास दासियों सहित पालकी में चन्द्रा तब आई।77।

विनय सहित बोली तब चन्द्रा देखो आप का न्याय।
अमुक तिथि को किया आपने तोता तोती न्याय।78।

देख फैसला स्तब्ध रहा नृप उसने कैसे जाना।
भरी सभा के बीच में मेरा किया इसने अपमाना।79।

बदला कैसे लिया जाय यह सोचन लगा राय।
बिन अपराध दण्ड दू कैसे युक्ति नही जम पाय।80।

चिता से निर्जीव जले पर चिन्ता जीवित जलाती।

पाप से लक्ष्मी घटती है कहत कबीरा वाती ।81।

नृप को दुर्बल देख मन्त्री जी बोले इस प्रकार ।
कन्या है अति बुद्धि शालिनी मत करो अन्य विचार ।82।

यह कन्या तो राजमहल की शोभा वढ़ावन हार ।
राजा सोचे शादी करके लेसू बदला अपार ।83।

प्रजा के सुख दुख को जानतो नृपति गश्त लगावे ।
नगर सेठ के बाग मांही सखियां करे किलोले ।84।

इधर उधर की वाते करती चन्द्रा से वे बोली ।
लगन नृप के साथ यदि हो हमे न जाना भूली ।85।

तुम्हें कभी ना भूलूंगी पर भूप के साथे लग्न ।
आदर पाऊं खुशी मनाऊं धर्म ध्यान से मग्न 86।

यदि भूप नही आदर दे तो तस कर चरण धराऊं ।
धर्म ध्यान नृप नही करे तो घोड़ा बना नवाऊं ।87।

राजा सुनकर विस्मय पाया कैसी मान में डूबी ।
मै भी देखूं उसकी प्रतिज्ञा हाथ धराऊं तूम्वी ।88।

नगर सेठ को सहमत करके नृप से लग्न रचाया ।
तोरण आया वीद किन्तु चेहरा नही हुलसाया ।89।

नगर सेठ मन शंका आई कही गलती कर पाया ।
एक स्तम्भ पर महल मनोहर राजा ने वनवाया ।90।

पर्यकासन वैठ चन्द्राजी नमस्कार का ध्यान ।
इतने में तो आए राजा महलों के दरम्यान

स्वागत कर सन्मान देयकर चन्द्रा चरणो नमती ।
ठोकर मारी राजा ने तव उछल कूद वह

क्या अपराध हुवा है स्वामिन क्यों कोप यह कीना।
नयना झरती वोले चन्द्रा वस्त्र अश्रु से भीना।93।

सभा बीच में सती वृद में अपमानित जो कीना।
कोई न पूंछे सड़ती रहना घूंट शोक के पीना।94।

आजीजी करने पर भी राजा जब नहीं माना।
अशुभ कर्म निर्जरा हेतु तपस्या करना ठाना।95।

तपस्या के उद्यापन हेतु नृप से विनय कराई।
यदि नहिं मानो चरणोदक को पाऊं चन्द्रा राही।96।

राजाजी नहीं माने तव चन्द्रा चिन्तन करती।
चौकीदार के साथ पिता को सन्देशा वह करती।97।

कन्या आपकी बन्दी बन गई सरवर महल के अन्दर।
तात सहाई शीघ्र बनो तुम कर दो तुरन्त सुरग।98।

समान वय की कुछ सुन्दरिया रूप गुणों में उत्तम।
नृत्य सगीत की ज्ञाता होवे भूमि महल देवोपम।99।

प्रहर रात्रि के बाद नित्य ही नाच गान सगीत।
इन्द्र लोक सा दृश्य बनाया होकर निशंकित।100।

नगर निवासी आश्चर्यान्वित कहीं नजर नहीं आवे।
तीजे दिन योगिन मायावी चिमटा बजाती आवे।101।

रूप गुण सम्पन्न योगिनी अलख निरंजन बोले।
नमस्कार कर पूछे माता नृत्य भेद को खोले।102।

राजा ने तब सादर सविनय महलों में बुलवाया।
यह क्या होता नाच रंग हम देखने को मन भाया।103।

तीन लोक में घूम बताई इन्द्र लोक की बात।

पाप से लक्ष्मी घटती है कहत कवीरा वाती ।81।

नृप को दुर्बल देख मन्त्री जी बोले इस प्रकार ।
कन्या है अति बुद्धि शालिनी मत करो अन्य विचार ।82।

यह कन्या तो राजमहल की शोभा वढ़ावन हार ।
राजा सोचे शादी करके लेसूं बदला अपार ।83।

प्रजा के सुख दुख को जानने नृपति गश्त लगावे ।
नगर सेठ के बागां मांही सखियां करे किलोले ।84।

इधर उधर की वाते करती चन्द्रा से वे बोली ।
लगन नृप के साथ यदि हो हमें न जाना भूली ।85।

तुम्हें कभी ना भूलूंगी पर भूप के साथे लग्न ।
आदर पाऊं खुशी मनाऊं धर्म ध्यान में मग्न 86।

यदि भूप नही आदर दे तो तस कर चरण धराऊं ।
धर्म ध्यान नृप नही करे तो घोड़ा बना नवाऊं ।87।

राजा सुनकर विस्मय पाया कैसी मान मे डूबी ।
मै भी देखूं उसकी प्रतिज्ञा हाथ धराऊं तूम्बी ।88।

नगर सेठ को सहमत करके नृप से लग्न रचाया ।
तोरण आया वीद किन्तु चेहरा नही हुलसाया ।89।

नगर सेठ मन शंका आई कहीं गलती कर पाया ।
एक स्तम्भ पर महल मनोहर राजा ने वनवाया ।90।

पर्यकासन बैठ चन्द्राजी नमस्कार का ध्यान ।
इतने में तो आए राजा महलों के दरम्यान ।91।

स्वागत कर सन्मान देयकर चन्द्रा चरणो नमती ।
ठोकर मारी राजा ने तव उछल कूद वह पड़ती ।92।

ो बांधकर राजा को तब योगिन ने पहुंचाया ।
योगिन और इन्द्राणी रूप लख राजा सन्देह पायाजी ।116।

ान रुप योवन वय वाली चन्द्रा जैसी लगती ।
पर चन्द्रा तो बन्दी गृह में यहां वो कैसे आती जी ।117।

स दुसरे योगिन ने तव भगवा वस्त्र धारे ।
वीणा की झकार सुरीली श्रोता का मन मोहे जी ।118।

ज्जैनी की जनता सारी सुनकर विस्मित होती ।
छोटी उम्र रूप अति सुन्दर कैसे आई विरक्ति जी ।119।

सुनी अनुचर से नृप ने देखन को मन चाया ।
आदर सहित वुलवाया उसको सिंहासन-बिठलाया जी ।120।

करने से तारों पर अंगुली नाचन लागी ।
मन्त्र मुग्ध श्रोता की निद्रा बन्द होने पर जागी जी ।121।

आंखे हुई तब नृप को चन्द्रा जैसी लगती ।
रथा रूढ़ हो बन्दी गृह पे पहुंचा करके सख्ती जी ।'22।

के जाने पर दरबारी इधर उधर सब फैले ।
अवसर देख योगिन भी पहुंची सुरग द्वार से पहले जी ।123।

ो नीद वत सोई देखकर नृपति कसता व्यंग ।
सो रही हो महारानी जी उठी मोड़कर अग जी ।124।

देखकर भुपति बोला घोड़े बेच कर सोती ।
कोई आए जाए क्या मतलब कर्मो को है रोती ।125।

कौन आता है मेरे भाग्य खुले है आज ।
वाधा पड़ी नीद में तेरे खाना सोना दिन रात जी ।126।

है सब कृपा आपकी सुक्ष्म निगाह से देखे ।

शोभा वहां की अजब रसीली प्रकट कही नहीं जात ।104।

नृत्य गान से मोहित होकर इन्द्र कहे इन्द्राणी ।
इनमें ये जो सुन्दर देवी बने हमारी रानी ।105।

मना किया तब इन्द्राणी को देश निकाला दीना ।
सभी सखी सग मृत्यु लोक में वास उन्होंने कीना ।106।

नाच गान से मन बहलाती रहती है दिन रात ।
शून्य रात्रि में शब्द वहां के स्पष्ट सुनाई जात ।107।

मृत्यु लोक के नर - नारी की, वहां पहुच है नाहीं ।
कृपा आपकी हो जावे तो मुश्किल कुछ भी नाही ।108।

नृप के अति आग्रह करने पर योगिन सहमत होती ।
कहां भयकर विकट मार्ग है दहल जात है छाती जी ।109।

यदि दर्शन करना चाहो तो पहर रात्री के बाद ।
नगर निवासी द्वार बन्द हो चलना पट्टी बाध जी ।110।

सुरंग द्वार से ले गई नृप को पट्टी शीघ्र हटाई ।
निरुपन देखा दृश्य स्वर्ग सा नृप द्दग अचरज पाई जी ।111।

आजु बाजु सुन्दरियों के बीच इन्द्राणी सोहे ।
नृत्य गान से अन्य सुन्दरियां दृष्टा का मन मोहे जी ।112।

इन्द्राणी ने पुछा यहा पर गन्ध मनुज की आती ।
मना करने पर भी नृप आया ऐसा योगिन कहती जी ।113।

हाजिर करो सामने उसको सजा मिलेगी भारी ।
इन्द्राणी पग धोने सुन्दरी लाई जल की झारी जी ।114।

योगिन से कह कर राजा ने इन्द्राणी पग धोया ।
एक घूंट पीकर तक उसने झूठा भोजन खाया जी ।115।

मुझे न मालुम छोटी उम्र में इतने ज्ञानी आप ।
आयु अपेक्षा ज्ञान वृद्ध को छोटा कहना पाप जी ।139।

कल्पना आप नही कर सकते, नही सत्य के दर्शन ।
सदा भ्रम में फंसे रहते हो कैसे हो मन परसन जी ।140।

भ्रम यदि सत्य सिद्ध ना हो तो, खीझ क्रोध अरु शोक ।
दिव्य दृष्टि है सती आपकी कैसे जाने योग जी ।141।

जोगिन से क्या छिपा ? खुश रहो, हम जाते है राजन् ।
कही न जाओ दास बनाओ, मोह न करते राजन् जी ।142।

वार - वार ना करने पर भी, चरणोदक को पियो ।
खेद युक्त चितन करती यह नही उचित है किरिया जी ।143।

राजमहल में रहो आपकी आज्ञा को मानु‌गा ।
योगी कैसे रहे महल में नित्य कर्म में बाधा जी ।144।

आग्रह है यदि आप सभी का दर्शन तो हमे दे सकते ।
कहा सभी ने मान्य हमें है जो तुम रखते शरते जी ।145।

बुरा न माने आप कभी मम मुख से निकले गाली ।
मम आज्ञा बिन कही न जावे इच्छा पूर्णत. पाले जी ।146।

सभा सदो सह राजा ने तब बात योगिन की मानी ।
एक वार नित्य आती सभा में देखे चकोर चादनी जी ।147।

रत्नपुरी की रत्नवती सखिया सग वसन्त मनाती ।
माली ने पकड़ा वणिक पुत्र छिपकर सुनता था वाती जी ।148।

प्रस्तुत किया रत्नवती सन्मुख दण्ड इसे तुम देती ।
या राजा के पास ले जाऊ हिम्मत इसकी कैसी जी ।149।

थर-थर कम्पत देख वणिक को रत्नवती तब बोली ।
क्यों किया अपराध ? वणिक ने माफी मांगी जल्दी जी ।150।

मुझे बतावें किसे खोजते जो चाहे सो देवे जी । 27।

घूर-घूर कर देखे राजा चन्द्र लेखा तब बोली ।
मेरे पुण्य का उदय भूपति दृष्टि तन पर होती जी ।।28।

उदय पुण्य का अथवा पाप का मालूम होगा साथ ।
फिरा-फिरा कर देखन लागा दीवारों पर हाथ जी ।।129

चन्द्रा भी तब निकट पहुच कर हाथ फिराती जाती ।
पूछा नृप ने कहा मदद मैं कोष ढूढने करती जी ।।130।

नहीं खजाना गडा यहां पर चन्द्रलेखा तत्व बोली ।
मेरे रहते हाथ फिराते दीवारों पर बोले जी ।।131।

तेरे तन को तभी छुऊंगा आगे नृप नहीं बोले ।
चला गया नृप चन्द्रा जोगिन बनकर आई पहले जी ।।132।

पता किया वो चला नही कब जोगिन गई और आई ।
नृप के आने से पहले दरबारी बैठे आई जी ।।133।

क्या कोई विशेष बात थी मिटा भ्रम कुछ नाही ।
मन्त्री को सन्तोष हुआ तब जोगन भी मुस्काई जी ।।134।

सदा फंसे संसारी भ्रम में मिटा कहा मुस्काई ।
राजा ने जिज्ञासा की तब कौन गुरू पितु मांई जी ।।135।

बिलकुल बुद्धि हीन हो राजा संसारी का परिचय ।
पुछा जाता है लेकिन सन्यासी का क्या परिचय जी ।।136।

तत्व ज्ञान की चर्चा करते धर्म ध्यान ईश्वर की ।
उपदेशों का पालन करते जाने भूत भविष्य की ।।137।

योग्य समय पर उचित बात का पूरा पड़ा प्रभाव ।
लज्जित होकर चरण पकड़ कर कहता कर दो माफजी । 38।

मुझे न मालुम छोटी उम्र में इतने ज्ञानी आप ।
आयु अपेक्षा ज्ञान वृद्ध को छोटा कहना पाप जी ।139।

कल्पना आप नही कर सकते, नही सत्य के दर्शन ।
सदा भ्रम में फंसे रहते हो कैसे हो मन परसन जी ।140।

भ्रम यदि सत्य सिद्ध ना हो तो, खीझ क्रोध अरु शोक ।
दिव्य दृष्टि है सती आपकी कैसे जाने योग जी ।141।

जोगिन से क्या छिपा ? खुश रहो, हम जाते है राजन् ।
कही न जाओ दास बनाओ, मोह न करते राजन् जी ।142।

बार-बार ना करने पर भी, चरणोदक को पियो ।
खेद युक्त चितन करती यह नही उचित है किरिया जी ।143।

राजमहल में रहो आपकी आज्ञा को मानुंगा ।
योगी कैसे रहे महल मे नित्य कर्म में बाधा जी ।144।

आग्रह है यदि आप सभी का दर्शन् तो हमें दे सकते ।
कहा सभी ने मान्य हमें है जो तुम रखते शरते जी ।145।

बुरा न माने आप कभी मम मुख से निकले गाली ।
मम आज्ञा बिन कही न जावे इच्छा पूर्णत: पाले जी ।146।

सभा सदो सह राजा ने तब बात योगिन की मानी ।
एक बार नित्य आती सभा में देखे चकोर चादनी जी ।147।

रत्नपुरी की रत्नवती सखिया सग वसन्त मनाती ।
माली ने पकड़ा वणिक पुत्र छिपकर सुनता था बाती जी ।148।

प्रस्तुत किया रत्नवती सन्मुख दण्ड इसे तुम देती ।
या राजा के पास ले जाऊं हिम्मत इसकी कैसी जी ।149।

थर-थर कम्पत देख वणिक को रत्नवती तब बोली ।
क्यों किया अपराध ? वणिक ने माफी मांगी जल्दी जी ।150।

सोच रहा था रूप शौर्य का मेल मिलाऊं कैसे।
हर्षचन्द्र उज्जयनी का नृप वर्णन गाऊं कैसे जी ।151।

भोला है जाने दो इसको माली से वह बोली।
गम्भीर मुद्रा बना सखी संग महल मार्ग को चाली जी ।152।

मात-पिता ने सखियों से सब वणिक हाल को जाना।
रत्नवतीं मनोभाव जान मन्त्री को किया रवाना जी ।153।

उज्जयनी नृप हर्षचन्द को मन्त्री ने सन्देश।
देकर कहा रत्नपुरी नृप ने भेजी आपको भेट जी ।154।

यदि स्वीकार करे राजन तो चरण आपके रखता।
स्वीकृति सुनकर रत्नवती का चित्र सामने धरता जी ।155।

तन्मय होकर राजा देखे मन्त्री जी तब बोले।
यह बेजान असल सजीवनी जन-जन का मन मोहे जी ।156।

राजा सोचे बंधा हुआ हूं योगिन की शरतों से।
उसकी बिन इच्छा से इसको उत्तर दूं मैं कैसे जी ।157।

यद्यपि यह अनुपम है मन्त्री सोच समझ निर्णय दूंगा।
स्वीकार आपने कर लिया विश्राम बाद पूछ लूंगा जी ।158।

चिर प्रतीक्षा बाद वीणा का शब्द कान में गूंजा।
आशीश दे सिंहासन बैठी क्या दुविधा है राजा जी ।159।

अनुमान प्रमाण पैनी दृष्टि से चन्द्रलेखा ने आंका।
किसी सुन्दरी ने क्या राजन चित्त आपका बांधा जी ।160।

कुछ भी तुम से छिपा नहीं तुम मन की बाते जानी।
रत्नपुरी के मन्त्री ने शादी की स्वीकृति मांगी जी ।161।

स्वीकृति आपने दे दी होगी फिर मुझसे क्या पुछो।
निर्णय नहीं किया योगिन मन की बाते बूझो जी ।162।

राजन् आपका हृदय लालायित स्त्री रत्न पाने को।
इतना बड़ा अतः पुर तो भी तृप्ति नहीं क्या तुमको जी ।163।

तुम जैसे कामी पुरुषों को शत-शत वार धिक्कार है।
काम वासना पोषक नारी अधिकार नही स्वीकार जी ।164।

पतिव्रत पत्नी भी तो अपना पूर्ण अधिकार चाहती है।
अनेक रहते और बढ़ाना कैसे बात शोभती है जी ।165।

मैं तो वहां गया ही नाही मन्त्री ने यह भेट दी।
कर्तव्य से अपने गिर जाते यदि न भेट स्वीकार की। 66।

स्वीकृति निकल गई है योगिन अनायास ही मेरे से।
तो वचन पालते रहिये राजन हम चलते है डेरे पे ।167।

किसी उपाय से आप न जावे वचन भग मैं कर दू गा।
छोड़ सभी कुछ सकता हूं मैं प्रधान् निराश लौटा दू गा ।168।

वचन भग से आप यश होगा सोच समझ कर कार्य करो।
जग थूके तो सह लू गा मै किन्तु आप मत कोप करो ।169।

मेरे कारण अयश आपका यह कैसे होने दू मैं।
रत्नवती से लग्न रचा प्रण पालो यह आज्ञा दू मै ।170।

आवेश रोष में यदि न आज्ञा तो मम इच्छा पूर्ण करे।
मन्त्री को स्वीकृति मैं तब दू यदि रत्नपुरी आप चले ।171।

सहमत हो गई योगिन तब मन्त्री को नृप ने स्वीकृति दी।
मार्ग दर्शक मन्त्री के पीछे नृप सज्जित सेना चल दी ।172।

विशेष वस्त्र शृंगार सामग्री योगिन ने वीणा मेली।
मालव सीमा पार हुई तब उवड़-खाबड भूमि मिली ।173।

अश्व गज रथ पद सेना राजा भी थककर चूर हुए।
विस्तृत बाग कुछ दूर वापिका रुकने को मजबूर हुए ।174।

नृप आज्ञा से सेना ने वहां पड़ाव विश्राम लिया।
श्रम निवारण योगिन ने भी राजा को संकेत किया।175।

स्नान करन मैं जाती हूं राजा भी तैयार हुए।
तव सन्मुख मैं स्नान किम करूं कैसे निर्लज्ज आप हुए।176।

बहुत दूर है वापी यहां से फिर उस ओर गहन वन है।
रक्षा करने का विचार था क्योंकि भयानक खग पशु है।177।

महा मूर्ख एकान्त स्थान में सबसे बड़ा पुरुष का भय।
कह दी कैसी बात आपने सैनिक साथ रहो निर्भय।178।

हमरे तो वन भवन समाना एकांकी ही जाती हूं।
वीणा लेकर चली नहाने कह गई जल्दी आती हूं।179।

अंग रगड भभूत छुडाई उत्तम वस्त्रा शृंगार किया।
वीणा छिपाई गहन निकुज में अप्सरा रूप को धार लिया।180।

आशातीत समय लगने से राजा चिन्ता मग्न हुआ।
कही न डुबी वापी अन्दर वन चर प्राणी खा न गया।181।

असभ्य और बर्बर मानव भूत प्रेत कोई कष्ट न दे।
या फस गई कोई अन्य विपत में भूप चल दिया पैदल ही।182।

चिंतित राजा चला जा रहा योगिन का कहीं पता नही।
खोज कर रही चक्कर खाकर जगल ढूंढें जहां कही।183।

वृक्ष पत्र की आड से देवी नृप अधीरता निरख रही।
योग्य समय आकर्षित करने उसने छेड़ी स्वर लहरी।184।

शृंगार रस से सने मधुर स्वर आकर्षित नृप को करते।
देखा सुन्दर वाला गा रही नेत्र द्वय को वन्द किये।185।

गीत पूर्ण हुआ नेत्र खुले तव मन्त्र मुग्ध नृप को देखा।
अरे अजनवी कौन है तू निर्जन वन में क्यों आया।186।

पुछा नृप ने कौन सुन्दरी गीत किसे तुम सुना रही ।
पहले तुम अपना परिचय दो मेरी कथा विचित्र रही ।187।

परिचय जानो हेतु नृप ने अपना परिचय शीघ्र दिया ।
उज्जयनी नृप हर्ष चन्द हूं कर्म योग इस वन आया ।188।

हे राजन खेचर कन्या हूं बात प्रतिज्ञा थी मेरी ।
अपनी पीठ चढ़ाकर मुझको अश्ववत लगा फेरी ।189।

अपने हाथ पर मुझे चलावे चरणोदक जो पीवेगा ।
वही पुरुष मम पति बनेगा इस वन में मिल जावेगा ।190।

इस वार्ता की पिता श्री ने विद्या बल से जाना था ।
दो दिन पूर्व ही पिता श्री ने मुझे यहां पर छोड़ा था ।191।

क्रीडा को उत्सुक वन नृप ने कन्या से यो की बाते ।
यदि प्रतिज्ञा तोड़ सको तो अपन मनाए यहां राते ।192।

रूप गुण सम्पन्न अनेको विद्याधर लालायित थे ।
तभी प्रतिज्ञा भंग नही की उनके सन्मुख तुम क्या थे ।193।

हंसकर कन्या बोली राजन प्रतिज्ञा भंग नहीं होगी ।
तुम जाओ अपना मुंह लेकर कोई न कोई मिलेगा ही ।194।

अनुपम सुन्दरी खेचर कन्या भाग्य मेरा खुल जायेगा ।
ईर्ष्या उस व्यक्ति साथ हो जो इसके संग व्याहेगा ।195।

नृप ने पूछा क्या जीवन भर हेतु तुम्हारी प्रतिज्ञा है ।
नही विवाह होने के पूर्व तक ही मेरी ये प्रतिज्ञा है ।196।

इसके वाद बताओ कन्या क्या व्यवहार तुम्हारा है ।
तत्पश्चात साधारण नारीवत ही व्यवहार हमारा है ।197।

धर्म साधनावत दुष्कर्म में एकान्त वास सहायक है ।
किन्तु सामाजिक बन्धन ऐसे कर्माचरण में बाधक है ।198।

नृपचिते निर्जन वन मेरे इसके अलावा कोई नहीं।
व्यर्थ परम्पराओं में फसकर अवसर खोना उचित नहीं।199।

तर्क वितर्क से अप्सरा शर्ते पूरी करना सोच लिया।
साहस कर कन्या से नृप ने मन की बाते पूछ लिया।200।

अन्य किसी को इस रहस्य का पता नही लग पायेगा।
पशु पक्षी वापी पौधे तुम हम बिन को नही जानेगा।201।

वचन लिया कन्या से नृप ने क्योंकि अपच नारी होती।
तव सम्मति बिन नही कहूंगी क्योंकि अयश भारी होती।202।

त्रिया चरित्र पुरुवस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्य।
गुप्त जिसे हो रखना चाहती ब्रह्मान जाने कहां मनुष्य।।

अतः आपके मेरे सिवा कोई इसे नही जान सकेगा।
क्या घटना ये घटी घट ही घटने वाली जान सकेगा।203।

वचन ले आश्वस्त हुआ नृप शर्ते पूरी करने को।
आए निकट वापी को दोनो वापी फेरा खाने को।204।

आग्रह पूर्वक चरण पखाले चरणोदक सिर धार लिया।
इक इक हस्त पर चरण धरे वापी का चक्कर मार लिया।205।

दोनों घुटने मोडे नृप ने झुक के भूमि पर हाथ धरे।
पृष्ठ भाग पर अप्सरा बैठी वापी चक्कर पूर्ण किये।206।

गति मद जब पड़ जाती या घोड़ा थोड़ा रुक जाता।
अप्सरा ताड़ना तर्जन करती जैसे-तैसे चल पाता।207।

हाय-हाय इस कामदेव की महिमा विकट निराली है।
हर्षचन्द से लोक निद्य आचरण कराने वाली है।208।

प्रसन्न मुख नृप बोला सुन्दरी अब तो शीघ्र विवाह करो।
चलो कहा तव हंसी सुन्दरी क्यो तुम हसी स्पष्ट करो।209।

बात बनाई अप्सरा ने तब आप मिले मय भाग्य खुले ।
नही तो इस निर्जन वन में भील असभ्य से पाला पड़े ।210।

वापी देवता की साक्षी से, पति अपना स्वीकार किया ।
अन्य पुरुष मम भाई तात है, नृप ने भी स्वीकार किया ।211

अब अधीर मत हो वो राजन्, मैं तो तुम्हें समर्पित हूं ।
पति सयोग से पूर्व अवश्य ही, विद्या अनुमति लेती हूं ।212।

ले लो अनुमती यहां तुम्हारी, रुककर प्रतीक्षा करता हूं ।
शकित मात हो एकान्त चाहिये, जल्दो से आ मिलती हूं ।213।

मदास्मित से प्रेम जताकर, कहा इस समय जाओ आप ।
अनिच्छा भारी कदमों से, चला उधर नृप जहां पड़ाव ।214।

निकुंज में जाकर रोई कन्या, किए कर्म पर पश्चाताप ।
यदि नाही करती जिद्दी राजा, मन में बहुत बड़ा संताप ।2.5।

अप्सरा वेश वीणा में रखकर,जोगिन रूप को धार लिया ।
मन्द गति से पड़ाव पूर्व ही, संतप्त राजा दृष्टि पड़ा ।216।

बहुत आपने देरी करदी, प्रतीक्षा कर बैचेन हुआ ।
'मेरी' हसकर कहा योगिन से,राजन कुछ नही छिपा हुआ ।217।

मन्त्री बोला राजन अब तो, हो चुका काफी विश्राम ।
प्रस्थान आज्ञा राजा वोला, थोड़ी प्रतीक्षा करो प्रधान ।218।

विलम्ब देखकर योगिन आई, पूछा राजा क्यों देरी ।
कुछ नही अभी थकान मिटी नही,तन की या मन की तेरी ।219।

संकोचवश प्रस्थान् किया, पर पथ में नृप उदास रहा ।
देख-देख मुस्काती योगिन, नगर बाहर पडाव रहा ।220।

रत्नपुरी के महाराजा को, मन्त्री ने सन्देश दिया ।
स्वय पधारे उज्जैनी नृप, राजा ने सत्कार किया ।221।

विवाह तिथि और समय नियत कर सब तैयारी कर डाली।
हर्षचन्द्र नृप जान सजा, योगिन से प्रार्थना कर डाली।222।

योग भोग का मेल कहां नृप, हम तो यहीं ठहरते हैं।
एकान्त पा कहीं चले न जावे, ऐसा सन्देह करते है।223।

निश्चिन्त रहो नृप या तो मैं, जाना ही नहीं चाहूंगी।
अवश्य भेट करुंगी तुमसे, अगर रत्नपुरी छोडूंगी।224।

नगर निवासी से आदर पा, बरात लक्ष्य पर पहुंच रही।
रत्नवती भी सखियों के सग, विवाह मंडप में पहुंच रही।225।

शुभ लग्न में ब्याह रचा, दम्पति के मन हर्षित थे।
नगर-निवासी राजा रानी सजन सने ही प्रभुदित थे।226।

रत्नवती को सखियों ने ला, शय्या पर बिठलाया है।
हर्षचन्द्र भी सुखद कल्पना में डूबाउ तराया है।227।

इधर योगिन वेश बदल, रानी शृंगार सजाती है।
राज महल में पहुंच रत्नवती से मिलने कहलाती है।228।

रत्नवती ने तुरन्त रानी को, महलों में बुलवाया है।
आंखे चार होते ही रत्न के, मन में विस्मय छाया है।229।

स्वागत सत्कार तो दूर रहा, बैठन का भी कहा नहीं।
कौन कहां से आई हूं में, यह भी तुमने पूछा नहीं।230।

लज्जित होकर क्षमा मांग, आसन हेतु सकेत किया।
निकट बैठी रत्नवती के, उसका परिचय पूछ लिया।231।

तुम्हारे पति की पत्नि हूं मै चन्द्रलेखा है मेरा नाम।
आवश्यक कार्यवंश असमय में मैने दोना कष्ट तमाम।332।

उठकर स्वागत किया है शीघ्र ही पूछा आवश्यक क्या काम।
क्षमा चाहूंगी किन्तु विवश हुं रंग में भंग पड़े यह काम।234।

आप पधारे खुशियां छाई कैसा रंग में भग यह काम ।
नही बहन बात कुछ ऐसी जिससे रंग में भंग तमाम ।234।

स्पष्ट क्यों नहीं कहती जीजी तुमसे नहीं कह सकती मैं ।
माताजी को शीघ्र बुलाओ बात ही कुछ गम्भीर है ।235।

दासी भेज बुलाया मां को आकर चन्द्रा से गले लगी ।
कैसी है गम्भीरी बात यहां उज्जैनी से आन लगी ।236।

कुल परम्परानुसार हमारे कुलदेवी को पूजे बिना ।
नई रानी नहि चढे सेज राजा भी स्पर्श नही करता ।237।

पुरुष उतावले इन कामों में अतः शीघ्र में आई हूं ।
देवी रूष्ट हो अनिष्ट न कर दे यही जताने आई हूं ।238।

गम्भीर मुद्रा से कह चन्द्रा ने बात गम्भीर बनाई है ।
अब क्या हो ? पूछा रानी ने सुहाग रात आज आई है ।239।

भाग्य मेरा भी साथ जुड़ा है इच्छा फिर जैसी आपकी हो ।
बात ठीक उज्जैनी दूर क्या करे उचित सलाह कहो ।240।

रत्नवती के सपने टूटे चन्द्रा मोन तोड़ बोली ।
विश्वास न हो तो मालव पति से पूछ-ताछ निर्णय कर ले ।241।

अरे नही अविश्वास कैसे ! पर समस्या एक निराली है ।
मालव पति से कुलदेवी स्मृति कौन कराने वाली है ।242।

पति कल्याण की इच्छा से रत्नवती मौन तोड़ बोली ।
माने तो एक बात कहूं मां क्यो नही मानू मां बोली ।243।

चन्द्रा जी नृप की पूर्व पत्नि है इनकी बाते वे मानेगे ।
इन्हें ही क्यों नहीं भेजा जावे उनको ये समझा देगे ।244।

पुत्री बात सुन माता हर्षित सबने चन्द्रा को देखा ।
उनके सामने कैसे जाऊं यह कैसे है हो सकता ।245।

रानी बोली पति पास में पत्नी जावे क्या बाधा ।
कहीं कुपित वे हो जावे बिन आज्ञा आई यह बाधा ।246।

बात सम्भाली रत्नवती ने अनुग्रह करके तब बोली ।
वरदान होता है पति का कोप पत्नी के लिये समझ सहेली ।247।

मालव पति मालव प्रजा हेतु और मेरे अपने लिये सहो ।
यदि उन्हें कुछ हुआ कभी अपना क्या होगा यह तो कहो ।248।

चन्द्रा को चिन्ता मग्न और गम्भीर देख रानी बोली ।
पति कल्याण कामना हेतु अपना जीवन सुन भोली ।249।

उठो धर्म को पालो तुम जैसी तुम दोनों की इच्छा ।
प्रथम पहर सहज ही बीता नृप को करते प्रतीक्षा ।250।

रुम झुम की ध्वनि कानो सुन भूपति की तन्द्रा भंग हुई ।
सोचा रत्ना आती होगी दरवाजे पर टक टकी लगी ।251।

कसार थाल ले एक सुन्दरी आज्ञा अन्दर आने की ।
मांगी तब नृप ने सहर्ष उसे आज्ञा दी अन्दर आने की ।252।

अन्दर आ कुछ ठिठक कर नृप से सुन्दरी खडी हुई ।
कौन आप यो पुछा नृप ने तब सुन्दर यो बोल रही ।253।

रत्नवती की गुरूणी चन्द्रा और आप की चेरी हूं
स्वागत है विराजिये आप किन्तु असमय में आई क्यूं ।254।

कहां रत्नवती बैठी चन्द्रा उत्तरीय उसका खसक गया ।
लज्जा करके बोली राजन तनिक थाल पकड़ लेना ।255।

अपना उत्तरीय ठीक कर लूं थाल नृप ने जब पकड़ा ।
हाथ से अंगुली स्पर्श हुई राजा का वक्ष स्थल धड़का 256।

काम बाण से विहाल राजा सुन्दरी का मुख देख रहा ।
सोलह शृंगार से सजा हुआ चेहरा चम-चम चमक रहा ।257।

नख से शिख और शिख से नख तक देखा दृष्टि जमी रही ।
थाल हाथ में पकड़े नृप को देखत सुन्दरी बोल पड़ी ।258।

थाल भूमि पर रखना मत नृप वह अपवित्र हो जावेगा ।
आश्चर्यावित देख नृप को चन्द्रा ने शीघ्र ही समझाया ।259।

कुल देवी का प्रसाद है जो राजा लड़की परणेगा ।
गुरूजी का झुठा खाना पड़े नहो अनिष्ट हो जावेगा ।260।

प्रसाद खा आचमन कर, नृप ने उससे पुछ लिया ।
और क्या रिवाज तुम्हारे यहां का, चन्द्रा ने स्पष्ट कहा ।261।

व्याह के 6 माह बाद गुरु गौत्र पुजा होती है ।
तब तक वर यही रहेगा पति पत्नि मिलन तब होता है ।262।

यह अवधि बहुत लम्बी है मै तो चन्द्रा बीच बोल उठी ।
आज रात्री को हो बैचेन यो कह उठ चलने को लागी ।263।

परिणाम जो होना वही हुआ हो गई गर्भवती चन्द्रा ।
बोली हो उदास मुंह दिखाने लायक नही रही राजा ।264।

क्यों ! गर्भवती मै हो गई बच्चा आपका पल रहा ।
रूदन कर रही हिचकियां बंध गई अश्रुधारा बह रही ।265।

घबराओ मत चन्द्रा अब तुम उज्जैनी शीघ्र चले आना ।
परिणीता रानी की भाति रख लूंगा तुम्हे कहे राजा ।266।

आप भूप है अनेक रानियां राज्य अनेको कारज है ।
मुझे कैसे पहचानोगे बस मुझे यही एक अचरज है ।267।

अरे-अरे तुम क्या कहती हो इतने दिन तक सुख भोगा ।
उसे कैसे भूलूंगा चन्द्रा ऐसा कभी नहीं हो सकता ।268।

अपनी सभी रानियों की मै स्मृति रख सम्मानित करता ।
वे तो सब नृप कन्याएं है दासी को कौन याद रखता ।269।

नहीं तुम्हारे भाव गलत है अपने वचन का मैं पक्का ।
फिर भी यदि तुम चाहो तो सन्तोष हेतु वस्तु देता ।270।

नही जरूरत मुझे निशानी केवल पुत्र हेतु पहिचान ।
उसे स्वीकारने बाद मुझे जावो भूल या देवो निकाल ।271।

नही नही तुम्हें क्यों भुलू मेरे साथ महल रहना ।
ले लो नामांकित मुद्रिका और मोतियों का गहना ।272।

चिन्ह प्राप्त कर प्रसन्न हुई और रात बिताई नृप के पास ।
अब यहां रहना व्यर्थ समझ वह पहुची पिताश्री के पास ।273।

मात-पिता के पास चन्द्रा ने वर्णन सारा वृत किया ।
किस तरह प्रतिज्ञा पूर्ण की स्मृति चिन्ह भी दिखा दिया ।274।

हर्षित होकर माता-पिता ने पुत्री को शाबासी दी ।
भाई-भौजाई सग दो दिन रह एक स्तभ महल चल दी ।275।

जोगिन अप्सरा रानी वेष वीणा में वस्तुए गुप्त रखी ।
रत्नवती नृप रानी सब ही उसकी प्रतीक्षा करती रही ।276।

दिवस दूसरे चन्द्रलेखा ने पहरेदार से बाते की ।
पुछा उसने कहा मौन था कुछ कार्यो में लगी रही ।277।

इस तरह बात का क्रम चलते सैनिक ने तब गौर किया ।
चन्द्रा का उदर बढ़ते देखा तो अचरज मे वह डूब गया ।278।

चन्द्रा ने झिड़ककर कहा उसे क्यों घूर-घूर कर देख रहा ।
गर्भ स्थित मेरे शिशु को क्यों व्यर्थ नजर लगाय रहा ।279।

सैनिक को कानों विश्वास नही अनायास ही पूछा क्या ।
गर्भवती हूं चन्द्रा बोली कम सुनाई देता है क्या ।2

आकाश से जैसे गिर पड़ा पैर तले भूमि खिसकी ।
सजग पहरा देता हूं मै धड़कन लगी छाती

दिये दिखाई प्राण सकट में कैसे हो गई अनहोनी ।
अधेरा छाया चक्कर आए नष्ट्र-भ्रष्ट्र अक्कल हो गई ।282।

सिर पकड क्यों बैठा मूरख पटरानी से जा कहे दे ।
चन्दा गर्भवती हो गई है यह खबर जाहिर कर दे ।283।

इस स्थिति मे अन्य स्त्रियें अपनी वात छिपाती है ।
त्रिया चरित्र कापता न लगता जाहिर करने कहती है ।284।

विचाराधीन देख सैनिक को चन्द्रा बोली डांट डपटकर ।
जाता क्यों नही पटरानी को शुभ सन्देश सुना जाकर ।285।

विवश होकर चला सिपाही ताला बन्द किया उसने ।
दोष हो न हो दण्ड मिलेगा लगा अनेक कल्पना करने ।286।

चन्दा ने क्या गडवड़ की और मेरी सुख रही हे जान ।
शुभ समाचार है यह कैसा मेरे लिये अशुभ ही जान 287।

अहापोह करता वह पहुचा पटरानी ने व्यग कसा ।
रानी चन्द्रलेखा की कैसी बनी हुई है मनोदशा ।288।

जी जी अवकवाया सैनिक उससे कुछ कहते न बना ।
इतने में तो अन्य रानिया आई वहा पर जो भी सुना ।289।

जी जी क्यो करते हो सैनिक साफ बात क्यो नही कहते हो ।
जी कुछ समाचार ही ऐसा कहलाया है रानी जी ने ।290।

'मै गर्भवती हूं' इन शब्दों को सैनिक कह डाला जल्दी ।
विश्वास हुआ नही पटरानी को क्या कहते डाटा रानी ।291।

साहस से सैनिक बोला यह समाचार देने भेजा ।
असम्भव ऐसा नहीं हो सकता पटरानी मुख से निकला ।292।

साफ-साफ बतालाओ सैनिक राज यहा क्या छिपा हुआ ।
क्या जानू मैं राज रानी का नहीं तुम्हे कहना होगा ।293।

मुझे कुछ नहीं मालूम रानी मैं हूं पूर्ण तरह निर्दोष ।
चन्द्रा ने कहलाया है तो इसमें इसका क्या है दोष ।294।

पटरानी के शब्दों से सैनिक शीघ्र प्राण की खैर ।
मनाता हुआ अभिवादनकर वह लौटा स्तंभ महल की ओर ।295।

हास्य व्यंग कर रही रानियें आपस में करती है बात ।
पति के अभाव में गर्भ रहा यह कैसी चमत्कार की बात ।296।

कोई कहती देव माया तो कोई पुरुष माया कहती ।
राजा की भी भूल रही वह कैसी कुलक्षणी निकली ।297।

पहले तो पटरानी जी ने इन बातों में रस लिया ।
मर्यादा से बात बढ़ी तब डांट डपट कर चुप्प किया ।298।

कुछ भी हो चन्द्रा का निर्णय भूपति स्वयं कर लेगे ।
हमें चाहिये इस घटना की सूचना उन्हे भिजा देगे ।299।

पटरानी ने भेजा पत्र दूत के साथ भूप के पास ।
पत्र पढ़कर लगे फड़कने होंठ हो गई आखे लाल ।300।

जाने की दूत को आज्ञा दे नृप डूबा गहन विचारों में ।
चन्द्रा का गर्भ किम् सभव हो परिणाम सौतिया डांहों में ।301।

पत्र लिखावठ पटरानी सन्देह को अवकाश नहीं ।
क्रोध आया चन्द्रा के ऊपर कुलटा व्याभिचारिजी कही ।302।

नगर में फैली कही बात तो अपयश मेरा भी होगा ।
अतः शीघ्र ही उज्जैनी जा निर्णय करना ही होगा ।303।

मन ही मन कल्पना की तो छः माह पूर्ण हुवे जाने ।
जाकर शीघ्र ही रत्नपुरी के नृप से पुछा राजा ने ।304।

कहिये राजन किस गोत्रज की पूजा मुझे यहां करनी है ।
लाल वदन लख उठ खड़ा हो कहा विराजिये आसन है ।305।

कैसी गौत्रज पूजा हमारे गौत्रज वोत्रज कोई नहीं ।
तो छ माह तक क्यों आपने रोका हमको कही यही ।306।

मैने ? हा आपने क्या मै मूर्ख था छः महिने तक पड़ा रहा ।
कहते-कहते हर्षचन्द्र के ललाट तीन सल पड़ा रहा ।307।

आश्चर्य चकित था रत्नपुरी नृप पूछा किसने बात कही ।
रत्नवती की गुरुणी चन्द्रा कैसी गुरुणी स्पष्ट कहो ।308।

सारी घटना कही भूप ने तन सम्पर्क छिपाया है ।
कोई धूर्त स्त्री से आपने राजन धोखा खाया है ।309।

यदि धूर्त स्त्री प्रपच था तो छः महिने क्यों रोका ।
जाने की आज्ञा दे देते तो उज्जैन चला जाता ।310।

आप भी कैसी बाते करते किसे जाने का कहता कौन ।
आप जवाई उज्जैनी नृप इस विषय मै हम थे मौन ।311।

बात समझ में आई नृप के बोले कैसे मूरख बने ।
चित आपका लगा यहां पर समझे हम भाग्यवान बने ।312।

ठीक-ठीक जो हुआ हो गया अब जाने की आज्ञा दें ।
आज्ञा देने वाला कौन मैं आपकी आज्ञा शीश धरें ।313।

तो ठीक है शीघ्राति-शीघ्र छुट्टी मुझे यहां से विदा करे ।
जैसी आपकी इच्छा सुनकर हर्षचन्द्र निज कक्ष चले ।314।

रत्नपुरी नृप महलों में जा रानी पुत्री को बात सुना ।
पूछा धूर्ता चन्द्रा कौन थी । उज्जैनी नृप रानी कहा ।315।

वड़ी धूर्त निकली वह रानी सबको मूर्ख वनाय गई ।
आप रुष्ट क्यों ? रुष्ट्र क्यों नही राजा मुझ पर वरस पड़ा ।316।

पहले तो समझी नही रानी कि पति पत्नी को जान न सके ।
दूसरी के सन्मुख एक स्त्री दूसरे को अपना पति वना दे ।317।

बात और कोई होगी और वे आप पर बरस पड़े ।
क्यों बेटी कितने दिन हो गये चन्द्रा नहीं दिखाई पड़ी ।318।

चार पांच महिने हो गये रानी तब मुस्करा बोली ।
परिहास है यह पति पत्नी का आप व्यर्थ चिन्ता में पड़े ।3 9।

पति पत्नि को ना पहिचाने यह कैसे हो सकता है ।
तब राजा आप पर नहीं बरसे जब ड़ेढ दो महिने रात रही ।320।

बुद्धिमती है चन्द्रलेखा सहसा नृप मुख से निकल पड़ा ।
शीघ्र तैयारी करे देवी जी पुत्री बिदाई करनी है ।32'।

सैनिक आतुर परिवार से मिलने नृप चन्द्रा का निर्णय करने ।
रत्नपुरी के राजा रानी रत्नवती की विदाई करने ।322।

हर्षाश्रु के साथ विदा दी मात - पिता ने पुत्री को ।
पहुंची नगर बाह्य प्रेम से विदाई हर्षचन्द्र नृप को ।323।

विछोह की उदासी दूर हुई नहीं चंदेरी दूत आकर बोला ।
जितशत्रु सेना सह आये नगर बाहर पडाव डाला ।324।

कारण पूछा तब कहा दूत ने रत्नवती से शादी करने ।
वह तो हो चुकी सुन बोला तो आना हमारा व्यर्थ रहा ।324।

खैर मै जाकर स्वामी अपने को सारा हाल बता दू गा ।
रत्नपुरी नृप सोचे जितशत्रु इस अपमान का बदला लेगा ।326।

दूत से विवाह के समाचार सुन जितशत्रु आगबबूल हुआ ।
उसका यह साहस मुझसे धोखा देखू यह कैसा काम हुआ ।327।

कुछ सुभट साथ ले जितशत्रु दरबार रत्न के पहुंच गया ।
आइये राजन विराजये यो मुस्क'ता राजा समक्ष गया ।328।

पुछा क्या सत्य है कि रत्नवती का व्याह हुआ ।
और स्मृति दिलाई कि आपने मुझसे व्याह का वचन दिया ।329।

कथन आपका सत्य है और दिये वचन की स्मृति है।
तब क्यों धोखा मेरे साथ नृप विवशता बतलाई है।330।

क्या विवशता पुत्री का हट व्यर्थ बहाने बना रहे।
कुशलता इसी में है कि राजन रत्नवती मेरे हाथ लगे।331।

विवाह हो चुका अब सम्भव नही जितशत्रु क्रोधित बोला।
चाहिये मुझे रत्नवती ही राजा तब भयभीत हुआ।332।

दशा देख नृप की तब मन्त्री नम्र मधुर शब्दों बोले।
क्रोध छोड़ कुछ समय दीजिये कुछ भी समाधान निकले।333।

चार दिन में नहीं मिली तो ईंट से ईंट बजा दूंगा।
चला गया सन्नाटा छाया शकित युद्ध अवश्य होगा।334।

नृप को युद्ध का भय नही पर राज्य विनाश की चिंता थी।
आंखों आगे अधेरा छाया नृशस व्यवहार कल्पना भी।335।

मन्त्री बोला चिंता से आपत्ति सौ गुनी बढ जावे।
किन्तु किया क्या जाय मन्त्री जी युद्ध बिना वह नही माने।336।

युद्ध अवश्यभावी है पर विवेक से सर्वनाश टलता।
समय मागा तो कोई योजना या चन्देरी नृप टलना।337।

योजना यह कि एक दूत उज्जैनी नृप पासे जावे।
उसकी मदद से अपने राज्य की शक्ति कई गुनी हो जावे।338।

ठीक आपकी योजना है वे अब उज्जैनी पहुंचे होगे।
शीघ्र लौटकर इतनी जल्दी वे यहां क्या आय सकेगें।339।

यदि नहीं आ पाये तो समय और मांग लगे।
क्या चन्देरी नृप समय वक्शन को राजी हो जावेगें।340।

क्रोधी और जिद्दी के लिये तो मधुर शब्द अचुक औषध।
अपन भी युद्ध तैय्यारी कर ले करियो दाव भी जावे लग।341।

निराश बैठने से तो राजन चिंता निराशा बढ़ती है।
जैसी इच्छा हो करो मन्त्री भ्रमित बुद्धि मम होती है ।342।

प्रधान ने स्वीकृति लेकर विश्वास पात्र दूत भेजा।
सारी स्थिति बतला कहना सेना सहित आओ राजा ।343।

सेनापती को बुला कहा तैयारी युद्ध की करना है।
जैसी आपकी इच्छा इधर वह शान्ति प्रार्थना करता है ।344।

हर्षचन्द्र रवाना होकर शिविर स्थल पर आया है।
योगिन खोजते मिली नही तब नृप का दिल भर आया ।345।

सरदार लगे नृप समझाने महाराज योगियों का है क्या।
योगिन कही रम गई होगी चल दी जिधर मन में आया ।346।

सरदारों ! उसने वचन दिया कि बिना मिले नहीं जाऊंगी।
अच्छी तरह उसे ढूंढों वह यही कही रमती होगी ।347।

होती तो मिलती योगिन निराशा हाथ लगी केवल।
आगे चले वापी आई तब रोका उसने अपना रथ ।348।

तैराको सैनिकों से वापी वन कोना ढुंढवाया।
किन्तु अप्सरा नही मिली, नृप को बहुत रंज आया ।349।

सर्वाधिक दुःख तब होता, उस हेतु निन्दनीय कार्य करे।
फिर वह वस्तु नही मिले, तो नृप की ऐसी दशा बने ।350।

हजारों का शासक राजा, अप्सरा का क्रीत दास बना।
फिर भी अप्सरा नहीं मिली, चरणोदक पीया अश्व बना ।351।

दुख के तीव्र आवेग में वह, हाथ पैर को पटक रहा।
स्मरण कर उस घटना को, निज हाथ शीश पर मार रहा ।352।

लाख समझाया समझ न पाया, वापी किनारे बैठ गया।
रत्नपुरी का दूत आया, सेवक ने सन्देश दिया ।353।

'महाराज ने आपको अभी बुलाया' यो दूत ने अर्ज किया।
नहीं जाने कोई चोरी किया, माल लुटा महाराजा का ।354।

सन्न रह गया दूत उसे, ऐसे उत्तर की आश न थी।
क ा हो गया महाराजाजी को, किन्तु उसे कोई आस न थी ।355।

कहा आपसे राजाजी को, कार्य बहुत आवश्यक है।
यहां से शीघ्र चले जाओ तुम, हमें उनसे कोई कार्य नही ।356।

चला जाऊंगा किन्तु आपकी, मर्यादा नहीं सुरक्षित है।
क्या बक-बक करते हो, राजन् मेरा कथन उचित ही है ।357।

मर्यादा कौन चुनौती देता, चदेरी नरेश जित शत्रु।
दूत मुझे स्पष्ट कहो, बिगाड़े क्या मेरा जित शत्रु ।358।

पूर्ण वृत्त से परिचित कर, कहा दूत ने तब नृप से।
रत्नपुरी सुरक्षित होगी, निश्चित आप सहायता से ।359।

हर्ष ने कहा चलो हम, सब वापस अब चलते है।
रत्नवती को उज्जैनी भेज, चदेरी नृप से निपटते हैं ।360।

सरदारों के कथन पर, हर्षचन्द तब यों बोला।
क्यों ! वह रत्नवती को ही, ले जा सकता है क्या भोला ।361।

नही, किन्तु युक्ति भी होती, ऐसा किया जाय पर क्यों ?
अभी भाग्य से अप्सरा, योगिन भूपति आप चुके हैं ।362।

सरदारों को बात मान, रत्ना को उज्जैनी भेजा।
चतुरगिनी सेना के साथ, भूपति रत्नपुरी पहूंचा ।363।

दोनों भूप विचार विमर्श कर, युद्ध के लिए तैयार हुए।
चल रही तैयारी जोर से पुरजन भी तैयार हुए ।364।

यद्यपि जित शत्रु ने समय दिया, किन्तु चुप वह नहीं बैठा।
गुप्तचरों से ज्ञात हुआ कि हर्षचन्द्र भी आ पहुंचा ।365।

युद्ध तैयारी हो रही नगर में, जित शत्रु निसहाय कर न सका ।
अभिवादन करते रत्नपुरी के, दूत को उसने देखा ।366।

कहा दूत ने राजन मेरे, स्वामी ने कहलाया है ।
छः महीने पहिले ही मैने, रत्नवती को व्याहा है ।367।

उज्छैनी नृप हर्षचन्द्र की, वह तो हो चुकी पत्नी ।
किसी उपाय से राजन अब तो, वह दी छीना जा सकती ।368।

व्यंग पूर्वक पूछा तेरे स्वामी के, और कुछ कहना है ।
अपना हट त्याग दें नही तो, दोनों रूप में स्वागत है ।369।

मित्र रुप में शत्रु रुप में, जैसी आपकी इच्छा हो ।
वचन भग करने वाले के, साथ मित्रता कैसी हो ।370।

तो फिर अच्छा यही होयगा, आप यही से लौट पड़े ।
यदि नही तो युद्ध भूमि में, अपमानित ही होना पड़े ।371।

जित शत्रु बोला कहो स्वामी से, युद्ध भूमि में चरण धरे ।
युद्ध छिड़ा भयंकर हार तो, जित शत्रु को वरण करे ।372।

मैदान छोड़ भागा जित शत्रु, सेना का साहस टूट गया ।
पैर उखड़ गये हथियार डाले तभी युद्ध भी बन्द हुआ ।373।

विजय दुंदुभी बजी महल में, लौटे दोनों ही राजा ।
हर्षचन्द्र ने तब उज्जैनी, जाने की व्यक्त करी इच्छा 374।

वर्षा ऋतु प्रारम्भ हुई राजन् और मार्ग अवरुद्ध हुए ।
जाने की शीघ्रता थी किन्तु, विपरीत प्रकृति से रुद्ध हुए ।375।

एक स्तम्भ महल में चन्द्रा, सुख पूर्वक रक्षा करता ।
कुप्रभाव पड़े गर्भ पर, वह ऐसा कार्य नही करती ।376।

दिन भर पहरेदार से वाते, सुबह शाम भगवान भजन ।
खान-पान और रहन-सहन, सात्विक थे शुद्ध वने तन मन ।377।

शुभ संस्कार पड़े बालक पर आदर्श मां की भांति वह ।
अपना जीवन आदर्श रख रही सती मदालसा भांति वह ।378।

शरद पूर्णिमा शुभ मुहूर्त में सुन्दर बालक प्रसव किया ।
लखकर सुन्दर मुख बालक का मां का मन आनन्द हुआ ।379।

पति स्मरण पर अश्रु टपके किन्तु उसे भूली चन्द्रा ।
प्रसव काल कर्तव्य पालन में तन मन से लग गई चन्द्रा ।380।

प्रातः पहरेदार से बोली पटरानी को सन्देश कहो ।
पुत्र जन्म का उसने जाकर मगलमय सन्देश कहा ।381।

समाचार सुन अन्य रानियें द्विविध कल्पना करती है ।
कुलक्षणी समझ चन्द्रा को राजा कहीं दण्ड नही दे ।382।

यदि पुत्र स्वीकार किया तो मान बढेगा चन्द्रा का ।
पूर्व सरीखा नही रहेगा हम पर प्रेम पृथ्वी पति का ।383।

प्रथम कल्पना का निश्चय कर द्वितीय को उनने गौण किया ।
अपमानित होगी चन्द्रा यह विश्वास हृदय मे दृढ़ किया ।384।

सारा नगर उस पर झुकेगा कैसी चमत्कारिक चन्द्रा ।
पटरानी ने ऐसा सोच इक व्यंग पत्र नृप को भेजा ।385।

प्राणनाथ ! यह जान आपको अवश्य प्रसन्नता होवेगी ।
पुत्र को जन्म दिया चन्द्रा ने आपकी अनुपस्थिति में भी ।386।

गूंज उठा इक स्तम्भ महल किलकारी से नव वालक की ।
आप निछावर होगी हृदय को पवित्र करेगा बालक भी ।387।

इस चमत्कार से आप श्री का हृदय प्रभावित होगा ही ।
हमें विश्वास है शीघ्र आवेगे शिशु गोद खेलेगा ही ।388।

आभार मानती हम वालक का आप शीघ्र दर्शन देगे ।
पुत्र का अग्रिम नमन स्वीकारे विशेष और क्या लिखेगे ।389।

दूत को समझा भेजा यह पता भूप के हाथ ही दें ।
जैसे तैसे रत्नपुरी पहुंचा क्योंकि मार्ग में दलदल थे ।390।

पत्रा पढ़कर हर्षचन्द्र विस्मय सागर में डूब गया ।
दूत को जाने की अनुमति दे रत्नपुरी नृप पे पहुंचा ।391।

विदा कीजिए नृप बोला मैं रोकना नही चाहता हूं ।
किन्तु मार्ग अवरूद पड़े है इसी चिन्ता में रमता हूं ।392।

मार्ग सुगम हो या दुर्गम जाना अवश्य पड़े राजन् ।
विशेष कार्य क्या चलूं साथ ! नही आज्ञा दे देवो राजन ।393।

कार्य गम्भीर जान नृप ने रोकना उचित नहीं समझा ।
विदा लेकर चला भूप उद्यान वापिका मन समझा ।394।

अप्सरा योगिन मिली नही पर वह चन्द्रा क्यों नहीं आई ।
कैसो धूर्त निकली वह यह बात समझ में नही आई ।395।

एक स्तम्भ महल की चन्द्रा कैसा कमाल किया उसने ।
एकान्तवास में पुत्र जन्म दे विस्मय हाल्क किया उसने ।396।

चकराया मस्तक राजा का विचार करना बन्द किया ।
प्रकृति की शोभा लखते उज्जैनी शहर नजदीक किया ।397।

महल समक्ष पहुंचते ही दासी दास रानिया आई ।
स्वागत कर सबने राजा का मन में अति ही हर्षाई ।398।

रत्नवती को देख रानी बीच नृप की दृष्टि लगी रही ।
उसके महल में पहुंचा तब स्वागत करके वह खड़ी रही ।399।

मुझे तुमसे ऐसी आशा स्वप्न में नही थी रत्नवती ।
सुनकर रत्नवती चौकी किस कारण शब्द कहे भूपति ।400।

खूब मूर्ख बनाया मुझको सुन रत्नवती बोली मैने ।
सब तुम्हारी साजिश थी और नही तो फिर किसने ।401।

आश्चर्यान्वित हो रत्ना बोली क्या किया स्वामी मैने।
किसी और को गुरुणी बनाकर मेरे पास भेजा तुने।402।

छः महीने तक रोक वहां पर सूरत नही दिखाई थी।
मैने कुछ नही किया स्वामी कौन कसार थाल ले आई थी।403।

याद आया तब रत्नवती को मुस्कराकर वह बोली।
अब समझी आपके विनोद को वह तो चन्द्रा थी भोली।404।

पूर्व पत्नि संग आप रमे और दोषारोपण मुझ पर दे।
हम सवको मूर्ख वनाया आपने और छुपे रूस्तम निकले।405।

कैसी मेरी पत्नी रत्ना सब बाते मुझे स्पष्ट कहो।
जानती नही मै तो उसे मै क्या बताऊं नाथ अहो।406।

तुम्हारे महल में वह कैसे आई विस्मय से नृप ने पूछा।
तो क्या आप भी नही जानते साश्चर्य रत्ना ने पूछा।407।

हां सच कहता रत्नवती मैने तुम्हारी गुरूणी उसे समझा।
मुझे आपकी पूर्व पत्नी कह आपको उसने कहा ऐसा।408।

नृप ने आग्रह किया रत्नवती पूरी बात सुना दो तुम।
राजन आपके ख्यालों में डूबे अपने कक्ष में बैठे हम।409।

उसने आकर कहा मुझे मै राजा की पूर्व पत्नी हूं।
उज्जैनी से आई शीघ्र मेरा नाम चन्द्रलेखा है।410।

माता के समक्ष कहा उसने कुलदेवी की पूजा के बाद।
नई रानी पति से मिलती यह बात दिलाई उसने याद।411।

नही तो कुलदेवी रुष्ट होयकर कहीं अनिष्ट ना कर डाले।
मेरी राय पर मा ने कहा कि वही नृप को समझा डाले।4 2।

यही बात हम नही जानती कि उसने आप से क्या कहा।
अब आप वतावे ! राजा वोला उसने आकर हमसे कहा।4,3।

रत्नवती की गुरुणी चन्द्रा कुल धर्म यहां का ऐसा है।
छः महिने के बाद गोत्र की पूजा करने जैसा है।414।

तभी आप जा सकते है और रत्नवती से मिल सकते।
मैने विश्वास किया उस पर कि उसे यहां भेजा तुमने।415।

शरारत पूर्ण शब्दों में बोली रत्नवती तब राजा से ।
विश्वास किया था तभी आपके पास रही वह रातों से ।416।

आप उसे निकाल न देवे यदि अविश्वास किया होता ।
लज्जा से मुख लाल हुआ कि रहस्य पकड़ा गया होता ।417।

बात बदल रत्नवती से नृप ने पूछा सत्य बताओ तुम ।
चन्द्रलेखा के पुत्र जन्म की बात गलत है अथवा सच ।4'8।

क्यों राजन आपको पटरानी का पत्र मिला था याकि नांहि ।
पत्र मिला व्यग भरा वह निर्णय कर सका मैं नाहि ।419।

अतः रत्नवती अब मैं तुमसे सब बात जानना चाहता हूं ।
बात सत्य है पुत्र जन्म की लेकिन कैसे हो सकती ।420।

क्या तुमने उसकी बदनामी की अब तक कोई बात सुनी ।
नही राजन मैने अब तक उसके विरुद्ध कुछ नही सुनी ।421।

तो फिर किसका पुत्र है कुछ रहस्य समझ में नही आया ।
स्वामी आपका है और किसका ! कैसे समझ में नही आया ।422।

मैं तो रत्नपुरी मे ...... आपसे दस महिने पहले मिली थी वह ।
यह कैसे सम्भव हो सकता इक स्तम्भ महल मे बन्दी वह ।423।

स्वामी बुरा न मानें तो एक बात मै करना चाहती हूं ।
बहिन चन्द्रलेखा के चरित्र पर सन्देह व्यर्थ समझती हू ।424।

नही जानती तुम चन्द्रा को फिर भी बहुत आदर रखती ।
है वह बड़ी अभिमानिनी उस महल मे फल को भोग रही ।425।

अपने बुद्धि बल के आगे पुरुष को कुछ नही समझती है ।
पति को अपना दास बना अधिकार जमाना चाहती है ।426।

ऐसी को तुम सती कह रही क्या रहस्य पर्दाफाश करूं ।
सब आप उचित ही करेगे स्वामी ऐसी मै अरदास करूं ।427।

निजी कक्ष में आकर राजा अनेक योजना बना रहा ।
आंखों में बस नींद नही थी सारी रात विचार रहा ।428।

रानियों ने स्वागत किया किंतु मुस्कान में उनके व्यंग भरा ।
बुरा समझेगी चन्द्रा को इसलिये रत्न के कक्ष गया ।429।

किंतु सती वह उसे समझती पुत्र भी मेरा बता दिया ।
कहीं रत्नवती चन्द्रा मिली नही है पता किया ।430।

कैसे वह मिल सकती वह तो स्तम्भ महल में बंदी है ।
किंतु रत्नपुरी में मिलने वाली का नाम चन्द्रा ही तो है ।431।

एक नाम की अनेक स्त्रियें क्यों नही हो सकती कही ।
देखू रहस्य है क्या इसमें बुद्धि कार्य करती नहीं ।432।

प्रात: प्रधान बुला भेजा आये तब पूछ लिया उनसे ।
यह मै क्या सुन रहा हूं मन्त्री विश्वास न होता कानों से ।433।

मै भी विस्मित हूं राजा कि चन्द्रा को कैसे लाल हुआ ।
व्यवस्था आपकी ढीली होगी अत: हाल बेहाल हुआ ।434।

व्यवस्था में कोई कमीन हो तो क्या लापरवाह हुवे ।
राजन आप कुछ भी कह ले कित ऐसा दोष न दे ।435।

असावधान नही रहा कभी मैं अपने कर्तव्य पालन में ।
राजा को लगाकि प्रधान सजग है विशाल राज्य संचालन में ।436।

मधुर स्वर में वोला मन्त्री इस बात से कितना पीड़ित हूं ।
मेरी भी वुद्धि भ्रमित होती जब इस विचार करता हूं ।437।

तभी तरह से जाच की मैने पता नही लग पाया है ।
पहरेदार को सभी तरह से दोष रहित ही पाया है ।438।

मै ही पता लगाऊ गा क्या राज रहा इस करतब में ।
मन्त्री के जाने पर राजा चला स्तम्भ महल पथ में ।439।

चन्द्रलेखा भी पुत्र गोद में लिए वारता करती थी ।
हाथ पैर चलाते हुए पुत्र के द्वारा मा देखी जाती थी 440।

जैसे लगता था बेटा मां की वाने सुन समझता था ।
द्वार खुलने की आहट से माता का ध्यान भंग हुआ ।441।

देखा पति का मुंह लाल है मीठी बाते वन्द हुई ।
उठकर आदर सहित नमनकर एक ओर वह खड़ी हुई ।442।

विना वोले ही राजा उसको घूर-घूर कर देख रहा ।
शिशु पर दृष्टि जा पड़ती तो उलट मुंह विचकाय दिया ।443।

बोझित था वातावरण वहां का कोई कुछ नहीं बोल रहे ।
कौन कहे और क्या कहे मानो शब्दों को खोज रहे ।444।
राज प्रतिक्षा कर रहा कि चन्द्रा कुछ भी बोलेगी ।
अपने कृत्यों की क्षमा मांग वह चरण पकड़के रो लेगी ।445।
किंतु उलटा ही हो रहा वह सहज भाव से मौन खड़ी ।
किसका पुत्र है ? मेरे पति का सहज भाव से बोल पड़ी ।446।
साफ क्यों नही कहती इसका पिता कौन ? राजा बोला ।
मम विवाहित पति पिता यो चन्द्रा ने स्पष्ट कहा ।447।
अब तो आप समझ गये होंगे किसका प्यारा पुच है यह ।
राजा ने सोचा कर्कश रूख से स्पष्ट नही खुल पाये यह ।348।
शांत स्वर में पूछा भवन में कौन पुरुष है आता रहा ?
आप ही दो बार आए है अन्य कोई नही आता रहा '449।
तो फिर यह बालक कैसा यह आप कृपा का ही फल है ।
बात घूम फिर वही आ रही काम न करती अकल है ।450।
लोकापवाद का भय दिखा राजा बोला उज्जैनी में ।
लोग तुम्हारी निन्द्रा करते कौन पुरुष के सग तुमने ।451।
किया कर्म यह नीच नाम यदि उसका तुम बतला दो तो ।
उसके साथ भेज दूं तुमको दूर - दूर यह अपयश हो ।452।
किया पाप हो तो बतलाऊं निदा अयश की चिता नही ।
मेरा पति पिता पुत्र का यहां खड़ा मे डरू नही ।453।
देखी नही दीढ तुम जैसी बार - बार रट लगा रही ।
अपने पुत्र का पिता मुझे तुम जबरदस्ती बता रही ।454।
माफ करे स्वामी तुम जैसा जग में पुरुष बिरला होगा ।
निज पुत्र अपना नही माने सती नारी निज शकित होगा ।455।
सती शब्द शुन भडक उठा बोला सीधे नही मानोगी ।
स्त्री दण्डनीय नही होती अन्यथा कष्ट उठाओगी ।456।
प्राणदण्ड दे देते स्वामी वह ज्यादा अच्छा होता ।
अपने चरित्र पर आपके मुख से कलक नही सुनना पड़ता ।456।

प्राणदण्ड दे देते स्वामी वह ज्यादा अच्छा होता ।
अपने चरित्र पर आपके मुख से कलक नही सुनना पड़ता ।457।

घी सिंचित अग्निवत नृप का क्रोध मर्यादा लांघ गया ।
चन्द्रा के निर्जीव पलंग पर पद प्रहार से बरस पड़ा ।458।

टकरा दीवार से उलट गया तब सुरंग दिखाई दी नीचे ।
व्यग पूर्वक राजा बोला तो यह रहस्य इसके पीछे ।459।

सुरंग आपके सच्चरित्र का भण्डा फोड़ अब करती है ।
इस करतूत से कैसे चन्द्रा पाक साफ रह सकती है ।460।

घूर-घूर कर देखा नृप ने चन्द्रा सहज स्वाभाविक थी ।
उतरा राजा सुरग पथ पर चन्द्रा पीछे चलती थी ।461।

फटकार बताई रुको वही आगे वीणा पर दृष्टि पड़ी ।
वीणा ले कमरे में आया दबाया तो वह खुल पड़ी ।462।

योगिन के कपड़े बिखर गये राजा की दृष्टि फटी रही ।
इतने में अप्सरा के कपड़े शृंगार सामग्री बिखर रही ।463।

वीणा को ध्यान से देखा तो और वस्त्र उसमें निकले ।
ये वस्त्र रत्नवती की गुरुणी चन्द्रा देवी के ही निकले ।464।

कभी वस्त्र कभी चन्द्रलेखा को आश्चर्यान्वित हो देख रहा ।
हंस रही चन्द्रा मन में नृप मुख पर हास्य भी खेल रही ।465।

चन्द्रा चुपके से उठ करके नृप प्रदत्त वस्तुए खिसकाती ।
चमका राजा की दृटि तभी इस उस चन्द्रा तुलना करती ।466।

वही रुप और रंग वही सब वही और आवाज वही ।
रती भर भी फरक नही बोल पड़ा सहसा तब ही ।467।

तब तुम ही थी वह जी हां और अप्सरा वह भी मै ही ।
जोगिन कौन थी पूछा नृप ने बोली चन्द्रा वह भी मै ही ।468।

अचरज सागर में डूब गया वह आंखे फाड़-फाड़ देखे ।
इतने दिन मेरे साथ रही पहचान सका न इसे मैने ।469।

चित्र विचित्र रुप धारण कर मिली अनेक बार मुझसे ।
अप्सरा के रुप में तो अरे कमाल कर दया इसने ।470।

जो नही कराया जा सकता सहज तरीके से पशु से ।
कितनी बुद्धिमत्ता से इसने वह सब करा लिया मुझसे ।471।

गर्व भंग हो चुका नृप का झुक गया लाज से उन्नत मुख ।
लज्जित ना देख सकी पति को लिये चन्द्रा ने चरण पकड़ 472।

बोली चन्द्रा नाथ ! मुझे सब करना पड़ा विवश होकर ।
अनुमान नही कर सकते नृप कितनी रोई बेबस होकर ।473।

राजन मेरी मनोदशा को प्रयत्न करें समझने का ।
अपने ही पति के प्रेम हेतु करना पड़ा प्रपच कितना ।474।

रोती देख चन्द्रलेखा को नृप के प्रेमाश्रु लुडक पड़े ।
छाती से उसको लिया लगा कुछ समय मात्र निश्चेष्ट रहे ।475।

शिशु मचल पड़ा चौके दोनों नृप ने उसको झट लिया ।
मुख चूमा प्यार किया उसका माता का हृदय प्रसन्न हुआ ।476।

उसी समय नृप हंस बोला प्रिय के हित प्रतिज्ञा पूर्ण करी ।
सचमुच साहस का काम किया तुम चतुर और हो बुद्धिमती ।477।

हां स्वामी प्रतिज्ञा पूर्ण हुई किंतु सहायता से पितु की ।
कैसे सुरग बनवाई उनने तहखाने वेश धारण करती ।478।

एक बात समझ मै नही पाया दरबार में सन्देह हुआ ।
यहां आया तो यहा तुम थी और वहा गया तुमको पाया ।479।

समाधान पाकर के नृप चन्द्रा का लोहा मान गया ।
पुत्र प्यार सुख दुख बाते कर राजा उठकर चला गया ।480।

चलते-2 बोला चन्द्रा शीघ्र ही तुम्हें बुलाऊंगा ।
मुझे विश्वास है चन्द्रा बोली सम्मान सहित मै आऊंगी ।481।

राज सभा में सिहासन पर प्रसन्न-मुद्रा से नृप बैठा ।
सजाया जाय उज्जैनी को दुलहिन की तरह आदेश दिया ।482।

मेरे निज हाथी को सजाओ सभी मनाओ अब खुशिया ।
प्रात क्रोधित थे मन्त्री बोला अब चेहरे पर क्यो खुशिया ।483।

आज खुशी का दिन है मन्त्री मुझे पुत्र की प्राप्ति हुई ।
आपको पुत्र और हां मन्त्री वह मेरा अपना ही है ।484।

कैसे ? जाओ न गहराई मे किन्तु भूप उसकी शर्तें ।
कभी खुश होती है हार मे वस प्रधानजी सव समझे 485।

इशारे में अकलमन्द समझा कि विजय हुई है चन्द्रा की ।
विशेष रुप से करो निमन्त्रण पिता श्री को चन्द्रा के ।486।

नृप बोला खजांची जी को कि वह कोप का मुह खोले ।
याचक कोई न खाली जावे मुह मागा धन उनको दे ।487।

इतना इनाम मिले दासों को उनकी पीढ़िया याद रखे ।
ऐसी खुशियां मनाये कहानी युग - 2 तक गाई जाऊं ।488।

प्रशस्तियो भाट चारण गाए दादी पोतो को कथा सुनाए ।
चन्द्रा के शील बुद्धि वल की गाथाए फेल जग मे जाए ।489।

राजा की वात मन्त्री स्वीकृति देता जाता था ।
महावत हाथी सजा लाया स्तम्भ महल नृप जाता था ।490।

दासिया पूर्व सूचना से सोलह श्रृंगार सजा चन्द्रा ।
को दुलहिन तैयार किया राजा भी तव तक आ पहुचा ।491।

अन्दर जा नृप ने गोद लिया वालक को चन्द्रा से बोला ।
उज्जैनी तुम्हारे स्वागत की प्रतीक्षा करती पलक विछा ।492।

चरण स्पर्श कर चन्द्रलेखा तव गजेन्द्र ऊपर जा वैठी ।
पार्श्व मे हर्षचन्द्र वैठा सवारी दर्शनीय निकली ।493।

मधुर बैंड आगे वजते विशिष्ट नागरिक उसके पीछे ।
राजा रानी सह गजेन्द्र चल रहा अपार जन समूह उनके पीछे ।494।

हर्षचन्द्र चन्द्रलेखा की जय महाराजा रानी की जय ।
उदघोषों से गगन गूंज रहा चारण भाट गाने मे मस्त ।495।

उज्जैनी नगरी में छाया चारों तरफ हर्ष उल्लास ।
मंद गति से गजेन्द्र पहुचा राज महल के द्वारे पास ।496।

स्वागतार्थ उपस्थित था सव अंत.पुर पटरानी साथ ।
उतरी आरती सभी रानियों ने पहले पटरानी के हाथ ।497।

दव्य भरे थाल इंगितकर चन्द्रलेखा से नृप वोला ।
शुभारम्भ दान से कर दो अपने कर कमलो वहाला ।498।

आज्ञापति की शिरोधार्य कर, सति ने दान दिया याचक ।
इतना दान दिया चन्द्रा ने खोजे न मिल रहे याचक ।499।

दास दासियों को आभूषण और धन कल्पनातीत ।
स्तम्भ महल का पहरेदार भी हुआ पुरस्कृत सर्वाधिक ।550।

नृत्य गान से उत्सव कई दिन, हर्षचन्द्र भी अधिक प्रसन्न ।
धन्दवाद दिया चन्द्र पिता को,दिया गुणवन्ती पुत्री जन्म ।501।

धन्यवाद है उसकी मां को, उचित शिक्षा पालन पोषण ।
धन्यवाद दिया उलट पिता ने,नृप को धन्य है गुण ग्रहण ।502।

अपराधों पर ध्यान न देकर, दिया हमें इतना सन्मान ।
सब प्रताप है जैनागम का, जो है अनन्त गुणों का खान ।503।

कितने रत्न छिपे है इसमें, जानते वही अनतवां भाग ।
धर्म तुम्हारा अनुपम जिसका चमत्कार है अनन्तवा भाग ।504।

स्वागत इतना भव्य देखकर, सभी रानियां जलती रही ।
कर भी क्या सकती थी पर वे, मन मसोस चुप बैठ रही ।505।

हार्दिक प्रसन्नता रत्नवती को, ईर्ष्या का लवलेश नही ।
यह दिन नहीं दिखता यदि देती, हर्षचन्द्र से मिलने नही ।506।

किन्तु मान नहीं था चन्द्रा को, अपने सुख सौभाग्य पर ।
विनय विवेक की प्रत्यक्ष मूर्ति थी, भाग्य सितारों पर ।507।

नृप के आने पर पलक बिछा, उच्चासन पर बिठलाया ।
स्वयं चरणों मे बैठी तब, नृप ने यो परिहास किया ।508।

चन्द्रा तुम नीचे क्यों बैठी, मुझे बैठना चाहिये है ।
लज्जित ना करिये नाथ,स्त्री तो श्री चरणों की दासी है ।509।

क्या था जोगिन अप्सरा रुप में, राज त्रिया हट टक्कर थी ।
हंस पड़े उज्जैनी के राजा, कौर कहा त्रिया हट विजित हुई ।510।

वहुत दिनों के बाद एक दिन, रत्नवती यो बोल पड़ी ।
अब तो मुक्त करो राजा को, मोह पाश से शीघ्र बड़ी ।511।

उन्हें क्या मैंने बांध रखा है, हंसकर बोली चन्द्रा तब ।
बांध रखा है तभी किसी की, तरफ दृष्टि नही देते नृप ।512।

मानो एहसान हमारा तुम, जोगिन ही बनी रहती नही तो।
पहले भी नृप की जोगिन थी,उसी नृप की जोगिन अब तो।513।

पुत्र चन्द्र प्रभ बडा हुआ तब, विद्याध्ययन हेतु भेजा।
चित्त लगाकर पुरुष योग्य वह,सभी कला मे निपुण हुआ।514।

युवक हुआ तब पिता श्री के, कार्यो में सहयोगी बना।
विशेष चिन्ता न रही शासन की,भूपभार हल्का ही हुआ।515।

प्रधानजी आप ठीक कहते हैं, पुत्र युवा और योग्य हुआ।
क्या कर्त्तव्य शेष रह गया, कुमार विवाह के योग्य हुआ।516।

नृप ने प्रधान की सलाह से, योग्यराज कन्या को चुन।
चन्द्र प्रभ का ठाठ बाट से, लग्न रचाया हो परसन।517।

नित्य नियम सवर सामायिक पौषध और दान सम्मान।
हर्षचन्द्र सह चन्द्रा करती, जिनेश्वरों का नित गुणगान।518।

कालान्तर में धर्मघोष, आचार्य पधारे शिष्य सहित।
आज्ञा लेकर उतरे बाग में, एकांत कोलाहल रहित।519।

ज्ञात हुआ तब नगर निवासी,नमन वन्दन प्रवचन सुनने।
अन्तःपुर परिवार सहित, भूपति आये दर्शन करने।520।

उपदेश दिया आचार्य श्री ने कल्याण हेतु भव्य जीवों के।
हुए प्रभावित भूपति सुनके हित-मित प्रिय वचन उनके।521।

शांत मुद्रा और विशाल ज्ञान लख, विनम्र हो नृप ने पूछा।
सम्बन्ध विचित्र रहे मेरे, चन्द्रा की विचित्र रही प्रतिज्ञा।522।

अनिच्छिन कोप मेरा इसके प्रति, प्रतिज्ञाओं का पूर्ण होना।
फिर इस पर मेरा अधिक प्रेम,किस हेतु घटी ये सब घटना।523।

पूर्व जन्म में तुम दोनों के इसी तरह सम्बन्ध रहे।
उसी विषय को सुनना चाहता, विनम्र हो भूपति कहे।524।

विचार किया आचार्य श्री ने, कुछ देर नेत्र बन्द करके।
तीजे भव में सिद्ध होवेंगे, दोनों ही कर्म को क्षय करके।525।

दीक्षा लेंगे दोनों भव्य, निज पूर्व जन्म वर्णन सुनके।
कल्याण कामना हेतु कही, राजन् सुनना सजग होके।526।

जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में, पृथ्वीपुर शुभ स्थान।
धनवानों के धाम मनोहर, शोभा स्वर्ग समान।527।

जिनदत्त जिनपाल नाम के, भाई दोनों में अति प्रेम।
व्यापार कुशल है छोटा भाई,बरत रहा कुशल और प्रेम।528।

निश्चित हो गया जिनदत्त उससे, एक दिन गुरुदेव पधारे।
दर्शन कर वचनामृत पीकर, छोटे ने सत्य व्रत धारे।529।

छल कपट नही करना अब वह एक-भाव ही कहनाजी।
ग्राहक किन्तु भोलाई करते, व्यापार मन्द तब पड़ता जी।530।

अन्य दुकानों चाले ग्राहकी, मोला तोली करते जी।
अतः वही से माल ले जाते, यहा पैर नही धरते जी।531।

आय पूर्ण नही होने से, व्यापार में घाटा लगता जी।
माल बेचकर खाय रहे हैं, फिर भी झूठ नही कहता जी।532।

एक दिन देखा बडे भाई ने, ग्राहकी मद पड़ी है जी।
अन्य दुकानों देखा वहा तो ग्राहकी खुब चली है जी।533।

पुछा भाई से कारण क्या है, घाटा क्यो दिखता है जी।
माल भी कम है,व्यापार भी ठप है,सच क्यो नही कहता है जी।534।

सच कहता हूं भैया मेरे, ग्राहक नही आते है जी।
माल पसन्द आता है फिर भी, लौट लौट जाते है जी।535।

झूठ बोल रहे भाई तुम तो, माल पसन्द नही आता जी।
माल वेचकर पूंजी सारी, दुर्व्यसनो में लगाता जी।536।

नही भाई यह बात नही है, तो फिर सत्य बताओ जी।
दुनियां की यह रीति रही है, झूठ बोल कमाओ जी।537।

जब से मैने सत्य व्रत का, नियम लिया गुरु पासे जी।
तब से ग्राहकी ठप्प पड़ा है, बात कहूं मै तासे जी।538।

नम्र वचन से कहा किन्तु, विश्वास नही भाई को जी।
कही सत्य से काम चला है, अतः सत्य व्रत त्यागो जी।539।

नहीं भैया यह नहीं हो सकता, पसेरी से दे मारी जी ।
मर्म स्थल पर चोट लगी, वेहोशी छा गई भारी जी ।540।

सोया यो ही बहाना करता, ध्यान दिया नही उसने जी ।
कातर दृष्टि से देखा तो, मुंह फेरा बड़े भैया ने जी ।541।

किसी तरह से खिसक भाई के, चरणों मस्तक रखा जी ।
अश्रुओं से चरण भिगोए, अलग किया दे झटका जी ।542।

सावातिक पोडा से छोटा, काल के गाल समाया जी ।
सच्चाई का ज्ञान हुआ अव, मन ही मन पछताया जी ।543।

धैर्य वधाने लगे लोग सव किंतु खेदा खिन्न रहता जी ।
करता धर्म अन्य कार्य पर भाई को न भुलाता जी ।544।

अमर कोई होकर नही आया काल के गाल समया जी ।
छोटे ने तोती का भवकर चन्द्रा का भव पाया जी ।545।

वडा भाई का जीव तुम्हारा उज्जैनी में जनमा जी ।
दोप रोपण सत्यवादी पर हुआ यहा अपमाना जी ।546।

उपेक्षा पूर्वक पाव हटाये रखना पड़े हस्त पर पांव ।
प्रयोग किया था अप शव्दो का यहां पर मिला उल्टा यह दांव ।547।

चरण अश्रु से सीचे थे यहा चरणोदक पड़ा पीना ।
भ्रातृ प्रेम संजोए रखा चन्द्रा से अनन्य प्रेम कीना ।548।

सत्याणुव्रत की दृढ साधना से प्रतीज्ञा उसकी पूर्ण हुई ।
किए कर्म का फल यों भोग कथा तुम्हारी पूर्ण हुई ।549।

पश्चाताप करता हुआ राजा वैराग्य रंग में रंगा गया ।
चन्द्रलेखा पीछे क्यो रहती वैराग्य उसका जाग गया ।550।

दोनों ने दीक्षा लेने के अपने भावो को व्यक्त किया ।
मार्ग दर्शन पाकर गुरुवर से पुत्र राज्याभिषेक किया ।551।

धूम-धाम से हुए प्रवजित द्वादशांग का ज्ञान किया ।
ज्ञान-दर्शन चरित्र तप को विवेक पूर्ण आराध लिया ।552।

निरतिचार आराधना करके मासिक संलेखना संथारा ।
शरीर त्यागकर गए स्वार्थ सिद्ध देव लोक का भव धारा ।553।

वहां से चलकर महा विदेह में उतमकुल में जन्मेंगे ।
दीक्षा लेकर क्षपक श्रेणी आरुढ सिद्ध पद पावेंगे ।554।

मान रखे तो पीव तज पीव रखे तज मान जी ।
दो गजेन्द्र न बांधिए एक ही खम्भे स्थान जी ।55

संकलनकर्ता :
सुपुत्रीयां-लाड देवी, कान्ता देवी एवं विमला देवी रा
पुत्रवधुएं-श्रीमती पिस्ता देवी, उषा देवी रां

[illegible] (C.A.)

A-21 Ist Floor, Bharat Nagar
Opp. Shalimar Talkies
Grant Rood (E) BOMBAY-400007

☎ 8057532

**ioutam Chand Jain Ranka** (C.A.)

102, Seeta Mahal Kartar Road No. 5
Boriwali (East) BOMBAY-400066

☎ 26

*l/s DulhaRaj Shantilal Ranka*

'illage-Jainagar, Post-Shambhugarh Dist-Bhilwara
Via-Asınd ( Rajasthan )
Pin Code No. 3059011